कनोजड़ि

सुस्मिता पाठक



कनोजड़ि
सुस्मिता पाठक

सुस्मिता पाठक कथा लिखबाक हेतु कथा नहि लिखैत छथि, मैथिल जीवनक विडंबना हुनका सँ कथा लिखबा लैत अछि। मिथिला समाजक वंचित वर्ग विशेष क' पीड़ित आ दुख सँ झमारल स्त्रीगण अपन समस्त दयनीयताक संग हुनक कथा मे विन्यस्त अछि। रस्ता चलैत कोनो पीड़िता केँ देखैत लोकबाग आगू बढ़ि जाइत अछि, सुस्मिता ओतहि ठमकि जाइत छथि, ओहि स्त्रीक पीड़ा केँ बुझबाक प्रयास करैत छथि, ओकर घनीभूत वेदनाक अनुभव करैत छथि, ओकरा प्रति गहींर संवेदना सँ जुड़ि जाइत छथि। यैह सघन जुड़ाव हुनका सँ करुण रस सँ पगल-भीजल कथा लिखबा लैत अछि।

निराला जी अपन प्रसिद्ध कविता 'सरोज स्मृति' मे लिखलनि, 'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ जो आज तक नहीं कही।' सुस्मिताक कथा एहि 'अनकहल' दुखक कथात्मक रूपांतरण अछि। हिनक अधिकांश कथा मे एहन स्त्री सँ आत्मसाक्षात्कार होइत अछि जकरा जीवन मे कहियो उजासक छोटछिन कतरा नसीब नहि होइत छै। कथा मे ओ इहो स्पष्ट करैत छथि जे एहि अंतहीन दुखक कारण 'भाग्य' नहि अपितु वंचक, धूर्त आ घोर स्वार्थी लोकक काईयांपन आ अहंकार होइछ।

'कनोजड़ि' संग्रह मे 'टेड्डी बियर', 'नियुक्ति पत्र', 'कलंक', 'आलोड़न' सन कथाक स्त्री पात्रक संघर्ष आ ओकर निखरैत व्यक्तित्व उल्लेखनीय तँ अछिए, हिनक कथा-दिशाक संकेत सेहो दैत अछि। 'खाता नंबर', 'जादू' सन एहि संग्रहक कथा सभ सँ सुस्मिताक कथाकारक विकास-क्रम देखबा मे सेहो सुविधा हैत।

—कमलानंद झा



सुस्मिता पाठक

25 जनवरी 1962 केँ कर्णपुर (सुपौल) मे जन्म। मैथिली आ हिंदी मे समान रूपेँ लेखन। चित्रकला, हस्तशिल्प आ संगीत मे गंभीर रूझान।

मैथिली मे परिचिति, इजोतक बाट (कविता-संग्रह), राग विराग (कथा-संग्रह) प्रकाशित।

अतीत (उमानाथ झा) आ माटि (शिवशंकर श्रीनिवास)क कथा-संग्रहक हिंदी अनुवाद प्रकाशन-पथ पर।

हिंदी मे एक कहानी संग्रह शीघ्र प्रकाश्य।

अनेक रचनाक अनुवाद विभिन्न भाषाक पत्रिका मे प्रकाशित।

कीर्त्तिनारायण मिश्र (चेतना समिति, पटना), कांचीनाथ झा किरण (रहिका) आ वैदेही (राँची) सम्मान सँ सम्मानित।

संपर्क : किसुन कुटीर, गुदरी बाजार,
सुपौल-852131, बिहार

कनोजड़ि

कनोजड़ि

(कथा-संग्रह)

सुस्मिता पाठक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-06-2
कनोजड़ि

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2022

मूल्य : 275.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी–56/यूजीएफ–IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन–II
गाजियाबाद–201005 (उ.प्र.)
फोन : 0–9871856053
ई–मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

सौजन्य सहयोग
किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल–852131 (बिहार)
फोन : +91–7004917511

आवरण चित्र : वंदना तोमर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली–32

KANOJARI (Collection of Maithili Short Stories) by Susmita Pathak
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 275.00

अनुक्रम

टेड्डी बियर

तीन भाइ-बहिन मे सब सँ छोट सृजन पाँचम बर्ख मे एहि बेर डेग रखने छल। आब ओ बहुत बजैत छल। अपन तोतराइत बोली मे जखन गप करैत छल तँ सुनय बला नेहाल भ' जाइत छल। अभावक जाला पसरल ओकरा घर मे ओकरे प्रसन्नता सभहक प्रसन्नता छलै। माय-बाप ओहि नेनासभक सभ इच्छा पूरा करबाक सपना देखैत छल। मुदा ओहि सपनाक न्यों तैयार करबा मे सभ तरहें नकाम छल। जरूरतिक वस्तुजात एकट्ठा करैत-करैत, ओकर नान्हि टा इच्छा धरि पहुँचैत दम साधि लैत छल।

एहि पाँच बरख मे ओ एकहु टा बढ़ियाँ खेलौना नहि देखने छल। बड़-बहुत तँ मेला-ठेला मे लाल-पीयर फुकना फुला लैत छल। कहियो काल जँ अपन मायक संगे बजार जाइत छल तँ, खेलौनाक दोकान पर ओकर नजरि जरूर पड़ै मुदा ओ किछु माँग नहि करय। रंग-बिरंगक ओ खेलौना सभ ओकर चेतना मे एक टा रंगारंग संसार बसा दैत छलै जाहि मे ओ अपन सभ टा दाबल इच्छा आकांक्षाक तृप्ति समेटैत रहैत छल। मुदा जँ कतहु ओकरा टेड्डी बियर देखार पड़ै ओ बताह भ' उठय। फेर ओकरा होश नहि रहय कि ओ घर मे अछि आ कि बजार मे। जेना-जेना दोकान पाछाँ घुटैत जाइ ओ हाथ-पयर पटकैत चिचिआयब शुरू क' देअय, 'हौ बाप। हमरा टेड्डी नहि कीनि देलकै...।'

बीच बजार मे माय लाजे कठौत भ' जाय। किछु नहि फुराइ तँ बच्चाक पीठ मे चुट्टी काटैत ओकरा धकियौने आगाँ बढ़ि जाय।

बहुत महग रहै टेड्डी बियर। ओकरा किनबाक बात सोचल नहि जा सकैत छल। दिन-राति एक क' कोनो धरानियें ओकर पिता घरक गुजर-बसर करैत रहै। घरे-घर ट्यूशन पढ़ाक' बच्चा समभक प्रतिपाल कयनिहार पिता दू-तीन सय टाकाक खेलौना कीनि बच्चा सभ केँ देबाक बात सोचियो नहि सकैत छल।

अभाव बच्चा सभ केँ असमय प्रौढ़ बना देने रहै। ओ सभ कोनो चीज लेल जिद नहि करैत छल। कतहु किछु देखैत छल तँ ललचबैत जरूर छल मुदा मोन केँ बैसा लैत छल। सृजन बहुत छोट रहै, ओकर मोन नहि मानै...।

ओ तँ मात्र सपनाक संसार मे उड़ब जनैत छल दूषित हवा सँ नापरवाह...।

ओहि दिन दुनू बच्चा जहिना स्कूल सँ घुरल, माय घोषणा कयलक जे आइ मौसीक ओतय जयबाक अछि। मौसीक एकमात्र संतान रूनाक आइ जन्मदिन थिकै, सृजन ई सुनिते कूद-फान शुरू कयलक। चौकीक नीचाँ राखल अपन जुत्ता बहार कयलक आ झटपट पहिरय लागल। एको क्षणक देरी ओकरा सहाज नहि रहै। एखने माय बाजल छलै मुदा ओकरा होइ कि सभ बहुत देरी क' रहल अछि। ओ थपड़ी पाड़ैत नाचय लागल, 'मौछीक घर जेबै, मिथाइ खेबै...।' तीनो भाइ बहिन खूब मगन छलै।

मौसीक घर कतेक पैघ छै। साफ-सुथरा पलंग पर एहन मोटका गद्दा छैक जे बैसिते धँसैत चलि जाउ...। पछिला खेप गेल रहै तँ खूब उछलल छल ओहि पर। शीशाक अलमारी मे सजल-सजायल खेलौना सभ, जेना ओ सभ बजार मे देखैत छल। कतेक सुन्नर लगै छै। मौसीक बेटी ओकरा बन्न कियैक रखैत छैक। ओकरा लग रहितै तँ ओ ओकरा कतेक दुलार करितै... खेलाइत ओकरा सभ सँ। सृजन मनहि मन सोचि रहल छल।

—'जल्दी-जल्दी कपड़ा बदल तों सभ।' मायक आदेश भेलै। सभ बच्चा केँ जेना पाँखि लागि गेलै। आनन-फानन मे जे कपड़ा भेटलै, पहीरि लेलक। मुँह पर पानि मारलक। केश भिजौलक आ चट कंघी सँ केश थकड़लक। लक्की सभ सँ पैघ छली। ओ सुमन आ सृजनक केश केँ अपना तरीका सँ सजौलक। आ माय केँ प्रसन्न करबा लेल ओकर केश थकड़य पहुँचि गेलि। जहिना कंघी मायक केश मे लगौलक, ओ तमसा उठलि। लक्कीक बाँहि पकड़ि ठेलैत चिचिएली —'की करैत छें, जो तों तैयार हो, हमरा सजयबाक जरूरति नहि छै।'

लक्की कननमुँह भ' गेलि। ई पहिले बेर नहि थिकै, रहरहाँ एना होइत छैक। माय सदति तमसाइते रहैत छै, छोट-छोट बात पर मारैत रहैत छैक, दाँत किचैत रहैत छैक आ पापाक संग... बाप रे!

माय बड्ड झगड़ा करैत अछि। तखन तँ आर जखन कि पापा लाल-लाल आँखि उठौने कोठरीक भीतर सहमल-सहमल पैर रखैत छल। माय बड्ड दुरदुराबैत छलै मुदा ओकरा पापा केँ कोनो असरि नहि होइत छलै। ओ चुपचाप एक टा कोनटा ध' लैत छल। गांजा पीबाक बड्ड खराब लत लागि गेल छलै ओकरा पापा केँ। बेसी काल अही अवस्था मे ओ घर आबय आ हजारो बेर बाजल एकहि टा बात ओकर माय दोहराबैत रहैत छल, 'हौ दैब'! कोन अपराध कयने छलहुँ जे माय-बाप एहि गजेरी संग बियाहि देलक!'

लक्कीक छोट सन दिमाग मे एक टा प्रतिरोधक लहरि हिलकोर मारय लागय।...'माय केँ एतेक दुख छलनि तँ बियाहे किएक कयलनि। मना किए नहि

केलखिन...।' मुदा ओ कोना बाजय। माय तँ थपड़ा क' ओकर प्राणे ल' लेत। ओ चुपचाप एहि तरहक दृश्यक दाह केँ सहैत रहि जाय। मन करय कतहु भागि जाय। छुट्टीक दिन मे जखन पापा घर मे रहय तँ ओ पड़ोसिया संगीक घर पड़ा जाय। मुदा ओकर माय ओतहु ओकरा बेसी काल बिलमय कहाँ दैत छलै। फज्झतिक तर' क' दैत छलै ओकरा।

लक्की केर निर्दोष चेतना एहि सत्य केँ नहि स्वीकार क' पबैत छल कि अभाव आ असुरक्षा सँ उपजल पीड़ा आ भय केर अभिव्यक्ति अपनहि पर उबलय बला आक्रोश आ घृणे होइत अछि।

ओ नहुँए-नहुँए, जेना-जेना वयस केर देहरि पार कयने जाय, कुंठित भेल जाइत छल। चुपचाप मायक पाछाँ-पाछाँ भनसाघरक काज केनाइ आ काजक बाद जे समय बचय ताहि मे पढ़ाइ केनाइ, एही धुरी के बीच ओ घुरियाइत छल। बाल सुलभ चपलता ओकरा मे कनिक्को टा नहि बाँचल छलै।

मुदा आइ एक टा दुर्लभ अवसर ओकरा भेटल छलै। प्रसन्नताक छोट सन टुकड़ी केँ ओ मुट्ठी मे पजियौने छल। घर सँ बाहर कतहु बढ़ियाँ वातावरण मे किछुओ समय बितयबाक ओकरा अवसर भेटल छलै। ताहि सँ तत्काल ओकर सभ टा शिथिलता आ कुण्ठा क्षणे मे कतहु विलीन भ' क' ओकर चपलता केँ खीचि अनने छलै, मुदा मायक तीत हरकत बोली आ तिरस्कार फेर सँ ओकर खुशी पर पानि उझीलि देलक। ओ चुपचाप कंघी चौकी पर राखि देलक आ अनमनयले सुमन केँ कपड़ा पहिराबय लागल।

तीनो बेदराक संगे माय जेना-तेना घर सँ बहरयली। बहिनक डेरा लगीचे मे रहय। कोनो सवारीक जरूरति ओकरा नहि बुझा पड़लै। सड़क पक्की नहि छलै। धुरा आ माटि सँ भरल। जखन कि चौबगली चमाचम पीचरोड बनि गेल छलै, किछु रस्ता संगे सरकार अखनो दुनेतिये कयने छल। आबाजाही सुविधाजनक नहि छलै। मुदा मौसीक घर बेसी दूर नहि छलै ताहि सँ धीया-पुता उमंगे भागल जा रहल छल।

सड़कक कात मे चाह-पानक दोकान सभ छलै। मारते चाट-पकौड़ा बिका रहल छलै। लक्की कने सहमिते मायक ध्यान दोकान दिस मोड़ैत हाथ घिचलक। मायक विपरीत प्रतिक्रियाक लेल ओ अपना केँ पहिनहि सँ तैयार क' लेने छल मुदा तैयो कने लाड़ सँ बाजल, 'माय! रूना दीदी लेल कने पकौड़ी ल' ने ले।'

माय कने मुसकेली। मायक मुस्कान सँ लक्कीक हिम्मति कने बढ़लै। आब ओ कने जिदियाइत बाजल, 'ल' ले माय! कने मिठाइयो... ओ सभ अबै छथिन तँ...।'

मायक चेहरा फेर पथरा गेलनि। लक्कीक बात एखन खतमो नहि भेल छल आ कि ओ झटकि क' कहलनि, 'चल-चल... रस्ता-पेराक चाट-पकौड़ा आ मिठाइ

ओ सभ नहि खाइत अछि। देखिहें बड़का-बड़का भेंट उपहार भेटतै ओकरा। तोरा बाप केँ कत' सँ हुबा एलौ ओकरा किछु उपहार आ भेंट देबाक...।'

माय लक्कीक बहन्ना सँ अपनहि सँ अपन गुबार उतारि रहल छली, मुदा लक्कीक कोमल मन ओतहि चूर-चूर भ' गेल छलै। ई एक टा क्रम छलै, खसबा केर आ टुटबा केर..। एतबो बच्चा नहि रहय लक्की आ सुमन कि सुख-दुख केर भावबोध सँ फराक भ' सकय।

माय जखन-जखन मौसा-मौसी केर ऐश्वर्यक बखान करैत छलीह तखन-तखन हुनकर खुशी मे अपना केँ तिरोहित क' लैत छलीह, लक्की आ सुमन केँ अपन मायक पहिचान एहन समय मे झलफला जाइत छलै। हुनका बुझा पड़ै जेना ओ सभ नहुँए-नहुँए छोट भेल जा रहल छथि, होइत-होइत एकदम अलोपित...। आ पापा... ओ तँ कतहु देखाइए नहि दैत छथि। लक्की पापा सँ अपन इच्छा सझिया क' सकैत छल मुदा साहस नहि जुटा सकल। की पता कतहु माये जकाँ ओहो झिड़किए दितथि। एहि तरहें लक्कीक सभ टा सोच अपूर्ण रहि जाइत छल। ओ चुपचाप मायक संगे माथ झुकौने चलैत रहल। मन करय घुरि जाय। नहि जाय मौसी ओहिठाम। खाली हाथ, ओहो जन्मदिनक अवसरि पर, ओकरा अनसोहाँत बुझा पड़ैत छलै। कतेक खराप लगतै जखन ओ सभ केक काटै जेतै आ माय अपन आँचरक खूँट सँ पचास टका निकालि क' चुपचाप रूना दीदीक तरहत्थी पर ठूँस' लगतै। भेंट उपहारक ढेरीक सोझाँ ओ पचासक नोट कतहु ओहिना उड़िया जेतै...। ओते लोकक बीच मे मायक एहि उपक्रम सँ ओ पानि-पानि भ' जाइत अछि। मुदा ओ माय छथि आ हुनका लक्कीक मन-मस्तिष्कक उहापोह सँ किछु लेनाय-देनाय नहि छलै। लक्की केर वयस केँ अपन सोच समझक स्थापनाक अधिकार ओ नहि देने छलि। हुनकर कोनो मामिला मे हस्तक्षेप ओकरा नहि करबाक रहय। खाहे ओ उचित होइ वा अनुचित। ओहिनो... अभावग्रस्त लोक लेल की उचित आ की अनुचित।

सब सँ आगाँ उछलैत सृजन जा रहल छल। तरबा सँ धुरा उड़ियबैत। बेपरवाह। ओकरा ने उपहारक चिन्ता छलै आ ने कोनो मान अपमानक भय। ओकरा आँखिक आगाँ तँ मारिते रास फुकना उड़िया रहल छलै। सजल-धजल गुड़िया सन मौसीक बेटी रंग-विधिक चीज-वस्तु सँ लदल-फदल बेर-बेर आँखिक सोझाँ आबि जाय आ ओ उत्साहित होइत डेग जल्दी-जल्दी बढ़बय लागै।

रूना मौसीक एकलौती बेटी छल। बड्ड दुलारू। ओकर जन्मदिन सभ साल खूब ठाठ सँ मनैत छल। पाइक कोनो कमी छलनि नहि। धीयापुताक जन्मदिनक बहन्ने जीवनक आनन्द लेबा मे हर्जे कोन...। सड़क सँ ल' क' अहाताक भीतर धरि रंग-बिरंगक बल्वक झिलमिलाइत इजोत देखि सृजन अभिभूत भ' गेल।

माय अपन तीनो धीयापुता केँ पहिने चेता देन छल 'मौसी ओहिठाम कोनो सामान केँ छू-छा नहि करय जहिहें। चुपचाप बैसल रहय जइहें... ओ सभ बड्ड संस्कारी लोक थिकै, ओतहु अपन असभ्यता नहि देखबिहें।'

एहि बेर लक्की पहिल बेर अपन माय केँ आँखि तरेरि क' देखलक।

लक्की आ सुमन चुपचाप बाहर मे धयल सोफाक कात मे बैसि गेल। मुदा सृजन केँ मायक चेतौनी मन नहि रहलै। ओ दौगि केँ कोठरीक भीतर चल आयल। पलंग पर सखी सभ सँ घेरायल मौसी बैसल छलीह। ओ स्नेह सँ सृजन केँ अपना कात मे बैसौलनि। तावत बहिन आबिक' बैसली। रूनाक माय बहिनक हाल-चाल पुछलनि मुदा दुनू बच्चाक मादे कोनो उत्सुकता नहि देखौलनि। मनक भीतर किछु टुटैत बुझा पड़लै ओकरा। ओ एम्हर-ओम्हर चौचंक आँखिएँ भरि कोठरी केँ निहारैत सृजन केँ अपना दिस घीचि लेलक।

सृजन बेसी काल बैसल नहि रहि सकल। ओ उठल आ जतए-ततए राखल वस्तुजात केँ टेब-टाब कर' लागल। फेर ओकर आँखि चौबगली सँ हटि क' कोना मे राखल टेड्डी बियर पर अटकि गेलै। ओ झपटि क' ओम्हर गेल आ टेड्डी केँ उठा लेलक। भरि पाँज पकड़ि क' छाती सँ सटौने माय लग सहटि आयल। एही लेल तँ ओ भरल बजार कतेको बेर कानल-खीजल छल मुदा ने माय ने पापा, कियो ओकरा नहि कीनि देने छल। आइ ओकरा टेड्डी बियर भेटि गेलै। ओकर आँखि सँ खुशीक झरना फूटि पड़लै।

सृजन केर बालसुलभ क्रियाकलाप सँ पलंग पर बैसलि सभ स्त्रीगण केँ हँसी लागि गेलनि मुदा मौसी आ हुनकर बेटीक मुखड़ा कने सिकुड़ि गेलनि। फेर समय केँ अकानैत ओ सभ सहज हेबाक प्रयास कयलनि। मौसी मीठ शब्दक रस सृजन क' गाल केँ छुबैत ओकरा ठोर सँ छुऔलनि। कहलनि 'एकरा भीतर राखि दियौ, ई खेलयबाक नहि थिक, सजावटिक चीज थिकै बाउ!'

मौसीक आदेशक कोनो प्रभाव सृजन पर नहि पड़ल। एकर विपरीत ओ ओहि टेड्डी केँ आरो उछलाब' लगलै। कखनहुँ केँ दुलार सँ ओकर रूइयाक फाहा सँ बनल आकृति केँ चुम्मा लेअय, कखनो गरदनि सँ लगाबय। एना लगैत छल जेना जनम-जनम सँ बिछड़ल कोनो संगी ओकरा भेटि गेल होअय। मौसीक बुझयबाक आ मायक धमकयबाक बादो ओ ओही खिलौना केँ अंगेजनहि रहल। एहन लगैत छल जेना ओ कोनो मनुक्ख होअय आ ओकरा सँ फराक भ' जयबाक एक टा अदृश्य भय सृजनक आँखि मे व्याप्त भ' गेल होइ। अपन छाती सँ ओ ओकरा कसनहि जा रहल छल।

अपन खेलौनाक ई दुर्दशा देखि रूना बेर-बेर उधिया रहल छल। मौसियो

औपचारिकतावश नकली मुस्कान ओढ़ने खूनक घोंट पीबि रहल छलीह। एखन कोठली खाली रहैत तँ दू चाट एहि शैतानक नाना केँ द' दितय आ अपन दुलारू बेटीक खेलौना छीनि लितय। केहन तिलमिली बर्दाश्त कयने अछि छौड़ी! एते काल तँ ओ पिट-पिटा देने रहितै जँ एसगर रहितैय ई छौंड़ा। ओकरा अपन बहिनो पर तामस उठि रहल छलै। कोना चुपचाप छौंड़ा केर किरिस्तानी देखि रहल अछि। देहाती नहितन! बच्चो सभ केँ फूहड़ बना क' राखि देने अछि। मुदा ओ की करय...। बहिन वाली बात अछि, एहि मौगी सबहक की, तुरत खुसुर-फुसुर शुरू क' देत। सोहरा भ' जेतय—बहिन-बहिन मे कनिक्को बनान नहि छै, ओहो की नीक लगतै!

मौसीक मन:स्थिति सँ एकदम अनजान सृजन टेड्डीक छिना जयबाक डरें कोठली सँ बाहर भागि गेल। ओकरा बाहर भागैत देखि रूना केर बचल-खुचल धैर्यो समाप्त भ' गेलै। ओ लक्कियो सँ जेठ छल मुदा ओकर नेनपन गरीबक बच्चा जकाँ कुचलल नहि गेल छल। ओ एखनहुँ बेदरमतिये छल।

ओहो सृजनक पाछाँ-पाछाँ भागल। ओ चिंतित छल कि ओकरा संगमरमरी टेड्डी केँ सृजन गंदा नहि क' देअ', कतहु फेकि नहि देअय। ओ बड़ सावधान भ' केँ सृजनक पाछाँ कयलक आ चालबाज शिकारी जकाँ ओकरा हाथ सँ टेड्डी छीनि लेलक। टेड्डी ल' क' निश्चिन्त भावें ओ बड़बड़यली 'ई हमर गिफ्ट थिक... तोरा नहि देबौ ई...।'

सृजन चुपचाप ठाढ़ रहल। ओ कोनो प्रतिरोध नहि कयलक। कानबो नहि कयल। एकटक रूनाक हाथ मे पड़ल टेड्डी केँ निहारैत रहल।

रूनाक पाछाँ सृजनक माइयो बाहर आबि गेल छलीह। ओ मने-मन सोचिते रहय कि सृजन केँ कहुना फुसला-तुसला क' खेलौना रूना केँ दिआ देत, ताधरि छौंड़ाक मनो भरि जेतै, मुदा रूना केँ एतेक धैर्य कतए। ओ तँ सृजनो सँ बेसी अबोध बेदराक अभिनय कयने जा रहल छल।

खाली हाथ ठाढ़ सृजनक चेहरा पर उगि आयल झाड़ आ आँखि मे पसरल निराशा केँ ओकर मायक चट्टानी आवरण क्षणे मे उड़ा देलक। ओ अपन बेटाक हाथ पकड़लक आ बाहर निकलि गेल। दुनू भाइ-बहिन सेहो चुपचाप संग ध' लेलक।

धूरा-माटि सँ भरल बाट पर सृजन उछलैत-कुदैत घर घुरि रहल छल। जन्मदिनक सभ टा खिस्सा ओकरा वास्ते खतम भ' चुकल रहय। ओकरा एक टा नया खेल सूझि गेल रहै। रस्ता मे ओ सभ सँ पाछाँ-पाछाँ चल' लागल। चलैत-चलैत अपन तर्जनी सँ सड़कक माटि पर कतेको आकृति सभ बनयने जाय। जत' धरि माटि छल, ओतए धरि ओ झुकि-झुकि क' चित्र बना लेलक। अपन घरक दरबज्जा धरि अबैत-अबैत ओ ठिठकल आ जोर सँ चिकरलक, 'माय..., दीदी... भैया..., पाछाँ ताकू...।'

सभ चौंकि उठल। पाछाँ देखैत अछि तँ जत' धरि नजरि गेल, नान्हि-नान्हि आँगुरक टेढ़-टूढ़ रेखा देखाइ पड़ल।

'पागल नहितन! ई की करैत रहलैं भरि बाट तों?'

लक्की आ सुमन एक्कहि संग भरल त' रहबे करय भोकारि पाड़िक' कानय लागल। सृजन ओकर सबहक फटकार पर ध्यान नहि देलक। माय केँ आँचर सँ नुरिया क' खुशी सँ चिकरल, 'देख माय। मौसीक बेटी केँ तँ एकहि टा टेड्डी छलै, हमरा देख! कते टेड्डी छै... एत' सँ ओतय धरि...।' आ ओ गनय लागल—एक...दू...दस...बारह...।

जादू

रौद उतरि गेल रहै। गोधुलिक ई समय ओकरा मन केँ अनायासहि शिथिल आ सुस्त क' जाइत छै। लगैत छै कतहु किछु छुटि गेल छै। सपूर्ण अस्तित्व जेना एक टा गुदड़ी जकाँ शून्य मे दूर बहुत दूर तागा सँ छूटिक' भटकि रहल अछि आ कतहु कोनो झाड़-झाँखुड़ मे कोनो समय फँसिक' तित्तिर-बित्तिर भ' जायत।

ओकर मन आब उचटि गेल छै। भ' सकैत अछि, भरि दिनक थकावटिक अदृश्य प्रभाव हो, जे ओकरा भीतर स्वयं के प्रति असीम करुणाक भाव प्रवाहित क' रहल हो। भावना, संवेदना, प्रेम आ घृणाक अनेक रूप अपन गति मे यंत्रवत प्रवाहित, प्रभावित होइत रहल अछि।

समयक पाँखि पर सवार जीवनक कतेको अनुभूति, कतेको पड़ाव नीक-बेजाय, सुख-दुख जानि नहि कतय लुप्त भ' गेल। कतेक वर्ष बीति गेल। नमहर जीवनक क्रम मे कहियो ओ अपन संपूर्ण चित्र नहि बनौलक। आधा-अपूर्ण, धूमिल, चमकहीन चित्र... जतय-जतय सौंसे घर आँगन छिड़िआयल। जेम्हर देखू, ओकरे बनाओल चित्र। कखनो भनसाधर मे, कखनो आँगन मे, कखनो इनार पर, कखनो बाड़ी-झाड़ी मे उड़ैत। खरकट्टल हाथक स्पर्श सँ भरल पड़ल वस्तुजात... मुदा अपन चेहरा... कहियो इच्छो नहि भेल स्वयं केँ तकबाक। ओ अपना केँ ताकब छोड़ि देलक भरिसक, दू टा बच्चाक भविष्यक कारणें।

एक्के चिंताक चिता मे जरैत रहब ओकर स्वभाव भ' गेल रहै। सुविधाक नाम पर किछु नहि जोड़ि सकलि छलि, तैयो बच्चा सभ केँ जतबा भ' सकलै-पढ़ौलक-लिखौलक। नीक-नीकुत खयबाक-पहिरबाक इच्छाक दमन करब तँ ओ पहिनहि सीखि लेने छलि, बच्चो सभ ई पाठ कंठस्थ क' लेने रहै।

ओह! एक टा आह बहराइत छै ओकरा मुँह सँ। स्मृतिक झोंक सँ बहरायल आह। जमाना बीति गेलै, मुदा नवका फ्रॉक लेल छोटकी बेटीक जिद करब ओकरा अखनो मोन छै। मेला मे चाभी बला गाड़ी लेल बेटाक जोर-जोर सँ कानब तँ ओ कखनो नहि बिसरि पबैत अछि। आँखिक सोझाँ शून्य मे ओ सभ चित्र पसरि जाइत छै।

वर्त्तमान जे छल से संपूर्ण जीवन-संघर्षक यंत्रणा छल। बच्चा सभ जेना-तेना एक टा सही दिशा पकड़ि लेने छल। आब ओ सभ एहि लायक जरूर छल जे अपन परिवार केँ दूसंझी रोटी खुआ सकैल छल। दुसंझी रोटीक जोगाड़ सँ ओकर एंड़ी खिचा गेल रहै। दुनू गोटे दिन-राति मेहनति करैत छल, तखन जाक' बच्चा सभ केँ ढंग सँ भोजन भेटैत रहै। बच्चा सभ केँ नेनपनक त्रासद दिन मन नहि रहै, से नीके भेलै। ओ सेहो ओहि दिन सभ केँ स्मृतियोग्य नहि बन' देलकै। ने तँ अपन मुँहेठ उदास कयलक, ने ककरो सहानुभूति पर द्रवित भेल।

बेटा माय-बापक प्रत्येक आज्ञा मानैत छल। ओ सभ दिन अपन आँचर पसारि देवता सँ एक्के टा प्रार्थना करैत छल—हे ईश्वर, हमरा बच्चा सभ केँ सदबुद्धि दियौ... ओकर रक्षा करियौ। ओकर दिन-राति बच्चे सभ लेल समर्पित छल। ओकरे सुख-दुख, ओकरे चिंता। आब तँ बेटी अपन घर चलि गेलि। जतय धरि बनि पड़ल, ओकरा लेल कयलक। बहुत प्रसन्न अछि ओ। सासु नीक भेटलै, पति सेहो। आओर की चाही। बूढ़ पति आब अपने धुन मे मस्त रहैत अछि। अपन बीतल दिन ओहो बिसरि चुकल अछि।

बेटा विवाह योग्य भेल। सात देवी-देवता केँ गोहारलक तखन जाक' फूलसन कोमल, गुड़िया सन सुन्नरि पुतोहु भेटलै। समय बहुत उठा-पटक कयलक। अनेक परीक्षा लेलक। तखन जाक' थोड़ेक सुख ओकरा आँचर मे राखि देलक।

समय पर भोजन देबा मे पुतोहु केँ नीके लगैत छलै। जखन मन करय, चाह बनाक' सासु-ससुर केँ पिया दैत छलि। गरम-गरम चाहक गिलास पकड़िते ओकरा आँखि सँ नोर बहय लागय। पुतोहु केँ आशीर्वाद दैत ओ फुसफुसा उठय—कहिया सँ एहि समयक प्रतीक्षा मे रही कि केओ किछु बना-सोनाक' खोआबय...आइ धरि तँ अपने हाथ जराओल अछि...।

पुतोहुक गोर-नार हाथ जखन करिखा लागल बासन मँजैत छल तँ ओकर प्राण कंठगत भ' जाइ। पुतोहु केँ बासन नहि माँजय दैत छलि। थिक तँ ककरो बेटीए कि ने। ककरो टोकला पर ओ यैह कहय। कतेको रास काज ओ अपने क' दैत छलि। पुतोहुक सीधपना आ ओकर अस्तित्व ओकरा सासुक गरिमा सँ रहरहाँ च्युत क' दैत छलै आ ओ ओकरा सोझाँ एकदम हल्लुक भ' जाइत छलि। कतेक एहन अवसरि अबैत छल, जखन पुतोहुक जीह पर शब्दक नव-नव स्वाद उभैरत छल आ ओ चुनि-चुनि क' तकरा अभिव्यक्त करबा सँ परहेज नहि करय। ओ जेना किछु बुझिये नहि पबैत छलि अथवा बुझियो क' अपरिचित रहैत छलि।

ओहि दिन ओकरा सँ एक टा गलती भ' गेलै। भानस-भात बनाक' पुतोहुक बहराइते ओ सफाइक काज शुरू नहि कयलक। मोन अलसायल रहै। साँझ मे

अकस्माते मोन पड़लै जे इनार पर बासनक ढेरी लागल छै। ओ चुपचाप जाक' बैसि गेलि आ अपन खरकट्टल हाथें बासन चमकाब' लागलि। ओकरा नीको लगैत छलै बासनक करिखा हटबय मे।

यैह समय होइत रहै बेटाक काज पर सँ घुरबाक । माय कें बासन धोइत देखि ओ क्रोधित भेल छल, कनियाँ पर बरसि पड़ल। कनियाँक पैघ-पैघ आँखि मे लाले-लाल डोरि उभरि अयलै। एहिना बेसी काल होइ, जखन ओ अपन मायक बेसी चिंता करय तँ कनियाँक आँखि पहिने भीजैत छल, फेर लाले-लाल डोरि आँखि मे उगि जाइ। ओ किछु बजैत छल आ भनसाघर मे बासनक ढनमनी।

ई बेटा कें नीक नहि लगलै। साँझु पहर... मच्छर सँ कटबैत इनार लग बासन माँजैत माय। एक अजीब सनसनाहटि सँ भरि गेल ओ। ओकरा बुझयलै जे इनार पर बैसलि ओकर माय नहि, कोनो दुखांत नाटकक पात्र हो।

ओ झटकिक' कोठली मे गेल। खिड़कीक बाहर दूर-दूर धरि पसरल हरियरी आ घर घुरैत चिड़ैक झुंड कें अपलक निहारैत पत्नी, पतिक डेगक आहटि सँ ओ चौंकि उठलि। पतिक उखड़ल मूडक कारण ओकरा पता रहै। पति अपन तामस पर नियंत्रण कयलक आ नरम होइत बाजल—माय सँ काज करबैत नीक लगैए अहाँ कें? ओ चुप छलि। ओ पकड़लि गेलि छलि आ जवाब लेल तत्काल शब्द नहि जुटा सकलि। अपन पराजयक जिम्मेदार सासु कें ठहराबैत ओ विचलित भ' उठलि। ओकर सुंदर चेहरा पर घृणा सँ उपजल विरक्तिक भाव तिरोहित भ' गेलै। ओकरा सासु एक नम्मरक चलाक आ बनौटी बुझयलै।

जखन हिनक अयबाक समय होइत छै, तखने एकर सासु कोनो काज ल' क' बैसि जाइत छै!—पुतोहु मनहि मन भनभनायल। फेर एकदम सधल पयरें सासु लग गेलि आ स्वर कें मधुर बनबैत बाजल, 'अहाँ नहि साफ करबै तँ थारी-बाटी साफ नहि हेतै माँजी...। जानि-बूझिक' बेटाक अयबाक समय मे आबिक' बैसि गेलहुँ। भरि दिन तँ बासन पड़ले रहै, किएक ने माँजि लेलहुँ। ओना तँ दिन भरि ओछाइने धयने रहै छी...। हद अछि देखौटी के...।'

ई गप्प बहुत नरमी सँ कहल गेल रहै, मुदा ओकरा कान सँ पघिलैत गर्म शीशा जकाँ ओकरा छाती धरि उतरि गेलै। ओ चुप रहलि। अपन सफाइ मे ओकरा कहियो किछु कहय नहि पड़ैत छलै। जे सोचय, जेना सोचय, ओकरा कोनो अंतर नहि पड़ै। बासन साफ करैत रहलि। सभ टा बासन साफ भ' गेलै मुदा तकरा पसरले छोड़ि ओ अपन एकांत कोन मे चलि गेलि।

ओहि राति पुतोहु बहुत अनमनायलि रहलि। काज करैत-करैत बीच-बीच मे बरंडाक कोन मे बैसलि सासु कें गहींर दृष्टिएँ देखि लैत छलि। ओ किछु-किछु

बुझि गेलि छलि। पुतोहुक एहि तरहें ताकब कोनो खतराक घंटी सँ कम नहि छलै।

कतेक खेप एना देखलाक बाद पुतोहुक मोन खराप भ' जाइत छै। जँ भोर मे एना ताकि लेलक तँ दिन भरि ओछाओन पर पड़ल रहत। जँ साँझ मे तकलक तँ राति भरि...। घर सँ बहराइते नहि छलै। एहन अवसरि पर ओकरा चकबिदोर लागि जाय। भरि दिन भूखल-पिआसल... ओना खेनाइ तँ चुप्पेचाप भ' जाइत हेतै मुदा बाथरूम? कोना पूछय?

ओ जहिया बिआहि कें आयलि छलि तँ मोन खराप हेबाक कोनो मोल नहि छलै। स्वयं ज्वर सँ तपैत छलि मुदा आँगनक सभ टा जेठ स्त्रीगणक बिनु पयर जँतने सुतबाक अनुमति नहि छलै। ओहि दिन सभक मन पड़िते ओकर रोइयाँ भुलकि जाइत छै। ओकरा सभ कें बिसरिये जायब आब उचित छै। अपन पुतोहु जेहन हो, ओकरा संग एहन नहि होब' देत ओ। पुतोहुक घर सँ नहि बहरयला पर सभ टा काज ओकरा अपने करय पड़य। बूढ़ देह थाकि जाय मुदा ओकरा कोनो शिकाइति पुतोहु सँ नहि आ एही शिकाइतिक नहि होयब बिक्खक घर थिक। ओ रहरहाँ सुनैत अछि, 'बहुत नटकिया अछि ई बुढ़िया... नीक बनिक' बेटा पर मोहिनी मंतर चलौने अछि।'

'दोसरक गपक की? जतय अपनत्व देखलक, घर फुटबय चलि आयल।' ओ ककरो नहि सुनैत छलि। जीवनक यात्रा मे ओकर दाना-पानि तँ ओहिना घटिते जा रहल छै, नहि जानि कहिया खतम भ' जेतै आ ओकरा अपन आँखि मूनय पड़य... मुदा जाधरि अछि ओ अपन बेटाक चिंता कोना छोड़ि सकैत अछि। आगाँ पुतोहुक इच्छा...।

ओकर अनुमान ठीके बहरयलै। भोर मे पुतोहु कोठली सँ नहि बहरयली। बेटा बहरयलै तँ ओकर मन बहुत उखड़ल-पुखड़ल सन रहै। आइ ओ माय कें टोकबो नहि कयलक, गपो नहि कयलक। ओ बेर-बेर भनसाघर दिस तकैत छलि। ओकरा चेहरा पर तनाव बढ़ल जा रहल छलै। आँखियो सँ देखाब कम दैत छै आब ओकरा। भानस-भात करब बहुत मोसकिल आ भारी लगैत छै। बहरिया जतेक काज करबा लिय'...भनसाघर...भगवान बचाबथि। पुतोहुक अबिते ओ अपन पहिल सफाइ देने छलि। मुदा पुतोहुक खटवास लैते सभ टा बोझ ओकरे पर आबि गेलै। एक बेर नहि, अनेक बेर।

ओ अपन बेटा सँ जिज्ञासा करय चाहलक, पुतोहुक विषय मे। मुदा ओकर तनल भृकुटि देखि चुप भ' गेलि। जखन-तखन बेटा कें अनोन-बिसनोन सुनब' बाली बुढ़िया एखन किछुओ पुछबाक हिम्मति नहि जुटा पाबि रहलि छलि।

किछु कालक बाद उकासी करैत बूढ़ा हाथ मे छड़ी लेने भीतर पहुँचल। चाहक लेल ओकर कंठ सूखि रहल छलै। अपन झुकल डाँड़ कें थोड़ेक सोझ करैत हाथक

छड़ी केँ देबाल सँ टिकाक' ओ बरण्डाक कुरसी पर बैसि गेल। बुढ़िया मोटरी जकाँ सिकुड़ल पयर मोड़ने चौकी पर बैसलि छलि।

'की रौ बाबू। आइ चाह-ताह नहि देतौ कनियाँ की?' उलहनक स्वर मे बूढ़ा बेटा सँ पुछलक। बेटाक नजरि ड्योढ़ी पर जमा भेल कचराक ढेरी पर छलै। पिताक बात केँ नहि सुनबाक बहाना बनबैत ओ भनसाघर घुसल। चूल्हि पर राखल सलाइक काठी ल' क' ओ कचरा मे आगि लगयबाक लेल बढ़ल। बूढ़ा जवाबक प्रतीक्षा मे एक क्षण गुम्म रहल, फेर बच्चा जकाँ कोमल भाव मे पुछलक, 'कनियाँ एखन धरि किए नहि उठलै बेटा? कतेक अबेर भ' गेलैए। मोन ठीक नहि छै की?'

एतेक सुनिते बेटा फनफना उठलै, 'की मजाक बना लेने छी अहाँ सभ? लोहाक तँ नहि बनल अछि जे कहियो मोने खराब नहि हेतै?'

बुढ़िया छटपटाक' उठिक' बैसि गेलि। बेटाक ई एकदम नव रूप छलै। एतेक तिक्ख तँ ओ नहि बजैत छल कहियो। थोड़ेक डरैत आ सकपंज भेल ओ पूछि बैसल, 'किछु कहतै तखन ने हमसभ बुझबै बेटा...।'

बेटाक दिमाग जेना दिशा बदलि चुकल छल। भन्नाइत बाजल, 'की कहतौ? दिन-राति खटैत रहैत छै आ तों बाढ़नि-बासन पकड़ि साबित करय मे लागल रहैत छें जे पुतोहु एकदम निखट्टू अछि। अरे! कनियों तँ इज्जति दही।' तामस पर लगाम लगयबाक प्रयास मे बेटाक चेहरा तनतनायल रहै। दू डेग आगाँ बढ़ि ओ पाछाँ घुमल। बुढ़िया दिस अनुनय भरल नजरि सँ देखैत बाजल, 'किछु तँ दया करही माय।'

बुढ़िया सन्न रहि गेलि। ओकर माथ ठनकि उठलै। बेटाक सोझका जीह मे चाभी भरय वाली आओर के भ' सकैत अछि। काल्हि साँझ इनारक लहरा पर फुसफुसाक' कहल गेल पुतोहुक गप ओकरा मोन-मस्तिष्क मे हथौड़ा सन बाजि उठलै। बूढ़ा मोने-मोन धिक्कारैत बुढ़िया दिस तकलक। चाह पिबाक ओकरा उत्कट इच्छा भ' रहल छलै। ओ बामा हाथें छड़ी पकड़ि उठल। ओकर घुट्ठी थोड़ेक काँपि रहल छलै। चाहक तलब गरदनि केँ सुखा रहल छलै। छड़ीक सहारें ओ एके डेग मे बुढ़िया लग पहुँचि गेल। दहिना हाथ केँ ओकर मुँह लग नचबैत घृणा सँ बाजि उठल, 'अहाँ की करैत रहै छी, बैसल-बैसल... अँय! एक कप चाहो नहि बना सकैत छी? बेचारी कनियाँ, दिन भरि बड़द बनि खटैत रहैत अछि...।' ओ ठिठकि गेलि। बूढ़ा तँ दिन भरि दसदुआरी भेल रहैत अछि, फेर ई कोना बुझलक जे दिन भरि कनियाँ खटैत रहैत अछि। आ ई चंदर, ओकर बेटा, ओह!

आब बुढ़ियाक दिमाग मे गप धँसल छल। पुतोहुक दुनू पहरेदार केँ ओ एकटक तकैत रहल।

'एना की ताकि रहल छी? गीड़ि जायब की?' बूढ़ा एक नजरि बेटा दिस

तकलक आ बुढ़िया केँ लताड़लक, 'उठू, चाह-ताह बनाउ। कने कनियाँ सँ पुछियौ, की भेलैए। अहाँ केँ तँ ओकर कोनो चिंते नहि रहैत अछि।'

बुढ़िया चकित छलि। ओकरा बेटा पर तँ रतुका जादूक असरि अछि...। ओकरा मन पड़लै, काल्हि राति बड़ी काल धरि कनियाँक कोठली मे इजोत रहै। की गप होइत रहै से ओ नहि सुनि सकल छलि।

मुदा, ई बुढ़बा, एकरा पर कोन जादूक असरि छै। ओ अपन पति केँ समधानल जवाब देब' चाहैत छलि, मुदा आँगनक कोन मे सलाइक काठी लेसि बेटा आगि लगा देने छल। ओकरा आँखि सँ होइत गरदनिक भीतर धरि धुआँक धुआँइन गंध पसरि गेल रहै।

गीरह

एक दिन हठात सुधा सँ भेंट भ' गेल। छोट सन कोनो आयोजन छलै। अनेक स्त्री आ लड़की सभक बीच ओ एकसर रूपगर्विता सबहक आकर्षणक केन्द्र छलि। कालेजक दिन मे सेहो ओ अपन सुन्दर देहक प्रत्यंचा पर आकांक्षाक डोरि खैंचि ओकर टंकार सँ अनेक बहसल लड़का सभ केँ हताहत करैत छलि। ओहि समय एक अदृश्य कुंठा सभक संग हमरो घेरि लैत छल।

देखबा मे सुन्नर रहलाक बादो ओ कुमारिये छलि। एक टा छोट सन नोकरी ध' क' एही शहर मे आबि गेल छलि। ईहो एक संयोगे छल जे जाहि ऑफिस मे हमर पति काज करैत छला, ओही ऑफिस मे ईहो छलि। अपन दैहिक चटक-मटक सँ पुरुष सभ केँ आकर्षित करबाक आदति सँ ओ एखनो उबरि नहि सकल छलि।

हमरा शहर मे ओ दू बर्ख सँ छलि। हम तँ जनितो नहि रही। एक दिन ई अपने कहलनि जे अहाँक सखी सुधा हमरे आफिस मे काज करैत छथि। आफिसक सब कर्मचारी केँ ओ अपना वश मे क' लेने छथि। खूब कमाइतो छथि।

हमर मोन वितृष्णा सँ भरि उठल छल। मने मन ओकर चारित्रिक पतन पर हम विक्षुब्ध भ' उठल रही। ओकरा सँ भेट करबाक आ गप करबाक हमर सभ टा लालसा ओहि दिन खतम भ' गेल छल। ओही दिनक बाद हम कहियो ओकर चर्चा नहि कयल। ई अपने बेसी काल तिरस्कार करैत ओकर चर्चा करैत छला। ओकर तीन-तेरह करैत छला। स्त्री चरित्र केँ रहस्यमयी सिद्ध करबाक पूरम्पूर चेष्टा करथि।

स्त्रीक प्रति हिनक तटस्थता आ स्वयं के प्रति कर्त्तव्य बोध सँ हम निश्चिन्त रहैत छलहुँ। मुदा बेर-बेर हिनका मुँह सँ सुधाक चर्चा नीक नहि लगैत छल। अनजानहि एक टा अन्यमनस्कता हमरा पर लदि जाइत छल, जकरा ओ बूझि जाइत छला आ फेर निरंतर सुधा पर अनेरूआ लांछन लगौनाइ शुरू क' देथि।

मुदा हम एहन खुक्ख चाटुकारिता सँ संतुष्ट नहि होइ। चुप्पो रही मुदा बाजितो रही जे अहूँ तँ ओकरा सँ गप करिते होयब। एके ठाम उठैत-बैसैत होयब।

चेहराक एक-एक रेखा पढ़बा मे पटु ओ हमर सभ टा भंगिमा बूझि जाइत रहथि आ स्वयं बाजि उठथि, हम तँ ओकरा सँ दूरे रहैत छी। जकरा कोनो काज-धंधा नहि, सैह सभ जर-जनानीक चक्कर मे रहैत अछि। सत्य तँ ई थिक जे हम ओकरा ठीक सँ देखबो नहि कयने छी, गप करब तँ दूरक बात।

हिनक एहन-एहन गप सँ हमर अबोध मोनक सभ टा बोझ क्षण भरि मे उतरि जाइत छल। स्नेह आ निष्ठाक एक टा गहींर दृष्टि हुनका पर फेकि निश्चिन्त भ' जाइत छलहुँ। हम सुधा सँ दूर रहय चाहैत छलहुँ आ इच्छा छल जे ईहो ओकरा सँ दूरे रहथि।

मुदा ओहि दिन लाख नजरि बचौलाक बादहु ओ विजयी-भाव सँ हमरा लग आबि ठाढ़ि भ' गेलि। बेमन सँ हँसय पड़ल आ अनेक बरखक बाद भेट हेबाक अभूतपूर्व प्रसन्नताक नाटक करय पड़ल।

ओ चहकि-चहकि बाजि रहल छलि आ हम बिनु किछु सुनने, कखनो ओकर बड़की टा खोपा देखी तँ कखनो ओकर पैघ-पैघ आँखि मे अपन पतिक प्रति ओकर निर्लिप्तता ताक' लागी। मन छल जे बहकि जाइत छल। एहन रूप सँ क्यो कोना बचि सकैत छल। स्त्री भ'क' जखन हम मुग्ध रही तँ फेर पुरुष तँ...। एकरा आगाँ किछुओ सोचबाक साहस हम नहि क' सकलहुँ।

ओकरा सँ मुँहामुही होइत जाहि प्रश्नक चोट सँ बचबाक लेल हम अपना भीतर अनेक छल-छद्मक घेरा लगा लेने छलहुँ, अन्ततः ओकरा तोड़ैत ओ पुछिये देलक, 'अहाँक मिस्टर केँ नहि देखि रहल छी?'

—'नहि!' हम संयत हेबाक प्रयास कयलहुँ। ओकरा मोनक थाह पयबाक लेल हमहीं खोरलियै, 'कोनो काज छल की?'

—'काज? ओ नहि रहथि तँ हमर सभ टा काज अकाजक भ' जायत। हुनके भरोसें तँ एहि अपरिचित शहर मे टिकल छी।' ओ हँसैत दृढ़ता सँ कहलक।

आ हम समूल हिलि गेलहुँ। संपूर्ण चेतना सूखल पात जकाँ जेना ऊपरे-ऊपर उठैत चलि गेल। हिनक साबूत झूठक अफसोच हिला क' राखि देलक। की होइतै जँ जो कहिये दितथि जे ओ सुधा सँ भेट करै छथि, बतिआइत छथि। हुनक एक टा झूठ सभ किछु खोलि क' राखि देने छल। अन्ततः घेराइये गेला रूपक एहि जादुइ आवर्त्त मे...।

सुधा हमरा लग आबिक' बैसि रहल। ओ ढीठ होइत बाजलि—'अहाँ तँ हमरा बिसरिये गेलहुँ अनु। कहियो घरो पर नहि बजौलहुँ। काल्हि हम स्वयं आयब। अहाँक पतिदेव सँ किछु गप करबाक अछि।'

मोन होइत छल जे चिचियाक' कहि दियैक, कोन गप करबाक अछि, हम खूब जनैत छी। हम अपना घर मे पयर नहि राखय देबहु, चुड़ैल नहितन...। मुदा चेतनाक संग-संग शब्द सेहो जेना गुम भ' गेल छल। हमर आंतरिक दुरवस्था सँ अनभिज्ञ सुधा विदा ल'क' चलि गेलि।

घर घुरलहुँ तँ ई निसभेर निश्चिन्त भेल सूतल रहथि। मन विचलित भ' उठल, झुट्ठा नहितन। मोन भेल जे हिनका झीकि क' उठा दियनि। केहन विरोधाभास छल। हम भीतरे-भीतरे डाह सँ जरि रहल छलहुँ आ ई सपनाक मोहक पाश मे डूबल पड़ल छथि। मन विरक्त भ' उठल। हिनक आ सुधाक मिलल-जुलल फोटो कोठलीक देबाल पर चित्रित होब' लागल। घबड़ा क' हम बिजलीक स्वीच ऑन क' देलहुँ।

काल्हि सुधा औतीह। दुनू गोटे मे गपशप होयत। हास-परिहास होयत। दुनू गोटा सटि क' बैसताह। हमरा आँखि मे किछु जर' लागल। हमर असहाय दृष्टि हुनक उन्नत ललाट पर जाक' स्थिर भ' गेल। अकस्मात लागल जे छातीक सभ टा नस सिकुड़ि गेल। हम अपन माथ देबाल पर पटकि देलहुँ। आवाज कोठलीक निस्तब्धता केँ चीरैत चलि गेल आ ई हड़बड़ा क' उठि बैसलाह।

—'की भेल, कखन अयलहुँ, सुतलहुँ कियैक नहि?' एक्के संग ओ अनेक प्रश्न पूछि देलनि। उत्तर छल जे बाहर अयबा लेल बेचैन छल। मुदा एहि तरहें अनचोक्के प्रहार करब हम उचित नहि बुझलहुँ। जँ ई सकारिये लेथि जे ओ सुधा केँ पसिन्न करैत छथि, तँ तकरा हम कोना सहि पायब? एखन विश्वासक एक टा छद्म तँ अछि।

अपन सभ टा उत्तेजना केँ हटबैत हम सहज भ' क' पुछलहुँ—'हमरा सँ झूठ कोना बजलहुँ अहाँ? सुधाक संग ऑफिस मे तँ खूब पटैत अछि अहाँ केँ...।' नहियो चाहैत हमर स्वर थोड़ेक बेरस भ' गेल।

भाव-भंगिमाक परख मे माहिर हमर जौहरी पति हमर मनोभाव केँ क्षण भरि मे परखि लेलनि—'अहाँ केँ ईर्ष्या कियैक होइत अछि? बेसहारा अछि। एहि स्वार्थी वातावरण मे ओकर अस्तित्व असुरक्षित छैक। तें थोड़ेक मदति क' दैत छियैक...।'

ओ अपना दिस सँ कोनो उत्सुकता प्रकट नहि कयलनि। आखिर हमरा कोना पता लागल, हम कियैक पुछलियनि, किछु नहि। चुपचाप सूति गेलाह।

हम सूति नहि सकलहुँ। मोन होइत छल जे रातिक एहि नीरव अन्हारक संग एकमेक भ' विलीन भ' जाइ, जाहि सँ भोरे सुधा केँ अपन आँगन मे नहि देखि सकी।

मुदा भोर भेल आ सुधा आयलि। बहुत अनौपचारिक ढंगें हमरा टोकलक। ई अखबार मे डूबल रहथि—'पाहुन यौ...' एक लय मे कहैत ओ हिनका पीठ पर एक धौल देलक आ सटि क' बैसि गेलि। हम एक तीक्ष्ण दृष्टि सँ ओकरा दिस

तकलहुँ, मुदा आँखि बाजिये उठल...कोरे मे बैसि जो सौतीन...। मुदा हमर दृष्टिक गंभीरता केँ ओ पारेख नहि क' सकलि।

ओ हिनका संग गप मे तल्लीन भ' गेलि। दुनूक चेहरा पर कोनो असहजताक भाव नहि छलैक। असहज रही हम। सोचैत चलि जाइत रही। कोना दू तरहक जिनगी जीबि लैत अछि लोक? अनिच्छा सँ ई एखन धरि हमरा कोना उघैत रहलाह आ तकर हमरा भनक धरि नहि लाग' देलनि।

जलखै-चाहक बहन्ने ओतय सँ उठि हम सीधे किचेन मे आबि गेलहुँ। मनक चोर खिड़कीक फाँक सँ दुनू केँ देखब शुरू कयलक। जखन देखी, सुधाक चेहरा पर स्निग्ध-स्मित मुस्की आ हिनक स्नेहसिक्त आँखि टा। ओ आँखि कतेक सुन्नर रहै? हमरा दिस तँ जखन उठलैक, एक टा पुलिस ऑफिसर एक हुकूमती आँखि जकाँ। मन मे जेना किछु चनकि उठल आ आँखिक पल नोरा गेल।

हम स्वयं केँ संतुलित रखबाक प्रयास करैत छलहुँ। कोनो ठोस प्रमाणक बिना झगड़ो-झांटी तँ नहि क' सकैत छलहुँ। फेर झगड़ा सँ ककरो हृदय तँ नहि जीतल जा सकैत छल। ओ हमरा अपने घर-आँगन मे कोनो घमंडी पड़ोसिया जकाँ लागि रहल छलाह। आब हिनक बेसी समय सुधेक काज मे व्यतीत होइत रहनि। ओकरा घरक तीमन-तरकारी सँ ल'क' ओकरा घर धरि पहुँचयबाक जिम्मेदारी हुनके रहनि।

हम अपना मोन केँ फुसलबैत छलहुँ जे कोनो ने कोनो दिन सुधाक बदली तँ हेबे करतैक ने। तखन हिनका माथ सँ सुधाक भूत स्वतः उतरि जेतनि। मुदा सुधाक प्रेतछाया धीरे-धीरे सभ टा खून चूसि हमरा रुग्ण क' देलक। असंख्य त्रासद चिन्ता मे एकसरे छटपटाइत हम अन्ततः ओछाइन ध' लेलहुँ।

माथ लग दबाइ सभक करमान लागि गेल। चिकित्सा मे कोनो कमी नहि। ई अपने यंत्रवत दबाइ दैत रहथि, उठबैत-बैसबैत रहथि। मुदा हमर आँखि शून्य भेल छल, चेहरा भावहीन। ने संवेदनाक कोनो झलक, ने सहानुभूतिक कोनो चेन्ह। असंख्य अन्तर्द्वन्द्वक मध्यहु एहन तुच्छ भावक अभिलाषा सँ हम मुक्त नहि भ' पबैत छलहुँ जे ई हमरा लग आत्मीयताक संग किछु काल बैसथि, जाहि सँ हम खुलि क' किछु गप क' सकी। भरिसक अदहा बीमारी ठीक भ' जाइत हमर। एहिना आफिस जयबा लेल ई तैयार भेला तँ हिनक कपड़ाक खूट पकड़ि हम कहलियनि—'एखन तँ समय नहि भेल अछि, किछु काल बैसू ने।'

—'अबै छी एखन। सुधाक ट्रांसफर एकदम इंटीरियर मे भ' गेल छैक, तकरा स्टे करयबाक छैक। बहुत भागमभाग करय पड़तै।'

हमर मोन बैसि गेल। रहल-सहल धैर्य खतम भ' गेल। तँ आब ओकर बदली सेहो रोकब' चाहैत छथि। आसक ईहो किरण लुप्त भ' गेल। तैयो साहस क' हम

कहिये देलहुँ—'हमर नेनपनक मित्र अहाँक सखी कोना भ' गेलि? हरदम सुधा-सुधा औन्हल रहैत अछि अहाँ पर...।'

ओ तँ क्रोध मे जेना तमतमायते रहथि। आँखि गुड़ारैत बजलाह—'अहाँ फूहड़ छी। की चाहैत छी जे सभ टा काज छोड़ि अहाँ कें छाती सँ सटौने रही? हमरा जाहि चीज मे शांति भेटत, सैह करब।'

पुरुष-दंभक एहन विकृत स्वरूप हम पहिल बेर देखने छलहुँ। आब सन्देहक कोनो गुंजाइश नहि छल। हमर मोन हमरे धिक्कारि उठल। एहि तरहें कुहरि-कुहरि कें मरबा सँ नीक, युद्धक मैदान मे बहादुरी सँ लड़ैत मरी। तत्काले एक टा निर्णय हम लेलहुँ। आइ सुधा रहती वा हम...।

हम एक टा चिट लिखि सुधा कें बजयबाक निमित्त पड़ोसियाक एक टा बच्चा कें देल। अस्वस्थ भेल देह मे नहि जानि कतय सँ शक्ति आबि गेल छल। घंटो कटु सँ कटुतर वाक्यांश आ शब्दक संग्रह करैत रही जे सुधाक अबिते ओकरा पर प्रहार करब।

बहुत प्रतीक्षाक बाद सुधा आयलि। वैह उन्मुक्त मुस्की। एना सभ स्थिति मे कोना हँसि पबैत अछि। कतय तँ हम भरल पड़ल छलहुँ मुदा ओकर मुस्की हमरो फुसियाही मुस्कीक संग ओकर स्वागत करबा लेल विवश क' देलक—कियो नहि भेटल अहाँ कें, हमरे घर बरबाद करबा पर लागि गेलहुँ। हम की बिगाड़ने रही अहाँक? ठोर धरि ई वाक्य सभ आयल मुदा से हम कहि नहि सकलहुँ।

मुदा ओ अबिते बहुत आपकताक संग हमर माथ दाब' लागलि। अनेक बर्खक बाद एहन ममतामयी स्पर्श हमर ठोर सीबि देलक।

—'ई केहन हालति भ' गेल अहाँक। हमरा पहिने खबरि कियैक नहि कयलहुँ?'

ओकरा आँखि सँ खसैत नोर हम स्वयं देखलहुँ। जाहि स्नेह आ ममता लेल हम अपन पति लग मास दिन सँ खेखनियाँ करैत रही, से ई बिनु मंगनहि हमरा द' देलक। ओकरा लेल हमरा भीतर संचित कुबोल टूटि-भखरि गेल छल।

आ अकस्मात अपन ओहि खतरनाक प्रतिद्वन्द्वीक सोझाँ अपन पराजय स्वीकारि हम एक निरीह याचिका बनि आँचर पसारने ठाढ़ भ' गेलहुँ—'हमर घर उजड़य सँ बचा लिय' सुधा, अहाँ कें हमर मैत्रीक सप्पत।' बिनु कोनो भूमिकाक कहलहुँ हम। शब्द छल जे काँपि रहल छल—'अहाँ सुन्नरि छी, बहुत लोक भेटि जायत—सहयात्री जकाँ। हम कतय जायब?' कान मे जेना धीपल लावा फूटि रहल छल आ ओहि विजयिनी शत्रुक कोरा मे माथ द' हम थस्स ल' लेने रही।

सुधा जड़वत बैसल रहलि। हम अनुभव कयल जे हमरा माथ पर राखल ओकर हाथ सर्द भ' गेल रहै। हमर मोन हल्लुक भ' गेल छल।

एक टा पाथर सन गुम्मी सधने सुधा विदा भ' गेल छली।

किछुए दिन बाद डाक सँ ओकर एक नमहर पत्र भेटल। करेज थामि क' हम तकरा पढ़य लगलहुँ। लिखल छल—'अनु, अपन मोनक बात अहाँ पहिने कियैक नहि कहलहुँ। सोचि-सोचि क' लज्जित छी जे हमरा कारणें अहाँ एतेक कष्ट उठौलहुँ। हमरा आ अपन पति कें ल'क' जतेक तुच्छ बात अहाँक मोन मे अछि, से बहुत स्वाभाविक थिक। मुदा एहि मे हम दोषी नहि थिकहुँ, अनु, अहाँ तँ जनैत छी जे हम शुरूहे सँ लोक कें प्रभावित करबा मे विश्वास रखैत छी, स्वयं प्रभावित होयबा मे नहि। यैह कारण थिक जे एखन धरि क्यो एहन मनोनुकूल नहि भेटल तें हम कुमारिये छी। अहाँक पति अपन प्रेम कें हमरा लग व्यक्त करबाक सदैव प्रयास करैत रहलाह। ओ तँ हम स्वयं कें सात तहक भीतर सुरक्षित रखने छलहुँ, नहि तँ ओ हमरा कतहु के नहि छोड़ितथि...। हुनक कृपा लेल हम आभारी अवश्य छी, मुदा हम हुनका सँ प्रेम नहि करैत छी।

हम जा रहल छी। नीके भेल जे हमर बदली भ' गेल। तकरो रोकयबा लेल वैह बेचैन रहथि। हुनका कहि देबनि, आब तकर कोनो जरूरति नहि अछि...।'

पत्र पढ़ि क' एक दिस यातनाक एक पीड़ा सँ जेना हम बहरा गेल रही, ओतहि दोसर दिस पतिक ओछपना सँ मोन तिक्त भ' उठल।

हुनक घर अबिते ओ पत्र हुनका थमा देलहुँ आ हुनक चेहरा पर अबैत-जाइत भाव कें देखबाक लेल एक कुटिल दृष्टि हुनक चेहरा पर जमा देलहुँ।

ओ पत्र पूरा पढ़लनि आकि आधा, नहि बूझि सकलहुँ। पत्र कें जोर सँ मुट्ठी मे कसि ओ दोसर कोठली मे जाक' केबाड़ फटाक सँ बन्न क' लेलनि।

बन्न कोठलीक भीतर, ओ कोन मनोदशा कें भोगि रहल छलाह, हम नहि बूझि सकलहुँ आ ने बुझबाक कोनो इच्छे भेल।

सुधा चलि गेली, मुदा हमर विश्वासक पवित्र ताग मे एक टा गीरह छोड़ि गेली।

कलंक

टेबुल पर बड़ी काल सँ खेनाइ परसल छल। टुनमाक माय कखनो घर, कखनो ओसरा पर चकभाउर द' रहल छलि। दसो बेर टुनमा केँ सोर पाड़ि चुकल छलि। मुदा ओ कान-बात नहि दैत छल। अकच्छ होइत ओकर माय बाजल—'रे सरधुआ, थारी परसा क' कत' फिरार भ' गेलही। जान ल'क' छोड़त ई धीयापुता हमर...।'

—'की भेल कनियाँ?' लटपटाइत स्वरें सासु पुछलनि।

—'की हेतै! दोस-महिमक फेर मे ई छौंड़ा बेरबाद भ' गेलै। थारी परसा क' यार लग गेलै चोंच मे चोंच सटब'।'

पुतोहुक मुँह सँ बहरायल ओहि आगिक धाह सँ सासु जेना लोहछि गेली। पोता लेल एहन उपराग हुनका कहियो नीक नहि लगलनि। देह आ स्वर मे एखन ताकत नहि छनि, नहि तँ पुतोहु केँ ऊपर सँ नीचाँ सिसोहि लितथि। चुप्पे रहलीह। ओहिनो गप करैत-करैत हुनकर आँखि झपक' लगैत छनि। बेसी बाजबो-भूकब पार नहि लगैत छनि। ओहि जनम सँ घुरल छथि। बचबाक कोनो उमेदो नहि रहनि मुदा बेटाक भाग्य आ सबहक सेवा सँ भगवान घुरा देलथिन।

टुनमा माय छलमलायले भनसाघर घुसि गेलि। पीठे लागल छोटकी बेटी दौगल आयलि, 'माय गै! पंडित जीक कनियाँ अबैत छौ।'

ओसार पर सब किछु अस्त-व्यस्त पसरल छलै। दुनू कात चौकी आ बीच मे व्हील चेयर पर बैसलि टुनमाक दादी। छोटका टेबुल पर परसल थारी।

टुनमाक माय भरल तँ रहबे करै, फुटय लेल उताहुल भ' गेलि। ओकर माथ गरम भ' गेलै। राति भरिक जगरना, ताहि पर भानस-भात, भरि घरक कपड़ा-लत्ता खिचनाइ, सासुक सेवा-टहल...। मोनक मिठास अलोपित भ' गेल छै ओकर। लोहिया मे छोलनी पटकैत चिचिआयल, 'गै छौंड़ी, जल्दी सँ थारी हटा टेबुल पर सँ। एहि अभगला केँ खेनाइ लिखल होइ तखन ने!'

छोटकी छौंड़ी दौगि केँ थारी हटा लेलक। मायक एहि आदेशक कारण ओ

नहि बूझि सकल। ओ मायक तीक्ष्ण मुद्रा सँ सहमैत नहुँए पुछलक, 'माय गै, पंडिताइन अयलै तँ थारी कियैक हटबेलीह।'

माय तामसे भेर छलि मुदा बेटीक सहमल मुँह देखि कने नरम पड़लि। गरदनि घुमबैत बाजलि, 'ओकर आँखि नीक नहि छै।'

बेटी कने अप्रतिभ भेलि, 'आँखि तँ नीके छै माय।'

—'तों नहि बुझबी। डायन छै डायन।'

डायनक नाम सुनिते छौंड़ीक सर्वांग काँपि गेलै। डायनक जेहन रूप रेखा ओकर माय-दादी खिंचने छलि, ताहि सँ ओ पहिने सँ आक्रान्त छलि। डायन तँ मारि दै छै लोक केँ, तँ की ई मारय लेल आयलि अछि...। ई बात दिमाग मे अबिते छौंड़ी केम्हरो पड़ा गेलि।

तावत पंडिताइन हकमैत-कुहरैत ओसरा पर चलि आयलि। ओकर देह भारी छलै। बूढ़ देह, कतेको बीमारी सँ जर्जर।

—'आउ काकी आबू-आबू!' बड़की बेटी उपरका मोने ओकरा बैसय लेल कहलक। ओ दादीक चौकी पर बैसय लागलि, 'नै-नै, ओहि पर नै। एम्हर बैसू काकी।' ओ बुझनुक छलि। माय ओकरा सिखौने छलि।

—'नजरि-गुजरि लगब' वाली जनीजाति सँ मधुर व्यवहार करबाक चाही।'

दोसर दिसका चौकी पर पंडिताइन बैसबाक उपक्रम करिते छलि कि दू चौकीक बीच मे व्हील चेयर पर बैसलि दादी आँखि खोलि हुनका देखलनि। पुतोहु आ पोतीक भाव-भंगिमा आ गपशपक आभास हुनका ओहू अवस्था मे नीक जकाँ भ' रहल छलनि। पाछाँ घुमि ओ बड़की पोती केँ कहलनि, 'गै बाउ, हमरा बाहरे ल' चल।' आधा बात ओ मोने मे राखि लेलनि। बाहर जेतीह तँ पंडिताइनो बाहरे बैसतीह ने। घरक भीतर माझ ठाम कथी लेल बैसतीह। किछु होइ वा नहि, कनियाँ अनेरे ठोंठ दाबत।

बड़की पोती कुर्सी खींचि क' बाहर ल' अनलक। पंडिताइनो देह घिसिअबैत बाहर आबि गेलि।

—'ह' ह'।' टुनमाक माय माथक नूआ खसबैत आरामक मुद्रा मे अबैत बाजलि, 'गेलै बाहर? कखनो धमकि जाइ छै लोक सब। इहो नहि बूझ' अबैत छै जे खायो-पीबाक बेर होइत छैक...।'

टुनमा हकासल-पिआसल आबि क' टेबुल पर बैसल। ओकर माय बेटीक कान मे फुसफुसेली, 'थारी पर नजरि नै ने पड़ल रहै बुढ़ियाक।'

—'नहि-नहि।' ओ आश्वस्त कयलकै।

—'तँ दही बाहर केँ एहि धोंछा केँ। फेर ठूसि क' भागतौ।'

छौंड़ा भुखायल छल। मायक गारि-फज्झति पर ध्यान नहि देलक। थारी पबिते सपा-सप खा गेल।

बाहर मे पंडिताइन बूढ़ी लग बैसलि एकदिसाहे गप मे लीन छलि। टुनमाक दादी बेसी बाजि नहि पबैत छलि। तीन मास बीत' चललै, ओछाइने धयने छलि। बेटा-पुतोहु, पोता-पोती सब सेवा मे लागल रहैत छलनि मुदा रोग जेना देह नहि छोड़बाक जिद ध' लेने छलै। राति मे करौटो फेरबा मे कष्ट होइत छलनि। भरि राति कंठ सुखाइत रहैत छलनि। आ निन्न तँ जेना रूसले रहनि। राति जेना करिया पहाड़ जकाँ आँखिक आगाँ ठाढ़ भ' डरबैत रहैत छलनि। पल-पल भोरुकवाक प्रतीक्षा करैत आँखिक कोर सँ नोर खसैत रहैत छलनि। डाक्टरक दबाइ कोनो काज नहि क' रहल छल। घूमि-फिरि क' दुनू सासु-पुतोहु केँ झाड़े-फूँक पर ध्यान अटकि गेल छलनि।

काल्हिये सनिचरा आयल छल। ओ बड्ड पैघ मंतरिया कहैत अछि अपना केँ। जखन अबैत अछि कुर्सी खींचि क' टुनमाक दादीक सिरमा मे बैसि जाइत अछि। ओकर ई छिच्छा देखि दुनू सासु-पुतोहु केँ कंठ सँ पेट धरि तीत-हरकत भ' जाइत छनि। एक टा समय छलै, एकरे बाप अबैत छलै तँ पयरक पनही डोढ़िये पर उतारि दैत छलै। मुदा ई तँ तेहन अविचारी अछि जे कतय-कहाँदन सँ पनही मे गूंह-मूत साटने धड़धड़ाइत ढुकि जाइत अछि। कियो कोना बरजै। आब ओ समय छै, ने ओ नगरी ने ओ ठाम...! जी जाँति क' रह' पड़ै छै लोक केँ। जरल पर नोन छिटैत आब ओ अपना केँ मंतरियो घोषित क' देने अछि। आब तँ आरो किछु बजनाइ दूभर...।

ओकरा देखि टुनमाक दादी कहुना क' पुछलनि, 'की हाल छौ सनिच्चर?'

सनिचरा हुनका माथ लग सटि क' बैसि गेल। कुर्सी ततेक कसि क' खिचलक जे बूढ़ीक माथक खप्पा लगलनि जेना अलगि जेतनि। जहिया सँ ओछाइन धयने छथि तहिया सँ कोनो तरहक हो-हल्ला आ कि कनिक्को आवाज सँ व्यथित भ' उठैत छथि। मुदा सनिचरा केँ ओहि व्यथाक कोनो अनुभव नहि होइ। आ हेबो करै तँ गबदिया देअय। पहिने आबै तँ ठाढ़े रहै। निच्चो मे बैसय मे असौकर्ज होइ, आब तँ कुर्सी पर मलरि केँ बैसबा मे कोनो आपत्ति नहि होइ छैक। गिरहथक सब टा जमीन-जथाक देखरेख करैत-करैत अपने जिमीदार भ' गेल अछि। गाम मे आम-काठी, साग-तीमनक कोनो कमी नहि छनि। कतेको बेर कनियाँ टोकारा दैत छैक, 'यौ सन्निचर। कने गोइठा लेने आयब। धूपो देबा लेल नहि रहैत अछि।'

सनिचराक मुँह पर चाटुकारिताक परत-दर-परत चढ़ि जाइत छैक। एके टा बात घसि जाइत अछि, 'एह! की कही भौजी। गोइठाक पाँज बान्हि रखने छलियै, मुदा तेहन ने काज बजरि गेलै जे ही कही...।' हठाते एक मोन चिंता ओ मुँह पर पोति लैत अछि।

कनियाँ केँ ओकर सब पैतरा बूझल छैक। ओ मजाके मजाक मे व्यंग्यक बाण बेधड़क छोड़ि दैत छथि, 'जाउ-जाउ अहाँ बैमानक बेमाने रहि गेलहुँ।'

टुनमाक दादी केँ ओकर बापक जमाना मोन पड़ैत छैक। आह! हलुक्की कहियो खाली हाथें नहि अबैत छलै। कहियो महींसक पिठार सन दूध तँ कहियो अपन कूटल गमकौआ चूरा...। ई जनिपिट्टा तँ आइधरि सुगन्धो नहि लाग' देलक। मुदा ओ करती की? समाँग रहनि तँ खेत-पथार देखैत छलि। आब बेटा-पुतोहु हुनका देखतनि कि खेत-पथार...। ओ निसाँस छोड़ैत छथि। आब गिरहतनी बटेदारे पर निर्भर छथि।

मुदा काल्हि सनिचरा बड्ड मन्हुआयल छल। टुनमाक दादीक प्रश्नक उत्तर मे ओ कननमुँह भ' गेल। बहुत उदास स्वरें बाजल, 'की कही माँ, हमर बेटा हमरा कतहुक नहि छोड़लक।'

बूढ़ी कने साकांक्ष भेली। गरदनि उचका क' पूछलनि, 'की भेलौ?'

—'ओकरा पर बजरंगबली सवार भ' गेलै माँ।' ई बात ओ ततेक विश्वासक संगे कलात्मक ढंग सँ कहलक जे सुनय बला केँ लगलै जेना सत्ते आँखिक सोझाँ बजरंगबली छड़पि क' ओकरे पर सवार भ' गेल होइ।

साल भरि पहिने ओकर बड़का बेटा कोनो छौंड़ीक चक्कर मे फँसि गेल छलै। की भेलै, की नहि भेलै, छौंड़िया जहर खाक' मरि गेलै। कतेक केसा-केसी चललै। छौंड़ा छओ मास जहलो काटलक। मुदा जहल सँ बहराइते ओकरा पर कखनो बरहम तँ कखनो बजरंगबली सवार भ' जाइत छैक। सनिचरा ओकरा शांत करबाक लेल जेना-तेना ओकर बियाहो करा देलकै। मुदा ओ छोंड़ा कनियाँ दिस ताकबो नहि करय। बजरंगबलीक वेश ध' क' धुनी रमा क' बैसल रहैत छल। सौंसे टोलक लोक ओकरा लग फूल-पान चढ़बैत छल। बूढ़-बच्चा, जवान सब अपन व्यथा ल'क' ओकरा लग पहुँचैत अछि।

सनिचराक बेटाक खिस्सा सुनिते टुनमा मायक कान ठाढ़ भ' गेल छलै। रोग-जर्जर सासु सेहो उठि क' बैसि गेल छली। एहन अजगुत आइधरि नहि देखल आ नहि सुनल। कने संशय आ कने विश्वासक संग दुनू सासु-पुतोहु ओकरा दिस तकलक। सासुक आँखि मे जीवनक तृष्णा उभरि क' बहार होम' लगलनि।

पुतोहु क्षणहि मे सनिचराक सब टा धृष्टता बिसरि गेलि। ओकरा भरि देह मे धर्म आ आस्थाक तरंग उठि गेलै। जिज्ञासा करैत पुछलक, 'अँय यौ सनिचर! कोना बुझलियै जे बजरंगबली बेटा पर सवार भ' गेल?'

—'भौजी!' सनिचरा विस्फारित दृष्टियें तकैत बाजल, 'सौ गज लग्गा पर दनादन छड़पि जाइत अछि।'

—'अँय।'

—'अँय, एहन!' टुनमा माय गंभीर भ' गेलि। ओकर ध्यान एक्के संग अपन कृशकाय बेटा आ जरा-जर्जर सासु पर केन्द्रित भ' गेलै। घर मे बजरंग वाण पढ़ैत-पढ़ैत कंठ सुखा गेलनि मुदा बजरंगबली कनिक्को नहि पघिलला। कोना कैँ अइ बैमनमाक घर अवतरित भ' गेला। ओ चून-चाउर भ' उठलि। सनिचराक धृष्टता पर छगुन्ता सेहो भेलै। केहन कपटी अछि ई? आगाँ मे देखि रहल अछि जे एतेक दिन सँ ओकर गिरहतनी बीमार पड़ल अछि। छुच्छे माँ-माँ करैत रहैत अछि। कहियो भेलै जे अपन बेटा सँ आ कि अपने मथो हाथ द' दै। दुष्ट नहितन...। प्रकट मे सहजताक नाटक करैत बाजलि, 'एक बेर आनियौ ने बेटा कैँ। एतेक दबाइ-दारूक कोनो प्रभाव माँ पर नहि पड़ि रहल अछि। भ' सकैए बजरंगबली कृपा करथि।'

—'जरूर भौजी! काल्हिए अनैत छी। माँ अबस्से नीक हेथिन।' सनिचरा उत्साहित भ' उठल। ओ दुनू ठोर कैँ कसि क' दाबैत मूड़ी नहुँए-नहुँए डोलबैत स्वगत भाषण शुरू क' देलक, 'आब अपन छौंड़ा कैँ आनहि पड़तै भौजी, हमहूँ सोचैत छी।'

टुनमा माय कष्ट सँ बेचैन सासुक पयर रगड़ैत सोचय लागलि, आखिर कियैक नहि सुधार भ' रहलैए माँ कैँ। केहन-केहन रोग तँ नीक भ' जाइत अछि। ई कोन रोग थिक? सासु तँ दैहिक कष्ट भोगिये रहल छथि, संगहि ओहो तँ कम तकलीफ नहि सहन क' रहलि अछि। राति-दिन बरद जकाँ खटय पड़ैत छैक। सासुक संगे जागब, हुनके संग सूतब। मौलाना सँ ताबीजो बनबा क' देल गेलनि। कतेक बातो सुनलक घरबला सँ। चुप्पेचाप बहिकिरनी संगे गेल छलि। डाक्टरक दबाइ तँ भुज्जा भेल अछि।

सनिचरा अपन मुखाकृति गुरु गंभीर बनबैत घोषणा कयलक, 'भौजी, माताराम कैँ कोनो बेमारी नहि छनि। निखालिस नजर-गुजर बला बात छैक। अहाँ आर के मानी वा नहि मानी।'

एतेक विश्वासक संग कहल बात टुनमा मायक मोनक तहे-तह सन्हिया गेलै। ओकरा मनमाफिक कोनो सूत्र पकड़ा गेलै। हुलसि क' कहलक, 'हँ-हँ, सत्ते कहै छी सनिच्चर। माँ कहियो मानबे नहि करैत छलखिन। आइ जँ शुरुहे सँ ई सहचेत रहितथि तँ ई दशा नहि होइतनि।'

टुनमा माय कैँ आइ सासु पर बड्ड रोष भ' रहल छलै। यैह पंडिताइन सबहक जड़ि थिक। रचि-रचि क' माँ एहि बुढ़िया सँ गप करैत छलखिन सब दिन। एखनो

मोन कहाँ भरलनि अछि। ओकर मोनक जमकल रोष औचके प्रकट भ' गेलै। ओ ततेक जोर सँ सासुक तरबा रगड़लक जे चूड़ी सँ तरबा कसि क' घसा गेलै। हुनका मुँह सँ सिसकी बहरा गेलै। टुनमा मायक भक् खुलि गेलै। काल्हुक बात सब मोन पड़ि गेल छलै।

बहरिया ओसरा पर टुनमाक दादी पंडिताइनक गप सुनैत-सुनैत झपकी ल' रहल छलि। मुदा मोन लागि रहल छलनि। बड्ड पुरान बहिनपा रहनि। क्यो किछु कहय, ओ ओकरा सँ कहियो मुँह नहि मोड़लथि। सौंसे टोलक लोक घरबलाक मरिते हुनका डायन घोषित क' देने छलै। मुदा ओ कहियो कान-बात नहि दैत छलि। एखन आँखि पसारबाक यत्न करैत ओकर सब बात बुझबाक प्रयत्न क' रहल छलि, मुदा पंडिताइन कैँ एहि सँ कोनो फरक नहि पड़ि रहल छलनि। अपने मे हेरायल पंडिताइन बाजलि, 'गै बहिन, कतेक दिन सँ सोचैत छलियौ तोरा सँ भेंट करबाक लेल, मुदा देह नै चलैत छौ।'

टुनमाक दादी अपन बहिनपा दिस टुक-टुक ताकय लागलि। पड़ोसनी प्रियाक माय सेहो आबिक' बैसि गेल छलि। पंडिताइनक तेज नजरिक जनतब ओकरा नहि छलै। नवे-नव आयल छलि एहि टोल मे। आँखि मे डबकल नोर पोछैत पंडिताइन ओकरा दिस तकैत बाजलि, 'यै कनियाँ, जे क्यो माय-बापक सेवा करैत अछि से भारी तीरथ करैत अछि, एहि सँ बढ़ि क' कोनो धरम नहि।'

—'हँ काकी, ठीके कहै छथिन।' टुनमाक दादी दिस तकैत ओ आह्लाद सँ बाजलि, 'हिनकर पुतोहु तँ साक्षाते लक्ष्मी छनि। नीक कयल छनि तें बेटा-पुतोहु, पोता-पोती सब एतेक सेवा करैत छनि।'

पंडिताइनक चेहरा विवर्ण भ' उठलनि। दुखक पातर सन रेखा पूरा चेहरा पर छापि गेल। तृष्णा भरल आँखियें ओ प्रियाक माय कैँ देखलक। मोनक सब टा रिक्तता ओहि दृष्टि मे समाहित छलनि। कोनो सिद्ध पुरुष जकाँ सधल स्वर मे बाजलि, 'सब परमात्माक घर मे राखल रहैत छैक बाउ। एहि हाथ दे, ओहि हाथ ले। हिनकर पुतोहुक सब कर्मक फल राखल छनि। नीक करै छथि, नीक पौतीह। एक टा हमरा नहि देखैत छह, केहन अभागलि छी...।'

प्रियाक माय कैँ सहजहि कोनो बान्हल पोटरी भेटि गेलनि। ओ झटकि क' खोललनि, 'से की काकी, एना कियैक बजलहुँ?'

पंडिताइन ओकर प्रश्न कैँ कतियाबैत अपन तरहथ उनटाबैत ओकरा दिस देखलक, 'देखियौ, हमरा हाथ पर ओम लिखल अछि।' ओ ततेक विश्वास आ दृढ़ता सँ ई बात बाजल जे अशक्त टुनमा के दादी सेहो ओम्हर ताकय लगली। पंडिताइनक उनटा हाथ पर एक नस दोसरा नस पर चढ़ैत ओमक आकृति बनबैत छल। ओहिनो

मोटगर नस सबहक विभिन्न आकृति कखनो काल हाथ पर बनि जाइत अछि। मुदा ओकरा भ्रम छलै जे साक्षात शिव ओकर हाथ पर अवतरित भ' गेल छथि। ओ अपन आँखि झुकौने भक्तिभाव सँ अपनहि हाथ केँ निहारैत निसाँस छोड़ैत बाजलि, 'महादेव हमरा आब ल' जयता। हुनके टा हमर सत्य बूझल छनि गै बेटी।'

करुणा आ संताप मिश्रित हुनक ई वाक्य प्रियाक माय केँ सेहो गौर सँ हुनक हाथ दिस देखबा लेल प्रेरित क' देलकै।

पंडिताइन केँ बैसबा मे दिक्कत भ' रहल छलनि। ठेहुनक दर्द बेदम क' देने रहनि। कहुना क' पैर मोड़लनि आ फेर सीधा कयलनि। मुँह मे दाँत एक्को टा नहि रहनि। बजैत काल अदबदा रहल छलि मुदा तैयो एको मिनट चुप नहि बैसल छलि।

घरक भीतर सँ टुनमा मायक उच्च स्वर बहरेलै, 'रै बौआ, खा क' थारी ओहिना छोड़ि देलही। ओ बचलाहा भात के खयतौ, तोहर सार...।'

बौआ एहि काने सुनलक आ ओहि काने निकालैत बहरा गेल। बहराइत-बहराइत छोटका भाइ केँ एक टुनका ध' देलक। आब की छलै, ओहो चप्पल उठौलक आ बड़का केँ खेहारैत बहरा गेल।

टुनमाक दादी खिन्न आँखियें पोता सब केँ देखलनि। दुनू स्त्री सेहो तकलक। प्रियाक मायक आँखि सिकुड़ि गेलै। ओ मोने-मोन सोचलक, पैघो घरक यैह छिच्छा! हमरा आर के धीयापूता कुकुरौंझ करैत तँ लोक कहै छै, मुरुख-गमार छै। ई सब तँ पढ़ल-लिखल घरक धीयापुता भ'क' कोना करैत छै? मुदा प्रकट मे ओ किछु नहि बाजलि। पंडिताइन जेना ओकरा भीतर पैसि गेल छलि। ओ दुनू हाथें छोटका छौंड़ा केँ बरजलक, 'एना नै बाउ। भला लोक एना नहि लड़ैए।'

छौंड़ा मुँह सुटका क' भीतर भागि गेल। पंडिताइन एहि प्रकरण केँ आत्मसात करैत आश्वस्त होइत बजली, 'की कहबौ कनियाँ। सब घरक यैह खिस्सा अछि। हमर पोता सब तँ जवान भ' गेल अछि तैयो एहिना करैए। बड़का तँ बड़ बतझिक्कू। हमर एको टा बात त'र नहि जाइ दैत अछि। नहि कतहु बजैत छी, कोन आधापानि सँ जीबै छी। एकमात्र ईश्वर जनैत छथि।'

सोझाँ बैसल प्रियाक माय केँ पंडिताइनक मामिला किछु गंभीर बुझा पड़लै। ई दुनू भाइ तँ धीयापूता रहै एहिना खन झगड़ा, खन मेल होइत छलै एकरा सबहक। मुदा पंडिताइनक लगैए दोसर बात थिक। ओकर घरक परदा सटाक सँ खींचि लेबाक लेल प्रियाक मायक आँगुर सब-सब करय लगलै। ओ तत्काले ओकरा फाटल मे टाँग घुसेलक। संवेदनाक भाव मुँह पर आनबाक प्रयत्न करैत दहिना हाथ गाल पर रखैत पूछि बैसलि, 'गै, अकड़हर! हिनको संग लड़ै छनि पोता?'

पंडिताइनक मुँह पर धुआँ पसरि गेलनि, 'के लड़ैए, के लथाड़ैए, की कहब बाउ, नहि पुछू...।'

ओकर पीड़ा-जर्जर मुँह देखि प्रियाक माय केँ आब कनिक्को संदेह नहि बाँचल छलै जे पंडिताइन संग घरक लोक नीक व्यवहार नहि करैत अछि। लोकक दुखक परत उघाड़बा मे ओहिनो किछु गोटे केँ नीक लगैत छैक। ओ आब पंडिताइनक पेटक सभ टा गप इनारक पानि जकाँ घीच' चाहैत छलि। लग सहटि क' उत्कंठित स्वरें बाजलि, 'कहू, हिनका पुतोहु केँ एतेक विचार नहि जे बाल-बच्चा केँ बाजब-भूकब सिखाबथि।'

सहानुभूतिक संबल पाबि पंडिताइन भक् द' खुलि गेली। मिथ्या अपनैती आ प्रपंचक स्वाँग ओ नहि बूझि सकलि। मूड़ी झुलबैत स्वीकार केलक, 'नै बाउ, कहियो नै।' मन कने भरमि गेलै। भेलै, घरक सब टा खिस्सा खोलि क' राखि देअय, मुदा फेर सहमि गेलि।

प्रियाक माये नेहोरा करैत बाजलि, 'किछु कहब' तँ कतहु बजिहक नै बेटा। अन्हेर भ' जेतै।'

—'नै-नै, एहनो भेलैए काकी।'

—'हँ, जीवन पहाड़ भ' गेल अछि। रंग-बिरंगक कलंक घरे सँ बहरायल अछि। बड्ड कष्ट होइत अछि।'

व्हीलचेयर पर टुनमाक दादीक झपकी औचके बंद भ' गेलै। आँखि पसारि क' चौंकैत पुछलनि, 'ककरा, सतीक माय केँ।'

पंडिताइनक बड़की बेटीक नाम सती छलै। ओ तँ बिआहि क' दूर चलि गेलै मुदा ओकर नाम मायक संग तेना जुड़ल रहल कि लागै ओ एखनो अँगना मे घुरिया रहल होइ। दुखक एकान्तिक क्षण मे बेटी बड्ड मोन पड़ै माय केँ। सती जनमल छलै तँ ओकर सासु कहने रहै, 'एकरा नोन चटाक' मारि दही।' एहि शब्दक समृति जखन पंडिताइन केँ हिलोर मारैत छैक, तखन ओकर मोन तीत भ' जाइत छैक। एखन जँ ओ बुढ़िया जीबैत रहितै तँ गरदनि टीपि दितै ओकर...। गपे करैत-करैत ओकर चेहरा तनि गेलै। आइ वैह बेटी अछि जकरा सँ संतानक सुख भेटलै ओकरा। बाप बीमार पड़लै तँ अपना लग उठा पुठा क' ल' गेल। ओकरे लग प्राण त्यागलनि पंडितजी।

पंडित जी पूजा-पाठ मे नीक कमा लैत छला। मुदा पंडिताइन केँ अनकर हाय लागि गेलनि। सबकिछु अछैतो कोनो सुख नहि रहि गेलनि। छोट सनक घटना आ कि संयोग हुनका मुँह पर कारिख पोति देलकनि।

बाड़ी-झाड़ीक बड्ड सौखीन छलि ओ। एक बेर पड़ोसियाक बकरी झुंडे मे आबि साग-पात सुड्डाह क' देलकै। तामसे भेर भेल पंडिताइन सटकी लेने चिचिअबैत

दौड़लि, 'गै हड़ाशंखिनी सब, जकर बकरी छियौ, सुनि ले कल्हुका भोरुकवा नहि दैखतौ ई...।'

आ सत्ते, किछुए दिनक बाद पड़ोसियाक किछु बकरीक राम नाम सत्त भ' गेलै। ओहि दिनक बाद सँ ओकर सब प्रतिष्ठा चलि गेल। ओ डायन मे नामी भ' गेलि। टोल-पड़ोसनक लोक हुनका संदिग्ध दृष्टियें देखय। मूर्खता आ अंधविश्वासक बसात तेहन बहलै जे मौगी-मेहरि तँ ओकरा साक्षाते डायन घोषित क' देलकै।

दोसरक कोन बात, अपने घर मे ओ डायन भ' गेलि। हुनक आत्मा मे बिड़रो उठि जाइत अछि। अन्हड़-बिहाड़ि बह' लगैत अछि। ओ स्मृतिक जर्जर पन्ना सब कैं जोड़ि-जाड़ि क' जँ क्यो सुन' बला भेटै छै तँ सुनबैत रहैत छथि।

पंडिताइन कैं औचके पूछल गेल प्रश्नक उत्तर देबाक सुधि भेलै। ओ आर्त्त दृष्टियें बहिनपा दिस तकलनि। अपने प्रश्नक उत्तर सुनबाक लेल वृद्धाक चेतना जेना चौचंक भ' उठल छलै। हुनका किछु-किछु आभास भ' रहल छलै मुदा अपन आभासक पुष्टि ओ पंडिताइने सँ कराब' चाहैत छलि।

ओ फेर अपन गपक शुरुआती छोर धेलनि, 'हँ गै बहिन! हमरा अपनो बेटा-पुतोहु डायने कहैत अछि। जखन अपने जनमल अपन नहि तँ आनक कोन बात। कोखिक बेटा जखन...।'

कोखिक बेटा, वृद्धा एहि शब्द सँ जेना स्पन्दित भ' उठलि। पूरा बात नीक जकाँ बुझबाक प्रयास मे ओ गरदनि घुमाबक चेष्टा करय लगली। प्रश्न कैं दोहरेबाक लाख जुगत कयलो पर नहि दोहरा सकली।

पंडिताइन हुनक अवस्थाक लाचारी बूझि गेल छलि। परत दर परत सायासे ओकरा मुँह सँ बहराब' लागल, 'बेटा टोकबो नै करैए...।' झुर्री भरल चेहरा पर नोर डबडब दुनू आँखि लटकि गेल रहनि, 'पहिने तँ कोम्हरो सँ अबैत छल तँ गरदनि मे लटकि जाइत छल, मुदा आब...कुहरैत रहैत छी, पुछबो नहि करैए।'

प्रियाक माय जेना कोनो अज्ञात भय सँ सिहरि गेलि। एना कोना भ' जाइ छै, एना कोना मनुक्ख बदलि जाइ छै।

परदा उठा क' भीतर सँ कनियाँ हुलकी मारलक। अदहा-छिदहा गप ओकर कान ग्रहण क' लेने छल। चोट्टे घुमैत चोट केलक, 'बिनु कारणें टिटही थोड़े बजै छै।' ओहो हिनका मादे ततेक सुनि लेने छथि जे आब ओकर कोनो सफाइ पर, कान नहि देब' चाहैत अछि। एतेक लोक जे कहैत छैक से की सब फुसिये बजैत छैक। कहाँदन अपन घरेबला कैं खा क' डायन बनलि अछि। एक बेर पोता तेहन बीमार पड़लै जे बाँचब मोसकिल भ' गेलै। ओ तँ बच्चाक माय राइ-मेरचाइ जरौलक तँ पता चललै जे नजरिक करामात छलै। बाबा पीठक सोझाँ हिनके नाम उचरलै। टुनमा

माय भनभनाइत घर ढुकि गेलि। एखनधरि टसकल नहि—ओ सोचलक। मोन कने सशंकित सेहो छलै। सासुक देह मे देह रगड़ने कोना बैसल अछि।

मुदा पंडिताइन आइ अपन रुग्ण बहिनपा लग मोनक सब टा संताप उझीलि देब' चाहैत छलि। अपन कुर्सी हुनका दिस सटबैत नहुँए-नहुँए बाजलि, 'गै बहिना, खेनाइ जे दै छौ ने पुतहुआ, थारी धरि नै उठबैत छौ। अपने उठबै छी। अपना कोठरी मे अपने बाढ़नि दैत छी। बारल छियौ बहिन अपने घर मे...।' आँचरक खूट सँ नाक पोछैत पंडिताइन अपन स्थिति पर अपनहि दयार्द्र भ' उठलि। ओकर बहिनपा बकर-बकर मुँह ताकि रहल छलि। हुनका मोन मे कतेको रास संशय हिलकोरय लागल रहनि। संपूर्ण चेतना जेना घुरि आयल रहै। पंडिताइनक गपशपक मध्य नुकायल ओकर शक्ति कैं ओ चुप्पे तौलि रहल छलि।

पंडिताइन फेर फुसकली। चेहरा पर पीड़ाक कारी छाँह तिरोहित भ' रहल छलै। बहिनपा कान मे मुँह सटबैत बजली, 'एक टा गप कह बहिन, हम तोरा डायन लगैत छियहु ?'

ई यक्ष प्रश्न सुनितहि वृद्धाक दुनू आँखिक पल पसरि गेलनि। मोन खटकि गेलनि। एतेक दिन ओ लोकक कहब-सुनब पर विश्वास नहि करैत छलि। मुदा जहिया सँ बीमार पड़लीह, मोन बड्ड कमजोर पड़ि गेल छनि। हुनका अपन पुतोहुक गप मोन पड़य लगलनि। ओ बेर-बेर कहथि, 'देखलखिन। बड्ड दोस्तियारी भजबै छथिन पंडिताइन सँ, हिनको छोड़लकनि...।'

वृद्धाक स्मृति जेना स्वच्छ भ' गेलनि। पंडिताइनक संग बिताओल समय, हुनक सुख-दुख मे साझेदारी मोन पड़य लगलनि, ओ कोहुना कैं हाथ बढ़बैत शिथिल आँगुर सँ हुनक आँचरक खूट पकड़ैत विह्वल स्वर मे कहलनि, 'नै गै बहिन! एना होइतै तँ तों सब सँ पहिने अपना पर कलंक लगौनिहारे कैं नहि खा जइतें...।'

नियुक्ति पत्र

जिनगीक नाटकक पटाक्षेप कखनो थपड़ीक गड़गड़ाहटिक संग नहि होइछ। दर्शकविहीन उदास रंगमंच पर अपन संवाद बजैत-बजैत थाकि जाइत अछि कलाकार आ कखन परदा खसि पड़ैत छैक, से पता धरि नहि चलैत छैक।

ओहि दिन अकस्मात हवाक झोंकाक संग एक टा खबरि खसैत-पड़ैत गली-मोहल्ला मे पसरि गेलै। गाम मे ओहिनो बात जल्दीए पसरि जाइत अछि। कोनो ने कोनो तरहें सभ एक दोसरा सँ जुड़ल रहैत अछि। मन आ धन सँ नहियो, देह सँ ठाढ़ धरि अबस्से रहैत अछि।

विस्तृत खरिहान मे पुआरक ढेरी लग रौद सेकैत काली बाबूक चौबगली दू-चारि गोटे मुँह लटकौने बैसल छल जेना हुनका ओत' केओ मरि गेल होइ! काली बाबूक पुतोहु हुनका सभक विचार आ इच्छा पर चोट करैत भोरे-भोर शान सँ एसगरे अस्पताल चलि गेल छलि। लोक सभ हरान-फिरीशान—कहू तँ, एहन दिदगरि मौगी!

काली बाबू बौक भेल रहथि। हुनक चेहराक तटस्थता लोक सभ केँ चकित कयने छल। ओ सभ मनहि मन अनेक अटकर लगा रहल छल। भ' सकैत अछि काली बाबू दुख-सुख सँ अलग भ' गेल होथि। आँखि उठा घर सँ निकलैत पुतोहु दिस देखबाक साधंश नहि भेलनि। लोक सभ अपन-अपन सोच-विचारक परिधि मे अटकर लगबैत, तरह-तरहक टीका-टिप्पणी करैत विदा भ' जाइत छल।

काली बाबूक पुतोहु रूपा ओना तँ बहुत स्वस्थ छलि। घरक सभ टा काज अपन माथ पर उठेनहि रहैत छलि। पढ़ल-लिखलि आ मेहनती। जहिया सँ आयल छलि, सासुक पएर धरती पर नहि पड़ैत छलनि। पुतोहुक प्रशंसा मे दिन-राति बितैत रहनि। एतय धरि जे अपन मास्टरी सँ भेटल दरमाहा सेहो पुतोहुएक हाथ मे सुनझा दैत छलि। एतेक प्रेम तँ अपन नैहरो मे रूपा केँ नहि भेटल रहै। ननदि सभ हाथे पर उठौने रहैत छलि। एकसरि भाउज हेबाक बहुत फायदा रहै। बड्ड सुखी छल ई परिवार। दिन हँसी-खुशी आ मसखरी मे बितैत छल, राति शांत संगीतक स्वर-लहरी पर थिरकैत।

रूपाक छोट सन दुनिया प्रसन्नताक तरंग मे डूबैत-उतरैत रहल आ दू-दू टा बेटा ओकर घर-आँगन मे खेलय लगलै। सुन्नर-मुँहगर बच्चाक किलक-पुलक सौंसे घर केँ बहुरंगी बना देलकै। एहि मध्यवर्गीय परिवार मे धन लेल हाय-बाप नहि छल। आत्मसम्मान आ परितोषक एक टा लक्ष्मण रेखा खिचायल छल, जाहि मे स्वेच्छया ओ सभ रहैत छल।

मुदा कखनो-कखनो समय ककरो सुख-चैन बरदाश्त नहि क' पबैत छैक बिनु कारणें करौट फेरय लगैत छैक। समयक निःशब्द लाठीक बहुत कड़गर प्रहार भेलैक आ अकस्मात ओकर जीवनक सभ टा सौख-सेहन्ता आ प्रसन्नता तासक पात सन हवा मे उड़ि गेलै। बहुत दिन सँ बीमार ओकर पति अन्ततः एकहि क्षण मे हारि गेल। सभ किछु खतम।

अपन छोट-छोट बच्चा केँ ओ वएह कहि बौंसैत रहल जे ओकर पापा अकासक तारा बनि गेल अछि। जखन ओ सभ खूब पढ़ि-लिखि लेत, तखन ओकर पापा आबि जेतैक।

प्रत्येक साँझ जखन चारू भर नीरव शांति पसरल रहय, घरक लोक जतय-ततय रहै, सुन्न आँगन मे दू बर्खक बच्चा अकास दिस तकैत ठाढ़ भ' जाइ। ओकर एहि तरहें अकास दिस तकैत देखि पाँच बर्खक जेठका बेटा ओकरा लग पहुँचि जाइ। ओ बहुत तत्परता सँ पूछय, 'की देखै छी छोटू?'

'पापा केँ!'

जेठका चारि डेग चलि गरदनि टेढ़ करैत ताओ सँ बजे, 'तूँ जो, तोरा नहि देखयथुन पापा, हम तकैत छियनि।' प्रतीक्षा मे एक नहि, अनेक तारा देखाइ। सभ सँ पैघ तारा, जे खूब चमकैत होइ, नहि देखाइत रहै। आँखि दुखा जाइ, गरदनि ऐंचि जाइ।

रूपा किछु काल भनसाघर सँ ओकरा सभ केँ देखैत रहै, फेर झपटिक' दुनू केँ पकड़ि भीतर ल' अनैत छलि। ओकरा सभ केँ बुझयबाक लेल शब्द ओकरा लग नहि रहै किएक तँ बच्चा सभ केँ बुझल रहै जे मरि गेला पर सभ क्यो अकास मे चलि जाइत अछि आ तारा बनि जाइत अछि। पैघ आ चमकैत तारा। ओ तखने घुरैत अछि, जखन बच्चा पढ़ि-लिखिक' पैघ आदमी बनि जाइत छैक। आ बच्चा सभ प्रतीक्षाक सीढ़ी पर बैसले रहि गेल।

वैधव्यक प्रारंभिक काल वेदनाक भंडार होइत छैक। धीरे-धीरे ई सत्य स्वीकृतिक परिधि मे पैसि जाइत छैक। रूपा सेहो एही सत्य केँ अपन विडंबना बूझि अंग लगा लेलक। परिवार मे अनेक लोक रहै। सासु-ससुर, देओर, ननदि-ननदोसि। सभक अपन-अपन संवेदना छलै, रूपाक प्रसंग अलग विमर्श छलै, चिन्ता छलै। रूपाक

व्यथा सँ सभ आहत भेल, मुदा ओ अपना कें सम्हारि लेलक आ बहुत दिन धरि परिवारक लोक कें व्यथित नहि कयलक।

ओकर सभ नखरा कें माथ पर उठबय वाली सासु सेहो मुँह मोड़ि लेलक। आब हुनका पुतोहुक भाग्य मे खोट नजरि आबय लगलै। अपना हृदय मे पुत्र-शोक सँ उत्पन्न हाहाकार कें शात करबाक लेल पुतोहु कें डाँटि दैत छलि। देह मे लहरि फेकि दैक मुदा फेर शीतल भ' जाइत छलि। स्त्री छलि, स्त्रीक दर्द बुझैत छलि।

बिरजूक क्रिया-कर्म सम्पन्नो नहि भेल रहै। ओकर माय आयल छलि। भाइयो संग मे रहै। बेटीक मर्मान्तक पीड़ा माय कें तोड़िक' राखि देने रहै। भाइ तँ पाथरक मूर्त्ति बनल बैसले रहि गेलै। कोठरीक भीतर सँ रूपा बहराइत नहि छलि। आँगन मे जक लागल लोकक बीच अपन एहि दशाक प्रदर्शन संभव नहि रहै। नोर थम्हैत नहि छलै, माय संग मे बैसल अपन नोरक संग ओकरा बोल-भरोस द' रहल छलि।

मुदा कातक कोठरी सँ अनेक अनर्गल प्रलाप कान मे जेना आगि ढारि रहल छल। ओकरा सासुक चौबगली बैसल जनीजाति सासुक नोर पोछबाक बदला रूपा पर व्यंग्य-वाण छोड़ि रहल छलि। सधल स्वर अभरैत छलै—'अँय यै, पुतोहु कोठरी मे बन्न किएक रहैए?'

—'ओकरे टा दुख छै! जकर बेटा गेलै, तकर किछु नहि?' दोसर क्यो टीपय।

—'बच्चा सभक तँ कोनो विचारे नहि छैक, सोगायल रहबाक नाटक करैए। अपना मायक आँचर मे नुकायल अछि। भगवान करथि ओकर मायोक एहने दशा भ' जाइ।'

ई कर्कश स्वर रूपा कें आहत क' देलकै। ओ छटपटा उठलि। एहि तरहें सुना क' कहल गेल बिक्ख सन बोल ओकर ननदिक रहै। ओकरा लगलै जेना धरती फाटि जेतैक। ओ लाजें गड़ल धरतीक तर चलि जायत। बड़की दीदी कोना एहन भाखा बजली! कतेक ध्यान रखैत छलि हुनकर। संबंधक सभ टा मधुरता की बिरजू अपने संग ल' क' विदा भ' गेल।

ओ किछु नहि सोचि सकलि। कान मूनि फूटि-फूटिक' कानय लागलि। कहू ओकरा संग-संग माइयो कें शापित क' देलनि।

माय कें ओ आपस पठा देने रहै। सासु सँ आँखि मिलयबाक हिम्मति नहि होइ। एक टा विभाजक रेखा छलै जे क्रमशः बढ़ैत जा रहल छलै। एक्कहि धुरीक चारूकात दुनू घूमि रहल छलि मुदा दुनू एक-दोसरा सँ बहुत दूर छलि। रूपा घर सँ बहरायब छोड़ि देलक। बाहर बरंडो धरि कहियो-काल अबैत छलि। अपने चेहरा ओकरा डेराओन लगैक।

गाम मे किछु ने किछु बरमहल होइत रहैत छलै। कखनो बिआह, कखनो मूड़न। घिसिऔट कटैत समय अपन गति ध' लेने रहै। रूपाक परिवारो समयक तगादा स्वीकारि संग-संग चलब सीखि लेने छल।

रूपा कोनो आयोजन मे सम्मिलित नहि होइत छलि। लोक कतबो अनुरोध करय, ओ कतहु नहि जाइत छलि। कोनो ने कोनो बहाना बना लैत छलि। कोनो शुभ आ मांगलिक उत्सव मे विधवाक उपस्थिति सँ लोक बचबाक प्रयास करिते छै। भने अपन एहि क्षुद्र मनोभाव कें प्रकट नहि करय क्यो, मुदा स्थितिक भयावहता सभकिछु प्रकट क' दैत रहै। घर सँ बाहरक परिवेश ओकरा लेल अर्थहीन भ' गेल रहै। घरक भीतर मोन औनाइत रहै, मुदा निकलैक रस्ता नहि भेटै। एहने परिस्थिति मे बिरजूक स्मृति छलै जे दिन-राति कटि जाइ कोहुना। कहियो-कहियो रातुक निन्न उड़ि जाइ। भविष्यक अन्हार आ भयावह जंगल मे अलोपित भेल जा रहल अपन जीवनक एकपेरियाक विषय मे सोचि ओ सिहरि जाइत छलि। सघन अन्हार सँ स्वयं कें इजोत मे घीचि लेबाक तड़प कखनो-कखनो ओकरा आलोड़ित क' देअय।

दू गोट छोट बच्चाक सोनहुला भविष्यक झलफल सपना मोन मे पसरि जाइ। सोचै छलि, ओ एहि योग्य भ' जइतय।

एक दिन डरिते-डरिते सासु कें अपन मोनक बात कहि देलक। ओहि दिन सासु कें रूपाक आँखि मे बिरजूक छवि देखाइ पड़लै। ओ पहिल बेर रूपा कें भरि पाँज पकड़ि खूब कानलि। मनक सभ टा कटुता धोआ गेलै। रूपा आब रूपा नहि, बिरजू भ' उठल छल।

रूपा कहने छलि, 'माय, हम कतहु काज करय चाहैत छी, अहाँ एकसरे कतेक करबै।' एहि छोट शब्द मे जिम्मेदारीक कतेक पैघ भार छल, कतेक हिम्मति छल की-की ने छल जे ओकर सासु कें माय बना देलकै।

एतेक दिनक बाद रूपाक सासु देखलक जे दिन भरि रूपा व्यस्त रहैत छलि। ननदिक बच्चा, भैंसुरक बच्चा, बूढ़-पुरान सभक लेल दौड़ैत-भगैत अपन बच्चाक अवहेलना करैत मुदा आन-आन लेल अपस्याँत रूपा। एहि भयानक छवि सँ काँपि गेलि सासु, ओकरा प्रति सभक सहानुभूति रहै। मुदा तकर एक निश्चित मात्रा रहै। ओकरा मोनक सघन कुहेस मे ताकबाक ने तँ ककरो जरूरति रहै आ ने पलखति।

रूपा सासुक दिमागक बत्ती जरा देने रहै। आब ओ कतहु रूपा कें नोकरी लगयबाक सपना देखय लागलि। सभ हित-अपेक्षित परिचित लग अपन मोनक बात रखैत छलि। एहिना परिचय परिधि मे छल राजू कम्पाउण्डर। पुरान परिचित छलै, बिरजूक आत्मीय। बिरजूक विषय मे सुनि सन्न रहि गेल छल, बड्ड दुखी भेल छलै ओ।

माथ झुकौने, भरल-भरल आँखि झुकौने कँपैत स्वर मे बाजल छल, 'काकी,

हमरा सँ जे बनि पड़त, से करबै।' फेर खूब कानल छल। आ राजू प्रत्येक डेग पर सहयोग करबाक वचन देने छल। ओ निरन्तर घर आबय लागल। ओ बहुत हँसोड़ छल, बिरजू-ए सन। बच्चो सभ ओकरा संग धीरे-धीरे रीति गेलै।

घरक वातावरणक उमस क्रमहि छँटैत गेल। बिरजूक गेलाक बाद जे एकाकीपन ओ धोन्हि संपूर्ण घर केँ गछारने छल ओ घटैत गेल। बच्चा सभक मुस्की घुरि रहल छल। पहिने तँ ओ सभ राजू लग नहि जाइत छल मुदा क्रमश: उल्लसित आ निष्कलुष व्यवहार ओकरा सभ केँ राजू लग खैंचि अनलक।

राजू काकी केँ सुझाव देलक जे रूपा केँ अस्पताल मे नर्सक नोकरी पर लगाओल जा सकैत अछि। कोनो काज मे लागल रहती तँ मोन बहटारल रहतनि। दोसर कोनो गप सोचबाक अवसरि नहि हेतनि। धीरे-धीरे सभकिछु ठीक भ' जेतै, बच्चो सभक भविष्य सुधरि जेतैक।

आन्हर चाहय दू टा आँखि, काकी तँ इएह चाहैत छलि। रूपा जखन सुनलक तँ ओकर हृदय जोर-जोर सँ धड़कय लागल। साँस केँ जेना हवा भेटि गेल हो। जीवनक तराजूक एक टा भाग दुख सँ बेसीए झुकि गेल छलै। दोसर भाग पर एहि बहन्ने सुखक बोझ आबय भरिसक। अपना पएर पर ठाढ़ हेबाक क्षमता आबि जाय तँ जीवन थोड़ेक सहज हेतैक। नहि तँ मात्र मोटरी बनिक' जीबाक की अर्थ?

मुदा साधारणो नोकरी कठिन रहै, सेहो बिना कोनो ट्रेनिंगक। राजू बहुत प्रयास कयलक मुदा सबठाम पाइक जरूरति रहै। बिना घूसक कोनो काज नहि। पचास हजारक व्यवस्था साधारण गप नहि छल। जे जमापूजी रहै, बिरजूक बीमारी मे खतम भ' गेल रहै। रूपाक सासु मोसकिल मे छलि। नजरि खेत-पथार पर जाक' अटकि गेलै, वएह टा एक आसरा रहै। किछु खेत बेचिक' टाकाक व्यवस्था कएल जा सकैत छलै।

मुदा रूपाक ससुर एहि लेल तैयारे नहि। खेत बेचब हुनका अपन मर्यादाक विरुद्ध लगलनि। अपन पत्नीक एहन नीच सोचक प्रति ओ भीतरे-भीतर गुम्हरि उठला। अपन बुत्ता पर बड़ भरोस रहनि हुनका। अपन बीति रहल वयसक कोनो चिह्न ओ प्रकट नहि होब' दैत छला।

संयोग सँ दुपहर मे दरबज्जा पर बैसल रहथि, खरिहान दिस तकैत। तखने हुनक छोट भाइ लग आयल। नमहर-चौड़गर, मोस्टंड, घनगर मोंछ। भरल-पुरल देह। हाथ पर तमाकू रगड़ैत एम्हर-ओम्हर देखैत रहल। ओकर आँखि किछु ताकि रहल छल। ओ बेर-बेर दरबज्जा दिस तकैत छल। भाइ सँ बिनु किछु पुछने चुनाओल तमाकू बढ़ौलक आ बाजल, 'भौजी कतय छथि भैया?' स्वर एतेक तीव्र छलै जे भैयाक उत्तर सँ पहिने परदाक पाछाँ सँ रूपा हुलकी देलक। छोटका ससुर सँ ओकर

नजरि मिललै। दाँते तर आँगुर दबौने ओ घर दिस भागलि।

एम्हर छोटका ससुर केँ ठक-बक लागल। विवाहक बाद आइये देखने छल बिरजूक पत्नी केँ। एतेक सुन्नरि आ ताहि पर वैधव्यक कोनो चेन्ह नहि। भरि हाथ चूड़ी आ छापी साड़ी। ओकरा जेना साँप सुंघि गेलै। गामक विधवा स्त्रीगण सभ एक-एक क' आँखिक सोझाँ घुमि गेलै। सुन्न हाथ, उज्जर साड़ी आ उजड़ल-उजड़ल चेहरा, आँखि मे रेगिस्तान सन अटूट उदासी। आ ई कनियाँ, हे भगवान! ओकर ठोर बुदबुदयलै।

एकहि क्षण मे ओ पुतोहुक सभ टा परत केँ खोलि क' पढ़ि लेलक। भीतर धरि ओकरा पीड़ाक कोनो सूत्र नहि पकड़यलैक।

ओकरा माथ पर पसेना भरि अयलै। पतिक मृत्युक कोनो दुख एकरा नहि छैक। जकरा चलि गेला सँ भाइक डाँड़ टूटि गेलै, जे सभक प्रिय छल, जे सपना अबैत अछि तँ राति बितौने नहि बितैत अछि।

—'कोना छी छोटन?' काली बाबू टोकलक।

ओकर तंद्रा भंग भेलै, कनेक सकपकायल। अपन भरल मन:स्थिति सँ भैया केँ कोना परिचित कराओत। अपन विकृत सोच केँ उचित आ अनुचित ठहरयबाक स्थिति मे ओ स्वयं नहि छल। जे हो स्वयं केँ सहज करबाक प्रयास करैत कहलक, 'भैया, बच्चा सभ कतय अछि?'

—'आँगन मे हैत।' ओम्हरो सँ स्वर बोझिल रहै।

मोन होइत रहै जे पत्नीक योजनाक खुलासा भाइ लग क' देअय, मुदा गुम्मे रहल। मोन मे विचारक आलोड़न होइत रहै। पत्नी जिद्द पर उतरि जेती तँ मानतीह नहि। ओकरा कोनो हालत मे टाका चाही। ओहो कथी लेल तँ...।

छोटका भाइ बुझि गेल। बिरजूक गेलाक बाद कतेक हहरि गेला भैया । ओ सोचलक। हुनक पीड़ा कम नहि कयल जा सकैछ। मुदा सान्त्वनाक थोड़ेक बोल-भरोस तँ देले जा सकैए। भैयाक आलोड़न सँ अनभिज्ञ ओ सान्त्वनाक गप करय लागल। अपन गप केँ बच्चा सभ दिस मोड़ैत कहय लागल- 'भैया, बेसी नहि सोचू अहाँ, सोचि-सोचि क' बेमार पड़ि जायब।'

—'हूँ।'

—'भगवान अहाँ लग बिरजूक प्रतिरूप पठा देलनि अछि। ओकरे नीक जकाँ पढ़ाउ-लिखाउ, ओ अहाँक बिरजूए थिक।'

काली बाबू केँ बुझयलै जेना तेजगर नह सँ सूखैत घा केँ खोंटि देने हो। ओ अपन पत्नी केँ चिकरि क' बजौलनि, 'आभा, देखू के आयल अछि, चाह-ताह आनू।'

परदाक अओढ सँ पुतहु दुनू भायक गप सुनि रहल छलि। ओना तँ मोन

बहटारल रहैत छैक मुदा जखन-जखन बिरजूक चर्चा होइत छैक, ओकरा भीतर किछु टूटय लगैत छैक। तखन अपना केँ सम्हारब मोसकिल भ' जाइत छैक।

घरक बीचो-बीच देबाल पर पैघ सन अयना टाँगल छै जाहि मे ओकर चेहरा झक सँ देखार दैत छैक। अपन सासु केँ बजाब' भीतर घुमल तँ अयना मे देखयलैक। ओकर दृष्टि क्षण भरि लेल अयना मे अटकल रहलै। देखिते रहि जाइत अछि सुन्न सपाट सीउँथ आ काजरविहीन आँखि। भयक एक सर्द लहरि देह मे पसरि जाइत छैक। अपने चेहरा कोना डायन जकाँ परिवर्तित होम' लगैत छैक! भयावह आ डेराओन। जखन कखनो ओकर ननकिरबा कोरा मे रहैत छैक तँ ओ काँपि उठैत अछि जे ओकर रूप देखि ओ चेहा तँ नहि उठत। मन मे अन्हड़ उठय लगैत छैक। दुनू टाँग जेना काँटक झोंक मे लेपटा जाइत छैक। अयना छैक जे ओकरा अपना दिस घिचैत रहैत छैक।

भौजी अयली तँ देओर सम्वेदना-सहानुभूतिक पेटार सोझाँ मे खोलिक' राखि देलकै। मुदा भौजी केँ छुच्छ सहानुभूतिक जरूरति नहि रहै। हुनका मदति चाही। ओ देओरक सभ टा गप सुनलनि धैर्यपूर्वक आ विनीत भ' बाजलि, 'ईश्वर पूर्वजन्मक जे दंड देलनि से तँ स्वीकार करहि पड़त। आब मुदा अहाँक मदति चाही। अहाँक भैया तँ पाछाँ हटि गेल छलाह...।'

—'केहन मदति भौजी?' देओर हुलसिक' पुछलक। ओकर चेहराक भाव-भंगिमा दानवीर कर्ण सन भ' गेल रहै।

—'किछु टाकाक प्रयोजन अछि, पुतोहुक नोकरी मे टाका लागत।' भौजी यंत्रवत बाजलि।

देओरक देह झुरझुरा गेलै। ओ चिहुँकि क' बैसल, फेर स्वयं केँ कहुना संयत केलक। अनारी जकाँ बाजल, 'पुतोहुक नोकरी, मुदा किएक?' ओ उत्तर तकिते छलि कि बाजल, 'एक टा पुतोहु आ एक टा बच्चा अहाँ केँ भार भ' गेल?'

—'भारक गप नहि थिक। आब हम कतेक दिन रहब?'

देओर मानय बला नहि। गप केँ उड़ियबैत कहलक, 'अहूँ हद करै छी। आब अहाँ केँ घर मे एक टा लोक चाही सेवा करबाक लेल आ अहाँ पुतोहु केँ नोकरी लेल बाहर पठाब' चाहैत छी, सेहो जवान आ सुन्नरि।'

अंतक दू टा शब्द भौजी केँ झंकृत क' देलकैं। ओ बिफरि उठलि। एहि दू शब्द मे बुझायल व्यंग्य, विकृति आ आरोप घृणा सँ विचलित क' देलकनि। मोन भेलनि जे देओरक गाल केँ लाल क' दी मुदा गुम्मे रहलि, समय विपरीत छलै।

अयनाक सोझाँ ठाढ़ि रूपा हबोढकार कानय लागलि।

ओकर सासु अपन भरोस नहि तोड़लक। राजू छल ने, भगवान ओकरा ओहिना नहि पठौलनि। अवश्ये कोनो बाट बहरायत। राजू बिरजूक कमी केँ एक सीमा धरि भरने रहै। कखनो-कखनो घरक सभ क्यो भ्रमित भ' जाइ जखन ओ अकस्मात पहुँचय। मायक ठोर सँ अस्फुट स्वर बहराइ—'बिरजू बिरजू रे।' वएह धूआ-कब्जा, वएह रंग। आब तँ ओहो माइये कहैत छैक रूपाक सासु केँ। ओहो ओकरा बिरजू मानि चुकल अछि। हृदय मे पैसि गेल छैक जे भगवाने बिरजू केँ राजूक रूप मे पठौने छथि, जे ओकर उजड़ल-उपटल संसार केँ एक टा रूपाकृति देबाक लेल सन्नद्ध अछि। ओकरा छोटो सन बातक एतेक विचार रहैत छैक जे घरक लोको केँ कहियो नहि रहै।

ककरा कखन दवाइ लेबाक छैक, बच्चा केँ कोन वस्तुक जरूरति छैक, क्यो उदास किएक अछि, क्यो किए अबेर धरि सूतल रहैत अछि, सभक लेखा-जोखा, सभक चिन्ता।

कखनो क' रूपा सोचय ई मनुक्ख नहि, देवता थिक। अनका लेल एतेक करैत ककरो नहि देखलहुँ। मुदा राजू केँ अपन कहयबला एहि संसार मे क्यो नहि। संबंधक धारक पसार दूर धरि मुदा ओही मे खाली कीड़ा-मकोड़ा, देह पर चढ़िते काट' लागय। इएह कारण छल जे एहि परिवार मे बहैत स्नेह आ अपनत्वक बयार ओकरा बेसुध कयने रहै। कोनो अदृश्य ताग सँ बन्हायल ओ बिरजूक संग एहि परिवार मे आयल छल, फेर तँ एहि ठामक भ' क' रहि गेल।

रूपा लेल ओकरा बहुत चिन्ता होइत रहै। जेना हैत, जतय सँ हैत, ओकर उदास जीवन मे ओ जरूर रंग भरत। सदिखन राजू सोचय। छोटे-मोटे सही, ओकरा अपन पएर पर ठाढ़ क' बाहरी दुनिया मे मिज्झर क' मानसिक संत्रास सँ ओकरा मुक्त करत, ओ एकर प्रण लेने छल।

रूपाक उदास भीजल आँखि ओकरा आहत करै। छोट बच्चाक पापा लेल कानब आ पापाक बारे मे जिज्ञासा करब, ओकरा कना दैक। ओहि कोमल-प्राण बच्चाक जीवन मे रंग अवश्ये भरत ओ, राजू सोचैत रहैत छल।

राजू मासक मास फिरीशान रहल। अस्पतालक पैघ-पैघ डाक्टरक पामौजी कयलक। खोसामदि करबाक स्वभाव नहि रहै, मुदा स्वाभिमान केँ ताख पर राखि ओ लागल रहल। ओ अन्ततः रूपा केँ नर्सक परीक्षा मे बैसौलक।

ट्रेनिंग लेल बाहर जयबाक रहै। सासुक संग गेलि रूपा। थोड़बे दिनक ट्रेनिंग छलै। एक आत्मविश्वास सँ भरल घुरलि रूपा। घरक बाहरक वातावरण थोड़-बहुत सहज कयलकै। आसक कोपर फूटल रहै। नर्सक ड्रेस मे एक टा फोटो सेहो खिचबौलक।

समय बीतैत गेलै। बिरजूक गेलाक बाद कतेक अन्हड़-बिहाड़ि ओकरा जीवन

मे अयलैक। ओहि अन्हड़-बिहाड़ि मे अपन दीपशिखा केँ जोगबैत-बचबैत कखनो ओकर दम औना जाइ। गामक औनाइत वातावरण, मे ओ मुँह झाँपने कतहु नहि बहराइत छलि। अनेक मास कोठरी सँ नहि बहरायलि। कखनो ककरो तिक्ख बोल सँ मोन अक्कत तीत भ' जाइ। प्रत्येक उत्सव आ प्रसन्नता सँ अपना केँ फराक क' लेने छलि। कोनो शुभ राज-काज मे काछु सन अपने भीतर रहैत छलि।

ओना सासु अपन सखी-बहिनपा सँ गप करबाक लेल अनुमति दैत छलि मुदा अनुमतिक स्वर जेना दूर सँ बजैत कोनो करुण ध्वनि सन रहै, जकर पालन ओ नहि क' पबैत छलि। गामक जनीजाति आ बूढ़-पुरानक शब्द प्रयोग सँ ओ संकुचित रहैल छलि।

पूजा-पाठ आ विवाह-दान मे विधवाक प्रवेश निषेध छल। बदलैत संसारक अछैतहु ई रेबाज अपन जड़ि पसारने छल। कोनो अपरिचितक संग गप करैत जँ कोनो विधवा केँ देखल जाइ तँ दुनूक बीच अवैधक ठप्पा लागि जाइ। गली-मोहल्ला मे खुसर-फुसुर शुरू भ' जाइ। अपमानित करबाक होड़ चलैक एहि सभ कारणें विधवा सभ केँ ईश्वरक शरण मे आब' पड़ैक। गामक मन्दिरक पहिल घंटी मे एहि विधवा सभक हाथक स्पर्श रहै। जखन घरक सभ क्यो सुख मे सूतल रहय, ई सभ उठिक' एकपेरिया पर नाँगट पएरें खेत-मैदान केँ पार करैत पीपरक कात मे बहैत नदी-पोखरि सँ बाल्टी भरि पानि आनय जाइत छलि। सदैव उबड़-खाभर एकपेरिया पर चलैत ई विधवा सभ भविष्यक अन्हार जंगल मे गुम भ' जाइत छलि।

अपना देह केँ कष्ट देबाक सीमा धरि कष्ट दैत आ अपन वैधव्यक लेल स्वयं केँ आरोपित करैत ईश्वरक सोझाँ लाजें झुकल क्षमा-प्रार्थना करैत रहैत छलि।

मंदिरक घंटी बजब' रूपा कहियो नहि गेली मुदा जाइत स्त्रीगणक पंक्ति मे स्वयं केँ डेरायल आ सहमल जकाँ अनुभव करैत छलि। ओकर एहि डर केँ राजू क्षणहि मे भगा देने रहै। धीरे-धीरे राजू सँ गप करैत कालक संकोच सेहो दूर भ' गेल रहै। अपन आदति सँ विवश आ दोसरक फाटल मे टाँग रोप' बला सभ की-कहाँ बजैत रहल। दुनूक संबंध केँ अवैध घोषित क' देल गेलै। गलंजर उड़ल, उड़ैत रहल। यदा कदा गामक जनीजाति टहलैत पहुँचि जाइत रहय। कखनो-कखनो तँ आम आ नीमक पातर दतमनि चिबबैत गामक ननदि सभ आ काकी सभ अहल भोरे आँगन मे उपस्थित भ' जाइ आ शुरू भ' जाइ गपक तार, फेर बिरजूक मृत्यु-कथा।

रूपा तड़पि क' रहि जाइत छलि। तनाओ सँ दिमागक नस सभ तनि जाइ।

एक दिन तँ हद भ' गेलै। रूपा स्नान क' अपन केश सुखबैत छलि। ककबा सँ धीरे-धीरे केश थकरैत छलि। सासु बच्चाक संग कतहु गेल छलि। बाहर गली

मे दू-तीन टा जनीजातिक स्वर अभरलै, रूपा भीतर आबि गेली। अयना मे अपन चेहरा देखलक आ अपने चेहराक सम्मोहन मे ठाढ़ रहली। ओहि दिन पता नहि किएक ओकर अपने उदास आँखि भयभीत क' देलकै। लग मे राखल काजरक पैंसिल उठा धीरे सँ अपन आँखि मे लगब' चाहलक। चोर सन कँपैत आँगुर सँ आँखिक कोर मे पेंसिलक नोक घुमौलक। ओकर करेजा धुकधुकाइत रहै। काजर लगाक' ओ जहिना घूमलि कि ओकर दिमाग चकरा गेलै। आँखि विस्तृत व्योम सन पसरि गेलै। पाछाँ मे बिरजूक बड़की दीदी आ काकी ठाढ़ि छलि।

एखन गली मे हिनके सभक स्वर गुंजित रहै। तुरन्ते कोना आबि गेली ? ओकर देहक सभ टा रक्त जेना करेजा मे एकट्टा भ' गेलै। ओ ठाढ़क ठाढ़े रहि गेलि। लाज, भय, संताप आ संकोचक मिलल-जुलल लहरि अवचेतन मे अकस्मात तिरोहित भ' उठलै।

दुनू स्त्री ओकरा दिस गीड़ि जयबाक नजरि सँ देखि रहल छली। दुनूक दृष्टि सँ घृणा आ तिरस्कारक चिनगी भड़कल रहै। दीदी भड़कैत बाजलि, 'सिंगार, पटार करैत लाजो नहि होइत अछि। एखन तँ दुओ बरस नहि भेल अछि, बिसरि गेलहुँ जे अहाँ राँड़ छी, अँय?'

ओकरा वश मे रहितै तँ कसिक' एक चाट मारैत, मुदा कसमसाक' रहि गेली। काकीयो चुप कोना रहितथि, तीव्रता सँ अयना लग अयली। सिंगारदान लग राखल लिपिस्टिक, टिकुली आ सिनूरक डिब्बा देखि छिलमिलाइत घर सँ निकलि गेलि। निकलैत-निकलैत बाजलि, 'जो गे अभगली, इहो सब लगा क' छम्मकछल्लो बनि जो! निरलज्जी नहितन!'

रूपा पाथर बनल ठाढ़ि छलि। दीदी हुनक लग अयली। बामा हाथें अपन आँचर सम्हारैत, दहिना हाथें काकीक गट्टा पकड़ि अपना दिस घीचि कहलक, 'चलू काकी एकरा आँगन सँ, की कयल जाय, एकर सासुओ तँ अंगरेजिन बनल बहकावा दैत रहैत अछि, कोनो शासन छैके ने पुतोहु पर!'

काकी जाइत-जाइत अपन चेहरा केँ विकृत करैत चिचिअयली, 'ई गाम थिक कनियाँ, गाम! एतय रहबाक अछि तँ राँड़ जकाँ रहू, नहि तँ जाउ शहर-बाजार मे नाचय लेल।'

रूपाक गरदनि मे किछु लसकल छलै, सभ टा शब्द सभ अटकि क' खून-खुनामय भ' गेल रहै। ओ निरन्तर ओकरा सभ दिस तकैत रहलि। भाषाक निष्फल भेला सँ वेदनाक पराकाष्ठाक अनुभवे टा कयल जा सकैत अछि। राति भरि ओ अपन बच्चा केँ छाती मे सटौने कनैत रहि गेलि।

सासुर मे रहब दूभर भ' गेल छलै। ओकरा मोन होइ जे कतहु पड़ा जाइ। मुदा

कतय ? नैहरियो मे माय-बाप केँ ओ कोनो संताप नहि देब' चाहैत छलि। एतय क्षण-क्षण मृत्यु छल। घृणा, उपेक्षा, अपमान भरल दृष्टिक सामना करबाक ताकति सँ जीबय पड़ैत छलै।

राजूक ओकर घर आयब-जायब सभ केँ खटकैत रहै। ओ एक टा अलगे स्थिति रहै। ज्वलन्त मुद्दा सन। ओकरा मना नहि क' सकै छलि रूपा। ओकर आ ओकर बच्चाक सम्पूर्ण भविष्य राजू अपन मुट्ठी मे सहेजि लेने छलै। लाखो गप सुनलाक बादो ओकर अबरजात बन्न नहि भेलै आ एहि कारणें रूपा सभहक नजरि पर चढ़ल छलि! जनीजाति आ बूढ़ि सभ व्यंग्य करबाक कोनो अवसरि नहि छोड़ैत छलि।

एहि सभ परिस्थिति केँ पाछू ठेलैत रूपाक नौकरी लेल राजू दौड़-बरहा करैत रहल छल। ओकर मेहनति साकार भेलै आ रूपा परीक्षा पास क' गेलि। रूपाक नजरि मे राजू देवदूत छल। रूपा आ ओकर बच्चा लेल राजू नहि जानि कतेक प्रसन्नता समेटैत रहैत छल।

रूपाक सासु सेहो आशीष देअय—'राजूक करजा एहि जीवन मे नहि सधा सकब। ई कहैत-कहैत ओ विह्वल भ' उठैत छलि। दुनूक मोन मे एक सोच टकराइत छल। के छल ओ, जे दुखक दारुण समय मे जखन अपन समाँग सभ संवेदनाक भोत्थर शब्द कहि निश्चिन्त भ' गेल छल, मुदा तखन वएह टा बचल छल, जे अपन नहि छलै मुदा दुखक सभ टा बोझ उठाबय लेल तत्पर ठाढ़ छलै।

ओकरे सहयोगें रूपा करुणाक दबाव सँ ऊपर उठि रहल छलि। बच्चो सभ अपन नव दुनियाक संरचना मे व्यस्त होइत जा रहल छल। अकास मे ग्रह-नक्षत्र आ तारावलिक मध्य अपन पिता केँ तकैत रहबाक गति मंद पड़ि रहल छलै। रूपाक नोकरीक पत्रक अबैया रहै। आत्मविश्वासक धार तेज भ' गेल रहै। आब ओ गामक काकी, बाबीक सोझाँ अपन घाड़ झुकौने नहि रहैत छलि। के की बजैत अछि, तकर कोनो परवाहि नहि करैत छलि। आँखि मे सुरक्षित भविष्यक सपना हेलैत रहै। बिरजूक सपना केँ सत्य प्रमाणित करबाक कल्पने सँ ओ रोमांचित छलि।

अनेक राति ओकर आँखि नोर मे दहाइत रहै। निन्न लेल जगहे नहि बचैत रहै आँखि मे। बिरजू जखन मस्ती मे रहैत छल तँ कहय, रूपा हमरा सँ कहियो नोकरी-तोकरी कयल पार नहि लागत, अहीं रानी थिकहुँ बच्चा सभ केँ अहीं बनायब...।

स्मृतिक अनेक काँट चाँछि चुकल अछि आत्माक देबाँल केँ, मुदा समय आब मलहम-पट्टीक संग सहटि आयल अछि ओकरा लग। आब ओ बच्चा सभ केँ स्कूल छोड़बाक लेल सड़क धरि अबैत अछि। बिरजूक गेलाक दू वर्षक बाद आब बहरायलि अछि डोड़ही धरि।

दरबज्जा पर सदैव एकसर बैसल, सुन्न सड़क केँ निहारैत ससुर केँ ओकर

निर्द्वन्द्व बहरायब पसिन्न नहि रहै। ओ जखन कखनो बहराइत छलि तँ ससुर चौचंक होइत एम्हर-ओम्हर देखैत रहैत छल जे अड़ोसिया-पड़ोसिया देखि तँ नहि रहल अछि। ओ किछु कहय चाहैत छल, मुदा पत्नीक लाल आँखि मोन पाड़ैत निसबद भ' जाइ। पुतोहु केँ क्यो एक शब्द कहिक' देखि तँ लिअय। सासु आँखि बहार क' लेती। बुढ़हा देखलक तँ ओकर अख्यास ठीके बहरयलै। पड़ोसियाक खिड़की सँ दू जोड़ आँखि विस्मय भरल दृष्टियें रूपा केँ नख सँ शिख धरि भियारि रहल छल।

बुढ़हा ससुर लेल असह्य भ' गेलै। ओना तँ बिरजूक जीबैतो पुतहुक कूद-फान हुनका बरदास्त नहि रहै। आब तँ...। सासुक कृपा रहैत छलै रूपा पर। ओ अपन पति केँ कखनो किछु नहि बाजय दैत छलि। जीवन भरि लड़ैत रहल आ हारैत रहल। ओना ई बात दोसर जे कहियो हारि नहि मानलक। पति हेबाक अभिमान आ पत्नी केँ दबयबाक प्रवृति ओकरा सदैव एहि भ्रम मे रखने रहल जे ओ विजेता अछि। मुदा कोनो विवादक समापन पर पयर पटकि आ घर सँ बहरा जयबा सँ होइत छलै। पौरुषक दर्प तँ ओ एतेक देखौलक जे घरक अधिकांश बेसकीमती समान अपन अंग-भंगक कारणें उदास नजरि अबैत रहै।

बिरजू केँ एहि सभ बात सँ बहुत चिढ़ रहै। माय-बापक सदैव लड़ैत रहबाक आदति ओकर सभ टा ऊर्जा सोखि लेने रहै। ओ अपन दुख आ फिरीशानी ककरो सँ साझियो नहि क' सकय।

ई एक एहन रहस्य छल जे ओकरा अलावे क्यो नहि जानि सकल छल। ई जहर जकाँ देह मे एना पसरि गेल जे ओ गम्भीर रोगक चपेट मे पड़ि तिल-तिल गलि गेल। बेटाक असामयिक मृत्यु माय केँ अपना पतिक प्रति कठोर बना देलक। ओ पतिये केँ एहि आघातक दोषी मानैत छलि। कोनो निर्णय मे पतिक सहमति-स्वीकृति नहि लैत छलि।

पुतोहुक नोकरीक गप जोर पर छलै। मुदा ससुर केँ क्यो नहि कहि रहल छलै। एम्हर-ओम्हर सँ ओकरा जनतब भेटि रहल छलै आ ओ भीतरे-भीतर उबलि रहल छल। पत्नीक प्रति घृणा सँ भरल छल। होइत छलै जे निर्घिन गारि सँ बीछि देअय मुदा... आब तँ ओतेक ताकतो नहि रहै। बेटा दुनिया छोड़ि गेलै तँ जेना सभकिछु ल' क' चलि गेलै। आब ई बूढ़ ठठरी कहियाधरि रहत एहि धरती पर के जानय।

एकसर मे पड़ल-पड़ल ओ कानय लगैत अछि। पुतोहुक नोकरी ओकरा आहत करैत रहैत छैक। अनेक प्रकारक आशंका सँ ओ भरल रहैत अछि।

ओहि दिन सँ ओकर कान ठाढ़ भ' गेल रहै जहिया ओकर छोटका भाइ घंटो लग मे बैसिक' कान मे फुसफुसाइत रहलै। छोट भाइ कहने रहै जे महिला सभ शहर

सभ मे रातियो मे काज करैत छैक। कान लग मुँह ल' जाइत कहने रहै, भैया, बूझल छह जे नरसिनियाँ सभ तँ डाक्टरक संग...।

कान पर आँगुर राखि लेने छल ओ आ ओहि दिन सँ ओकर आँखि गोल-मोल चारूभर घुमैत रहैत छलै। एक टा अजीब तक्काहेरी मे पड़ल छल ओ।

राजूक आँखिक निन्न उड़ि गेल रहै। तमाम दौड़-बरहाक बादो नियुक्ति पत्र पहुँचि नहि रहल छल। रूपा आ ओकर सासु कतेक गोहारि लगौलक। भगवानक पूजा करौलक, मंदिर मे धूप-दीप दैत रहलि मुदा विश्वासक ज्योति मंद भ' रहल छलै।

राजू फिरीशान भ' उठल। सभ टा काज ओ करबा चुकल छल। रोकावटिक कोनो आशंका नहि रहै, फेर ई की भ' रहल छलै। मास दिनक बाद ओ फेर शहर गेल। घरक सभ टा टाका-पैसा खर्च भ' गेल छलै। घूस मे बहुत टाका लागल रहै। सौंसे घर मे एक टा अजीब प्रतीक्षाक उदासी पसरल रहै।

रूपा क्षण-क्षण राजूक प्रतीक्षा मे छलि। ओकरा गेला सात दिन भ' गेल रहै।

बाहर दरबज्जा पर बैसल ससुर सेहो पल-पल प्रतीक्षा मे छलै। सोचय जे भगवान ओकरा किएक नहि उठा लैत छथि...। शहर जाक' राति-राति भरि डाक्टरक संग पुतोहु काज करती, ई देखबा सँ पहिने ओकर आँखि किएक ने मुना जाइत छैक...।

छोट भाइक एक टा गप हथौड़ा जकाँ निरन्तर दिमाग मे ठोकर मारैत छलै, 'भैया, राँड़ आ साँढ़ मे कोनो फरक नहि। दुनू केँ साधिक' राखय पड़ैत छैक।'

ओह! ओ कोना साधत एहि राँड़ केँ। राँड़ तँ ओकर पत्नी सेहो भ' गेलैए ओकरा जीविते। अहुँछिया काटिक' रहि जाइत अछि बुढ़हा... दृष्टि फेर सड़कक सुन्न केँ चीरैत अछि।

दूपहरक सुनहट मे ओहि दिन जखन सभ सूतल छल, बुढ़हा अभ्यासवश सड़क केँ निहारि रहल छल। ओकरो आँखि मे एक टा उत्कट प्रतीक्षा छलै।

भोर सँ दुपहर, दुपहर सँ साँझ आ साँझ सँ राति निरर्थक कटि जाइत छैक। दादी बच्चा सभ पर नहि चिचिआइत अछि। रूपा अपन छाँह संग डोलैत रहैत अछि।

भरल दुपहर मे बच्चा आँगन मे गेन उठौने कखनो अकास दिस तकैत छल तँ कखनो गेन केँ एम्हर-ओम्हर गुड़कबैत छल। फेँर एक बेर गेन कातक छाउड़ कूड़ाक ढेरी पर खसि पड़ल। ओ थोड़ेक काल देखैत रहल। कनेके पहिने ओहि ढेरी दिस एक टा बिज्जी केँ एम्हर-उम्हर करैत देखने रहय। अपना सँ निकालैत डर भेलै तँ दौड़ल मम्मी लग।

रूपाक हाथ पकड़ि लेने आयल। ओ छाउड़क ढेरी दिस तकलक। पहिने तँ

रूपा केँ कोनादन लगलै। ओम्हर बहुत गंदगी आ दुर्गन्ध छलै, मुदा बच्चाक गेन एक टा साफ कागत पर सुरक्षित राखल छलै।

रूपा चौंकलि। एहन कचरा ढेरी पर एतेक साफ कागत के फेकने अछि। ओ गेन बहार कयलक। नाक पर आँचर राखि कागत उठौलक। दू टुकड़ा मे फाटल कागत पर दोसर दिस बेस छाउर लागल। झाड़िक' देखलक। ओकर मोन खटकलै। निराशा आ अपमानक एक टा घनीभूत अन्हार जेना चारूभर पसरि गेलै। आ ओहि अन्हार मे कोनो प्रेत-छाया डोलि उठलै। ककर छाया रहल हैत ई... ? ओकरा भीतर किछु धक सँ उठलैक। ओ ओहि टुकड़ा केँ जोड़ैत पसारलक। ओकर हाथ काँपय लगलै। करेजा धोकनी सन धड़कैत रहै। ओकरा चक्कर सन अयलैक, मुदा जेना-तेना सम्हरैत घर आयल।

जाहि कागजक प्रतीक्षा मे ओ अहर्निश व्यग्र रहैत छलि, तकर ई परिणति! कने काल लेल ओकर मोन एहन कर्म केनिहारक प्रति घृणा सँ भरि उठलै।

मुदा, अगिला भोर जल्दी नहा क' तैयार भेली। शीशा लग ठाढ भेलि तँ अपन चेहरा अलगे आत्मविश्वास सँ भरल बुझेलनि। समय सँ कने पहिने ओ अस्पताल लेल निकलि गेलि।...

थाप

केबाड़ पर क्यो जोर-जोर सँ थाप देलक तँ टुनी अकच्छ भ' उठल। आजिज होइत बाजल—'आब के थिकाह। जखन-तखन क्यो ने क्यो टघरिते रहैत अछि।'

हम सहमिते उठलहुँ। हमरा बूझल छल सामने बला दूमहला मे रहयवाली बुजुर्ग महिला हेतीह, जनिका भरि मोहल्ला आंटी कहि क' बजबैत छनि। बड़ मिलनसारि छथि। अबैत छथि तँ फेर घुरबाक कोनो समय-सीमा नहि रहैत छनि। हमरो नीक लगैत अछि मुदा टुनी, हमरा पुत्र केँ ककरो एना एनाइ-गेनाइ आ हमर आन-आन लोकसभ सँ हेम-छेम बढ़ौनाइ पसिन्न नहि छनि। ओ अपने मे घुरिआयल रहैत अछि।

ओहुना दू टा छोट-छोट कोठली आ छोट सन ओसार बला आवास मे ककरो हस्तक्षेप ओकरा असहनीय भ' जाइछ। कतेक बेर हमरा रूच्छ स्वरें चेता देने अछि, 'माय, अहाँ एना कियैक करैत छी। कथी लेल जाइत छियै ओकरा सभ ओहिठाम। आराम करब से नहि।'

ओना जखन ओ ड्यूटी पर रहैत अछि, तखने टा हम आस-पड़ोस मे कखनो चलि जाइत छी। एकसर मनो नहि लगैत रहैत अछि। बेटी आ पुतोहु अपना-अपना तालें, बूढ़-सूढ़ केँ के पुछैए... मुदा टुनी केँ तकर कोन बोध...।

ओ हमरा चेतौनी दैत अछि तँ हम कने कुंठित भ' जाइत छी। सहमिते बजैत छी—'रौ बाउ, केओ आबि जेतै तँ की करबै, बजब' तँ नहि ने जाइत छियै।'

—'फेर वैह बात, इन्टरटेन कियैक करैत छियै। आउ, आउ। बैसू, चाह पीबू। ई सभ की थिकै? दरबज्जे नहि खोलू।'

टुनी हमर व्यवहारक मजाक बनबैत अछि तँ हम सुन्न पड़ि जाइत छी एहि क्षरण पर। ने कोनो तर्क, ने कोनो उत्तर...। किछु फुराइतें नहि अछि। जेनरेशन गैप मे मानवीय संवेदनाक एहि तरहें गायब भ' जायब कतहु ने कतहु बड़ चोट पहुँचबैत अछि। किछु नहि बजैत छी। क्यो आन रहैत तँ ओकरा संस्कार आ आदर्शक नमहर पाठ पढ़बितियै मुदा ई तँ हमहीं थिकहुँ। हमरे बाल-बच्चा।

आगन्तुक एहन धिम्मर जे लगातारे कॉलबेल बजौने चलि जा रहल छल।

हम एकबेर टुनी दिस तकलहुँ, फेर गेट दिस। लपकि केँ गेट खोलबाक त्वरा समाप्त भ' गेल छल। दोसर कोठरी सँ बेटी बहरेली। हमरा दुनू गोटेक तटस्थता देखि ओकरा कने रोष भेलै—'लगैए सभक कान बहीर भ' गेलै।' ओ अपने मे अनमनेली आ बढ़ि क' गेट खोलि देलक। हम हड़बड़ा क' आगाँ बढ़लहुँ। भेंटक उल्लास समाप्त भ' गेल छल। उत्साहक स्वाँग करैत आगन्तुकक अभिवादन कयलहुँ आ हुनका सोफा पर सादर बैसैलहुँ। बड़ भद्र स्त्री रहथि ओ। गोर-नारि, सुंदर आ सम्पन्न। सुंदर छवि-छटा सँ सम्पन्नता उछलि-उछलि बहराइत छलनि। भरि दूपहर हमरा लग आबि क' बैसि रहथि। थोड़बे दिनक जान-पहिचान मे अपना केँ खोलि क' हमरा लग ओ राखि देने रहथि। बूढ़ा डिप्रेसन मे आबि गेल छथि। एको टा धीयापूता लग मे नहि छनि, ताहि सँ ई डिप्रेसन, 'एहि महासमुद्रक तीन टा धारा तीन दिस बहि गेल, समुद्र सुखा रहल अछि।' एतबे टा बजैत छथि कखनो काल। डरैत छथि, कतहु एकसरे विदा ने भ' जाथि, बिनु ककरो देखने... बिनु बतियौने। अपनो बूढ़ी तेहने छथि। कोनो बेसी ठेहगर तँ नहि छथि, तैयो दुनू परानी कहुना क' अपन निमेरा क' लैत छथि।

वृद्धा टूनी दिस तकिते-तकिते बैसली। ओ स्थावर भेल तरका आँखियें हमरा दिस तकैत-खौंझाइत मोबाइल टिपि रहल छल। कने सहमले जकाँ, आँखि मे ममत्वक भाव भरने ओ टूनी केँ टोकलनि, 'कतय काज करैत छी बाउ आइ-काल्हि?' बूढ़ी केँ टुनी मे जेना कोनो झलक भेटि गेलनि। अपन बेटा सभ केँ देखनाइ तँ बरखक बरख बीति जाइत छनि। टुनी केँ ओहुना हुनका मे कोनो रुचि नहि छलै। मूड़ी खसौने बाजल, 'रामगढ़ मे छी।'

—'तखन तँ...।' वृद्धा अनेरेक कौतुक संगे चहकि उठलीह।

—'कहै छै ने जे लोटा घरे मे चमकैत अछि मुदा बेटा बाहर दस लोक मे चमकैत अछि। पुरना लोक सभक कहबी थिक बहिन।'

टुनी फोन कात मे रखैत जोर सँ हाफी लेलक, 'अहूँ सँ क्यो पुरान अछि एतय।' मनहि मन व्यंग्य कयलक आ उठि क' घरक भीतर चलि गेल।

वृद्धाक मुख पर टुनीक उपेक्षाजन्य व्यवहार सँ एक टा असहायताक भाव व्यापि गेलनि। ओ थोड़ेक काल चुप रहली, फेर अपना केँ बहटारैत गपक दिशा बदलि लेलनि। विह्वल दृष्टियें हमरा दिस तकैत बजलीह —'बहिन, अहाँ बड़ नीक छी, तें ने बेटो हीराक टुकड़ा अछि।'

हम कने संकुचित भेलहुँ। बेटा तँ उचित सम्मानो नहि देलकनि, फेर कोना एहन उपाधि द' देलखिन। लागल जेना कसि क' थापड़ मारने होथि। मुदा हुनका दिस तकलहुँ तँ ओ ओहिना निश्छल, निर्विकार। हम अपनहि झेंपि गेलहुँ।

ओ अपन पड़ोसिन अंजनी मायक चर्चा शुरू क' देने रहथि, 'ओ अबैत अछि की, अंजनियाँ माय?'

—'कहियो काल।'

—'से की?'

—'किछु नहि।'

वृद्धाक चेहरा मौला गेलनि। कने ठमकैत नहुँए बाजलि—'नहि जानि हम ओकर की केलियै जे ओ हमरा पर लागि गेल अछि।'

—'की भेल?'

—'की हैत। हमरा काज वाली केँ भगाइये देलकै ने बहिन।' ओ कननमुँह होइत बजली।

—'आहि रे बा। ई कियैक केलनि? अहाँ सँ हुनका कोन तेहन बैर भ' गेलनि।'

—'सैह कहू बहिना। डाहे ने बैरक जन्मदाता होइत अछि। सिखा-पढ़ा देलकै...। हमहीं ओकरो घर रखबा देने रहियै अपने दाय केँ। से जाहि थारी मे खयलक, ओही मे भूर क' देलक। चारि दिन भ' गेलै, अपनहि हाथ झरकाबै छी।'

हमरा कने छगुन्ता भेल। एना ककरो कष्ट देब नीक बात थोड़बे छैक। मुदा कारण तँ किछु अवश्ये हेतैक।

—'की भेल छलै? किछु टनमन भेल छल दुनू गोटे मे?'

—'नहि-नहि... बड़ डाही अछि। जरैत अछि हमरा सँ। ओकरा तँ बूझल छैक ने जे हमर धीयापूता कतेक पैसा बला अछि।'

ओ कने सम्हरि क' बैसली। भोरका पहर छलै। सभ किछु अस्त-व्यस्त। काजो वालीक अयबाक बेर नहि भेल छलै। मन कने विचलित छल मुदा ओ हमरा अपन सम्पूर्ण परिचय देबाक लेल उताहुल रहथि। पति रिटायर्ड इंजीनियर छथिन। दू टा बेटा, तेहने कद्दावर आ ततबे कमौनिहार। एक टा दिल्ली मे रहैत छथि बड़का। दुनू परानी मिलाक' पाँच लाख टाका कमबैत छथि आ छोटकाक तँ कोनो कथे नहि... अमेरिका मे इंजीनियर छथि। एही शहर मे समधियारो छनि। बड़का जज। बेटीक तँ बाते अलग। सात टा शहर मे अपन फ्लैट छनि। एहि बेर नातिनक विवाह मे एक करोड़ टाका उड़िया देलखिन।

वृद्धा कने साँस लेलनि। फेर आत्ममुग्ध भावें हँमरा दिस तकैत कहलनि, 'ई घर, जाहि मे हम रहि रहल छी, बूझल अछि कि ने, छोटका बेटा कीनि देलक अछि।'

—'अच्छा।' हम प्रसन्न होइत बजलहुँ—'सत्ते, क्यो कहने छैक पूत सपूत तो का धन संचय, पूत कपूत तो का धन संचय...।'

—'यैह-यैह बहिन।' वृद्धा सोफाक डंटा पर हाथ बजारैत छमकली—'देखै

छियै ने, पाइ-पाइ केँ एकट्ठा करैत अछि ई अंजनियाँ माय। मुदा ने बेटा बन' बला छै... ने बेटी हाथ मे छैक। जरतै कोना ने हमरा सँ ई पपियाही... निर्दयी।'

वृद्धा फेर आलोड़ित भ' उठली, 'कहलकै हमरा काजवाली केँ जे जाधरि पाँच हजार नहि देतहु, ता काज पर नहि जइहें, ओकरा बड़ पाइ छैक।'

—'ई तँ बड़ गलत बात।' हम भरोस देलियनि।

बातक छोर ओ फेर धयलनि, 'बहिना, सभ महिना बीस हजार टाका बड़का आ बीस हजार टाका छोटका पठबैत अछि। कत्ते खायब हम दू परानी?'

वृद्धा आत्ममुग्ध होइत अपन वैभव बखानक प्रवाह मे दूर धरि बहि जाइत छथि। हुनका मुख पर परम संतोष आ तृप्तिक भाव पसरि जाइत अछि।

अपन समग्र सुख हमरा संग बँटैत ओ विह्वल भावें हमर हाथ ध' लैत छथि आ डूबल आँखियें बजैत छथि—'की कहियौ बहिन। हमर दुनू बेटा मे जे स्नेह छौ... राम-लक्ष्मण छियौ दुनू।'

हम कने बेसीये प्रभावित होइत अपन ठोर प्रसन्नताक पसार मे घिचने रहैत छी। कोन शब्द सँ हुनका साधुवाद दियनि, नहि फुराइत अछि। मन मे एक टा तुच्छ जिज्ञासा पटपटा उठैत अछि। आ हम पूछि बैसैत छियनि, 'आ पुतोहु सभ नीक छथि ने, माने नीक गाम-ठामक छथि ने?'

क्षणक लेल हुनक भाव परिवर्त्तित भेलनि मुदा ओहि भावक पारेख संभव नहि भ' सकल। फेर ओ उत्फुल्ल होइत अपन गरदनि एम्हर-ओम्हर डोलबैत उतारा देलनि, 'अहा, बड्ड-बड्ड नीक। एही सभ सँ तँ हमर पड़ोसिया केँ जरनी छैक। एहन चालि रहतै तँ एही जनम मे पुतोहुक मुँह नहि देखत। बेटा की कोनो काजक छैक। बेटियो बात मे नहि छैक। आ एक टा बात बुझलियै की?' अपन मुँह हमरा कान मे सटबैत ओ बजलीह, 'घरक सभ टा काज अपन घरेवाला सँ करबैत अछि ई मौगी। घर जे एतेक चकमक करैत रहैत छैक, से की ओकरे बूते...।'

—'अँय?' हमरा मुँह सँ सायास बहरायल। एहन व्यवहारक आदति नहि अछि ने। हमरा सभक घर मे साँय-बेटाक मतलब अछि रौब झाड़ब आ पत्नी सँ सेवा करायब। तखन ई बात कने अनसोहाँत जरूरे लागल।

अंजनीक माय सेहो कहियो काल अबैत छलीह। अपन नीक-बेजायक बीच एकदिन एहि वृद्धाक ततेक उखाही कयने छलीह जे हम तकिते रहि गेल छलहुँ। हुनकर परस्पर वैमनस्यक हमरा लग कोनो समाधान नहि छल। हम तँ अपनहि एकल अस्तित्ववादक घेरा मे बान्हल छलहुँ।

आइ अंजनी मायक उखाही मे ई रमल छथि। कने रोष मे बजली, 'हमरा सँ

एहि जनम मे मिलान नहि हेतैक ओकरा। हमर बेटा-बेटी, सर-संबंधी सभ एक पर एक अछि। एकरा आत्मागुणे फल भेटतौ बहिन...।'

वृद्धा केँ अपन सिंक मे राखल ऐंठ बासन मोन पड़ि गेलै। बूढ़ाक जलखैक बेर होइत छलै। काज वालीक कारी खटखट चेहरा आँखि लग घुमलै तँ सौंसे देह मे बिढ़नी लागि गेलै। एखन अंजनी माय सोझाँ मे रहितै तँ झोंटा पकड़ि लिड़िया दितथि ओकरा। मुदा मुरझायल मोनक नाद सँ आवाज बहरयलनि, 'बहिन, ई अंजनियाँ मायक कहियो नीक नहि हेतनि। हमर जाति-भाइ होइतो कनेको टा अपनैती नहि रखने अछि। हमर बेटा सभ केँ देखि एकरा कलेजा पर साँप लोटाइत रहैत छैक।' आँचरक कोर सँ नोर पोछलनि आ गंभीर होइत बाजलि, 'ई कहियो सुखी नहि रहत। बड़ दुख काटत।'

हमर करेज धड़कि उठल। हे भगवान, एना ठेठ ककरो सराप नहि देबाक चाही...। मुदा हम चुप रहलहुँ। हमर ई प्रकृतिये थिक। सभहक सोझाँ एक टा मूक श्रोता आ असफल वक्ता बनल बैसल रहैत छी।

काजक बेर छल आ वृद्धा अपन गपक पोटरी पसारने बैसल छलीह। हम कने उकस-पाकस कयलहुँ। आब ओ अपन बात पर अयलीह। उठबाक प्रयास करैत पुछलनि, 'बहिन, अहाँ ओतय जे काज वाली अबैत अछि, ओकरे कहियौ ने जे कनी हमर काज सम्हारि देत।' ओ ततेक दीन भ' क' बजली जे हमरा करुणा आबि गेल। चट द' कहलियै—'हँ-हँ, कियैक नहि। अबैए तँ हम कहैत छियै।' ओ फेर कहलनि—'पाइक कोनो चिन्ता नहि। पछिला काजवाली केँ दू हजार दै छलियै, एकरा तीन द' देबै। हमरा कोनो कमी नहि अछि बाउ। बेटा कहैत अछि जे पाँच हजार मे राखू काजवाली। भानसो अपना सँ नहि करू...।' ओ बेर-बेर अपन भाग्यक सराहना क' रहल छली आ हम कने द्वंद्व मे फँसि गेल रही। एहि वयस मे धीयापूता सँ फराक रहबाक की प्रयोजन। एत्तहि बेटीयो छनि। कहैत छथि जे अरबपति अछि। बेटीक विवाह मे करोड़ो टाका उड़ियौने छथि। तखन...। एक टा काजवाली लेल छिछिया रहल छथि। कोनो बेटे लग चल जाथु। एतय रहबाक प्रयोजने की? बूढ़ा तँ बेस लटकल फटकल छनि। कोनो नीक बेजाय भ' जानि... हम बिनु मँगने ई सलाह हुनका पकड़ा देलियनि।

ओ छुटिते बजलीह—'हँ बाउ, मुदा बूढ़ा मानबे नहि करैत छथि। कहैत छथिन जे हमरा एत्तहि नीक लगैत अछि।'

—'नहि-नहि, थोड़ेक दिन लेल जाइ मे कोनो हरज नहि छैक।' हम बजलहुँ।

—'कहैत छथिन, ओकरा सभक खेल' खाय के उमर छैक, कथी लेल बाधा

देबै? बेटा-पुतोहु की, बेटी-जमाय रोज फोन क' क' अकच्छ क' दैत अछि मुदा हिनका के बुझायत?' वृद्धा बात केँ अनठबैत बजलीह।

—'भ' सकैत अछि अपन जगह सँ वृद्धावस्था मे एक टा असहज लगाओ भ' जाइत छैक लोक केँ।' हमहूँ हुनका सँ छुट्टी लेबाक प्रयास मे गप केँ समापन दिस मोड़ैत कहलहुँ।

—'हम आइये अपन काज वाली सँ गप क' अहाँ केँ बतबैत छी। ओ अबस्से क' देत।'

ओहो उठिक' ठाढ़ भ' गेलीह, 'हँ बहिन, हम तोरा सहोदर मानैत छियौ। ककरो उपकार कयने अपनहुँ उपकार होइत छैक।' ई कहैत हुनको आँखि पनिया गेलनि। नहुँए-नहुँए ओ बहरा गेली।

हमहूँ पाछाँ घुमलहुँ। एक डेग बढ़ल होयब कि फेर ओ घुरलीह।

—'आब की भेल?' मन कने बेपिरीत भ' गेल। दतमनि धरि नहि कयने छलहुँ। चाहक बड्ड तलब भ' रहल छल। चाहक तलब हमर पारम्परिक रहल अछि। नेनपने सँ घड़ीक सूइया देखिक' चाह हाजिर रहैत छल। मुदा आब ककरा गरज छैक जे अपने मन सँ एक कप चाह बना देत। कहियौ तँ बड़ बढ़ियाँ। भेटत, नहि तँ जाउ। वृद्धा लेल एक टा गहींर आत्मीयता नव तरहें उत्पन्न भ' गेल।

ओ लग आबि नहुँए पुछलनि—'बहिन, कोन जातिक छी अहाँक काजवाली?'

हम कने ठमकलहुँ। जाति-पातिक माने मतलब हम आइधरि नहि बुझलियै। तें कहियो पुछबो नहि केलियै ओकरा सँ। मुदा एतबा अंदाज लगै जे ओ कोनो निम्नवर्गक थिक। बोली-वाणी तँ एकरंगाहे।

हमरा अनचोक्के जेना झटका लागल। गाम-घर मे तँ ई बात बड्ड महत्त्व रखैत छैक मुदा नगर-महानगर मे के देख' जाइत छैक जाति-पाति। ताहू मे आजुक समय मे।

—'जाति तँ हमरा नहि बूझल अछि, से पुछबो कोना करबै?' हम कने अनासक्त भावें बजलहुँ। कात बला कोठली मे बैसल हमर बेटा सुनि लेने छल। आजिज तँ ओ छलहे, जोर सँ बाजल, 'मुसलमान थिकै।'

—'की कहलहुँ?' वृद्धाक मुँह विवर्ण भ' गेल छलै, जेना कोनो विषधर काटि लेने होअय। ओ हमरा सँ छिटकि कने दूर गेली जेना मुसलमान हमर काजवाली नहि, हमहीं भ' गेल होइ। लगैत छल जेना हुनक सर्वांग छुआ गेल होनि।

विचित्र भाव-भंगिमाक संग ओ कनेकाल ठमकल रहली। फेर हुनक आँखि मे हठात कोनो संकट सँ समय सँ पूर्व बचि जयबाक प्रसन्नता स्पष्ट देखार पड़ल। हुनका सभ सँ बेसी उसास एहि बात सँ छलनि जे ओ हमरा ओतय चाह-पानि नहि

पीने छली कहियो। कोनो ने कोनो कारणें ओ जहिया-जहिया अयलीह, चाह पीबा सँ मना क' देने छलीह। पैत बचि गेलनि, वृद्धा सोचैत हेती।

—'हमरा ओतय तँ सर-संबंधी सभ अबैत रहैत छथिन गै बहिन, मेन रोड बला समधि बड़ कट्टर छथि। बाभने भनसीया टाक हाथें खाइ छथि। दस-दस टा नोकर-चाकर छनि, अधिकांश बाभने। क्रिस्तान काज वाली कें देखिते पड़ा जायत सब। फेर घूरि क' नहि आओत क्यो। नहि-नहि, छोड़ि दिऔ।'

वृद्धाक दहिना हाथ पर झरकलहा चेन्ह देखैत हम सोचलहुँ, 'जाउ, अहाँ कें यैह लिखल अछि। एतय तँ काजवाली सभ अगराइत अछि। पाँच हजार मे नहि तैयार होइत अछि। लोक डोमो-दुसाध नहि बूझैत अछि।'

मुदा प्रकट मे हम किछु नहि बजलहुँ।

तखने हमर काजवाली आबि गेल। जातिक कोनो चेन्ह ओकरा कोनो अंग पर नहि छलै मुदा वृद्धा अपन गिद्ध दृष्टि सँ ओकर सम्पूर्ण शरीर पर फेरैत आइ ओकर जाति कें बाहर क' लेब' चाहैत छलीह।

फेर ओ चलि गेली तँ हम सोचैत रहलहुँ हुनका विषय मे। अखारी-बखारी, टाका-पैसा, बेटा-बेटी सभ किछुक अम्बोह लागल छनि मुदा वैह रामा वैह खटोलबा। नमगर-चौड़गर घर भकोभन्न लगैत छनि।

काल्हि प्रसाद देब' गेल छलहुँ तँ देखैत छी, हुनक घरबला, जे अस्थिपंजर जकाँ लगैत छल, दुनू हाथें डाँड़ पकड़ि क' उठला। चौकी पर सँ उतरय मे जेना अबूह लगैत छलनि। बड़ी काल सँ पियास लागल छलनि। फ्रीज धरि पहुँचब भारी लगैत छलनि। बूढ़ी भनसाघर मे थारी-बासन मँजैत छलीह। बासन माँजब छोड़ि क' बूढ़ा कें पानि देलखिन आ झटकल केबाड़ लग अयलीह।

तखने कहने रहथि, 'एक सप्ताह मे बेटा-पुतोहु दुनू आबि रहल अछि।' झुर्री भरल चेहरा पर मुस्कान पसरल छल आ आँखि मे नेहक तरलता व्याप्त छल। एक विरल उत्कंठा जे-एक सप्ताह मे जे आओत से एखने कियैक नहि आबि जाइत अछि।

एखन फेर जेना हुनका मन पड़लै, दू टा सीढ़ी टपल छलि कि फेर घुरलीह। बेदरा जकाँ चहकैत बजलीह—'काल्हि बेटा-पुतोहु सभ आबि रहल अछि। ओकरो सभक भानस-भात करबाक अछि।'

—'अच्छा। हँ, अहाँ कहने रही।' हम हर्षित होइत कहलहुँ—'अहूँ सभ एहि बेर चल जाउ बेटा संगे।' हम टोकारा द' देलियनि।

—'हँ बहिन, जायब। वीजा बनल अछि। पाँच लाख टाका बड़का बेटा खर्च कयने अछि।'

—'अँय सत्ते!' हम विस्मय ओढ़ैत हुनकर डींग केर स्वागत कयलहुँ।

—'हँ, छओ मासक वीजा अछि। मुदा ई रहथिन तखन ने बाउ।' ओ मिझायल स्वर मे बजली—'हिनका तँ सुख काटै छनि। राजा जकाँ रखैत छनि बेटा-पुतोहु मुदा...।'

एतबा कहि ओ आगाँ बढ़ली। फेर घुरि अयलीह। घंटा भरि सँ ई घुरियौनी चलि रहल छल। ओ एकदम्मे लग आबि फेर हमर हाथ ध' लेलनि—'कोनो दोसरो काजवालीक पता जँ होअय बाउ, तँ कहब। खाली जकर पानि चलैत होइ।'

—'ठीक छै, देखबै।' हम संदर्भ समाप्त करय चाहैत रही।

—'एकरत्ती हमरा कहि देब जँ क्यो भेटय।'

—'अच्छा।'

—'हँ, हम दस बजे धरि जागल रहैत छी। अहाँ कने फोन सँ पता लगा क'... नंबर अछि ने दोसर काजवाली के? भेटय तँ, नहि भेटय तँ हमरा कने कहि देब बाउ...।' ओ नेहोराक अति क' रहल छली।

हमरा बेटी-पुतोहु कें भरि देह माया भरल छनि। बुढ़ियाक दशा देखि दुनू पघीलि रहल छलि। जतबे बेटा तमसायल, ततबे ई दुनू ओहि वृद्धाक सहयोगक भार उठा लेलनि। एक टा बहुत पुरान काजवाली के नंबर छलै, जे जातिक यादव रहै। कनियाँ नंबर ताकि क' कतेको बेर फोन लगौलनि मुदा गप नहि भ' सकलै।

रातिक नओ बजे वृद्धा फेर अयलीह।

—'ओ तँ फोन नहि उठा रहल अछि।'

—'अच्छा, कोनो बात नहि, भोर मे जँ गप हैत तँ कहब।'

भोरे मे हुनका घर सभक अबैया रहनि। कनियाँ आ बेटी अफसोच क' रहल छली।

—'कोना क' बुढ़िया सभक भानस-भात करतै?' बेटी चिन्तित होइत बजली।

—'कियै, दू-दू टा पुतोहु सेहो ने अबैत छनि। ओ सभ मुँह तकथिन?'—हम कहलहुँ।

दस बजे राति धरि कनियाँ बेला नामक ओहि काजवाली कें फोन लगबैत रहली मुदा ओ फोन नहियें उठौलक। मन कने छोट भ' गेल हमरा सभक। जाधरि काजवालीक कोनो समाधान नहि हैत, ताधरि ओ वृद्धा देहरि नहि छोड़तीह। विवशतो रहनि। एहि वयस मे ककरा कतय कहय जइतथि। के मदति लेल ठाढ़े छलनि?

—'चलू, आब बेटा-पुतोहु संगे किछु दिन तँ सुख कर' चलिए जैतीह।' हम सोचलहुँ आ हुनका अपन लाचारी कहि देबाक लेल विदा भेलहुँ। अनेरे कथी लेल आस बनौने रहती। कहि देबनि तँ अपनो कोनो प्रयास करती। ओहिनो हँ-नहि कहि देबाक लेल कहने छलि, भेटै तँ, नहि भेटै तँ।

हुनका घरक आगाँ मे बड़का गाड़ी लागल छल। सभ आबि गेल छलै भरिसक। रातिये मे आयल छलै। केहन रमनगर लगैत हेतै घर-आँगन!

हम हुनक दरबज्जा लग ठाढ़ भ' गेलहुँ। मन मे अनेको भाव उत्पन्न होम' लागल। वृद्धाक समृद्धि आ संतानक योग्यता सँ कने-मने डाह जकाँ सेहो होम' लागल। एतेक ऐल-फेल घर बेटा अपन कमाइ सँ माय-बाप कैँ भेंट कयने छनि। अहा! भाग्य हो तँ एहन! कतेको बेर बात-बात मे अपन भाग्य ओ सराहि चुकल छथि अपने। कोनो अनर्गल नहि कयने रहथि, छैनिहें तेहन भाग्य। तखन ने सभ जरैत छनि।

अंजनियाँ माय कोना लह-लह करैत एकदिन कहने रहै, 'नव पर नवाबी, इजेरिया मे टार्च, आयल अन्हरिया, बैटरी लॉस।' कहिक' खूब हँसल रहै। ओहि वृद्धा सँ नहि जानि ओकरा कोन जनम के खैंक रहै। नया परहक नवाबी तँ नहि छल हिनक। ई अंजनी मायक ईर्ष्या आ कुंठा बजैत रहै।

कॉलवेल बजब' लेल जहिना हाथ बढ़बैत छी कि भीतर सँ कर्कश स्वर बहरायल, 'अहाँ एकसर रहैत छी, एतबा नहि होइत अछि जे सभ सँ मिलि-जुलिक' रही।' बड़का बेटा मायक मुँहें पड़ोसनीक दुर्व्यवहारक खिस्सा सुनि हुनके लताड़' लगला। दुखी माय बेटाक अबिते ममताक भावातिरेक मे मनक सभ टा व्यथा उगलि देलखिन।

केबाड़क फाँक सँ हुलकी मारबाक धृष्टता सँ हम वंचित नहि रहि सकलहुँ।

'थपड़ी एक्के हाथें नहि बजैत छैक माँजी, अहूँ किछु करैत हेबै।' जेठकी पुतोहु टीपलनि। सासुक अति सक्रियता आ सभ बात कैँ जानि लेबाक जिज्ञासा सँ ओ पुराकाल सँ त्रस्त रहथि। आइ निरूत्तर करबाक अवसर हाथ सँ नहि जाइ देब' चाहैत छलि।

विदेसिया बेटा-पुतोहुक माथ परक रेखा घिचा गेल रहनि। 'माय बूढ़ भ'क' भसिया गेल छथि। संगे जयतीह तँ ओतहु बदनामिये हैत। ओतहु तँ प्रवासी सभ भरले छथि।'

बेटा चिन्तनक डोरि पकड़ि तीनू लोक मे विचरय लागल- बाबू तँ तैयो चुपचाप पड़ल रहैत छथि। माय किछु नहि बूझैत छथि। हद्द छथि ईहो। एखनधरि गमारे बनल छथि। हिनका सभक एडजस्टमेंट गामे मे भ' सकैत छैनि। ओ एकझक्के बाजि उठल—'माय आब अहाँ दुनू गोटे गामे चलू। एतय एसगर-दोसगर रहैत छी, ककरो सँ पटबो नहि करैत अछि।'

क' देलक हमरा बेटा-पुतोहु कैँ, डाही नहितन...। माय जेना झमाक' खसली। से कियैक, अंजनियाँ मायक चालि कहलियै तँ एकरा सभक मोने-मिजाज बदलि

गेलै। आब कोनो संदेह नहि जे ओ नट्टिने नहि, हाँकल डायनो अछि।

ओ किछु बाजि नहि सकली। पूछय चाहैत छली जे वीजाक टाका वापस हेतनि वा नहि, मुदा कंठ अवरुद्ध भ' गेल छलनि।

बड़का-छोटका बेटा संगहि बाजल—'एहि घर कैँ बेचिये देबै।' हमर एक टा मित्र डेढ़िया देब' लेल तैयारो अछि।' ई स्वर छोटका के रहै।

सत्ते कहने रहथि वृद्धा—'बहिन, राम-लखन के जोड़ी छथि हमर बेटा सभ। एक टा बेटा गामे रहबाक आदेश देलनि तँ दोसर घरे बेचबाक विचार देलनि।'

हम चोट्टहि घुरि अयलहुँ। बड़ दुख भेल। मोन तिक्त भ' उठल।

किछु अन्तरालक बाद फेर क्यो केबाड़ पिटलक। केबाड़ खोललहुँ तँ वैह छलि। थाकल-हारल निरीह वृद्धा। आबिक' सोफा पर बैसि गेलीह। निर्दोष आँखियें हमरा दिस तकैत बजलीह, 'अहाँ अपन काज वाली कैँ कने पठा देब? आइ बड्ड काज अछि। हम थाकि गेल छी।'

—'मुदा ओ तँ...।'

—'हँ-हँ, कोनो बात नहि...। अपन संतानक अधर्म जखन हम उघि लैत छी तँ दोसरक जाति की... धर्म की...।'

माछ

एम्हर किछु दिन सँ हमरा काकाक स्वभाव मे एक टा विचित्र बेचैनी देखार पड़ि रहल छल। सभदिन असम्पृक्त आ एकांत मे चिंतनलीन काका घरक गतिविधि मे बहुत हस्तक्षेप कर' लागल रहथिन। घरक सभ गोटे जखन खाए लेल बैसय तँ लग आबि क' सबहक थारी देखथि। बाटी मे जँ कोनो रसगर तरकारी देखथि तँ प्रसन्न भ' उठथि। आँखि पसारि क' पूछि बैसथि' की बनलैए? माछ! आ संयोग सँ जँ माछ बनल रहय तखन तँ ओ नेना जकाँ थपड़ी बजब' लागथिन। हुनकर ओहि प्रसन्नता सँ माछक स्वाद बढ़ि जाइत छलै।

काका माछ खाइत नहि छलाह मुदा खुआब' के ललक हुनका मे बहुत छलनि। काकी सेहो माछक प्रेमी छलि। ओ अपनहुँ खाइत छलि। माछक प्रति हुनक लगाव तँ तेहन छलै कि ओ परिवारक परपरागत धर्म-निष्ठो केँ अनठिया दैत छलि। की वृहस्पति की रवि...। दिनक कोनो प्रभाव माछक खरीदारी पर नहि पड़ैत छल।

पुतहु केँ सासुक ई चटोरपन नहि नीक लगनि। ओ विरोध करथि तँ काकीक तामस कोनो ने कोनो रूपें बहरा उठनि। तमकि क' भनसाघर मे पैसथि आ एम्हर-ओम्हर कर' लागथि, 'हे भगवान! ई हाथ पयर बनौने रहिह'! हमरा ककरो खुशामद नहि अछि। अपने रान्हब... अपने खायब! छोड़ि दै जा हमरा.. जँ एतेक भारी लगैत छिय तँ।'

पुतहु केँ नीक अवसर भेटनि। काकीक उलहन-उपराग केँ हुनकर इच्छाक खोल ओढ़ा क' बहरा जाथि, ओहिनो हुनका सभ केँ माछ बनायब बड्ड भारी लगैत छलनि। सोझाँ सोझी भात-दालि बना क' बहरा जाथि। बड़की पुतहु केँ सुतबाक बड्ड ब्याधि छलनि। हुनका होइत छलनि जे कखन भनसाघरक काज खतम हुअए कि जा क' एक पक्कड़ सूति जाय। एना मे माछ बनेबा मे घंटा-दू घंटा समय तँ बेरबाद भ'ए जाइत छलै। धियापुताक की अछि। खेबाक मन हेतै तँ होटलो मे एक-आध प्लेट खा लेत। घर मे के ई गीज-गाज करय। मुदा हम देखैत छलहुँ, काकी

केँ पुतहु सबहक एहि व्यवहार सँ कोनो बेसी फरक नहि पड़ैत छलनि। हुनका जखन मोन होइत छलनि तखने एक किलो, आध किलो, पावो भरि, जतबे होइत छलनि ततबे मँगा लैत छली। छोट वा पैघ, कोनो चलैत छलै।

ई कोनो नव सेहन्ता नहि छलनि हुनकर। हुनका घर मे आरंभहि सँ मत्स्य-प्रेमी होइत आयल छल सभ गोटे। पहिने एतेक महगी नहि छलै। बड्ड सुभीता सँ माछ भेटैत छलै।

अतीतक गप भ' गेल। हमरा घर मे मछुआरिनक एक टा परम्परा छल। प्राय: एक दिन बीच क' क' गोढ़िन माथ पर सिलबरिया कठौत मे टटका माछ लेने अबैत छलि। रंग-बिरंगक। कोन रोहू, कोन भुन्ना, कोन बुआरी कतेक नाम कहल जाय।

काकी कहैत छलखिन 'माघ मे बुआरी आ चैत मे सौराठी जे नहि खयलक ओ की माछ खाय बला?' मने, एहि दू मास मे दुनू माछक स्वाद दुर्लभ होइत अछि।

राति मे जखन काका घूमि-टहलि क' अबैत छलाह तँ बहुत प्रसन्न रहैत छलाह। हुनकर पहिल सवाल होइत 'आइ कते हाथ भोजन?' हमरा सभ मे सँ कियो कहै, 'पाँच हाथ' सुनिते काका थपड़ी बजा देथिन। पाँच हाथक मतलब होइत छलै रोहू माछ! रोहू माछ हुनका बड्ड पसिन्न छलनि। ओकर बड़का मूड़ा हुनका परसल जाय, जकर रेशा रेशा ओ स्वाद सँ खाइत छलखिन। कहैत छलखिन, 'रोहूक मूड़ा खेनाइयो एक टा कला थिकै। सब नहि खा सकैत अछि।'

सत्ते हम सब तँ एखन धरि राय बेनमा क' दैत छियै। खयलै नहि होइत अछि। काकी ई भोजन बड्ड मनोयोग सँ बनबैत छलीह। आन सनातनी परिवार जकाँ हुनका घर मे 'मछाह' शब्दक चलन नहि छल। एहि कारणें भनसाघर मे कोनो तामो-झाम नहि छल।

समय बीतल आ अपना संगे परिवारक कतेको परिपाटी बहौने चल गेल। बेटी सबहक बियाह-दान भेलनि आ नव-नव संबंधक जोर बढ़ि गेल। एहि घर मे पुरान सभ टा स्वाभाविकता, नियम आ परम्परा छटपटा क' दम तोड़ि देलक। एक टा बृहत परिवारक भरण-पोषण करैत काका-काकी जेना पस्त भ' गेला।

खेबा-पीबाक सेहन्ता कतहु भटकि गेलै। आर्थिक दबाव कने बेसिये बढ़ि गेलै। समस्या तँ जेना मुँह बौने ठाढ़े छलै। रंग-विधिक क्लेश सबहक मन उचाट क' देलकै। आ एक दिन काकाजी मासु-माछ खेनाइए छोड़ देलनि।

मुदा काकी नहि छोड़ि सकलि। माछ देखिते हुनक चेहरा चमकि उठैत छलनि। ओ तत्परताक संगे काटय बैसि जथि। कालक्रमे भनसाघर सँ अधिकार च्युतो भ' गेल छली। पुतहु सबहक आगमनक बाद एक टा सीमित घेरा मे रोगग्रस्त देह लेने बैसल रहैत छलि। तैयो नहि जानि कतय सँ हुनका मे स्फूर्त्ति आबि जानि। बड्ड धैर्यक

संगे एक-एक टा माछ आँगुर मे फँसा-फँसा छाउर मे लपेटैत ओकरा काटने जाथि। ताज्जुब तँ तखन होइ जखन माछ काटैत हुनक सभ तकलीफ दूर भ' जाइनि।

काकी रोगाहि भ' गेल छलि। एक टा नहि, कतेको प्राणघातक रोग...। मुदा जिजीविषाक अन्त नहि छलनि। काकाक सेहो एहने दशा छलनि। मुदा ओ अपन सब तकलीफ केँ झटकैत रहैत छला। वृद्ध देह मे युवा मस्तिष्कक स्वामित्व छलनि जे हुनकर स्फूर्त्ति केँ कनिक्को कमय नहि दैत छलनि।

मुदा पाचन शक्ति यदा-कदा धोखा द' दैत छलनि। खेनाइ-पिनाइ मे दुनू गोटे केँ परहेज करबाक रहनि।

माछक बात जखन होइ तँ डाक्टरक सलाह मशविरा केँ तक्खा पर राखि देल जाय। भरि पेट माछ खाथि, बाद मे हुनक जे हाल होअए। घरक पुतहु सभ, एतय धरि जे धियो-पुताक बीच हुनक एहि जिह्वा-लौलक मजाक उड़ायल जाइत छल।

कखनो-काल बेटा बगल मे बैसि क' परिहास करय 'माँ, तू तँ गोढ़िन भ' गेलैं। एते कतौ लोक माछक पाछाँ भागय।' काकीक मुख पर निश्छल मुस्कान पसरि जानि। बेटाक कोनो गप हुनका कहियो नहि बेधैत छलनि। ओ मने-मन अँखियासथि 'एकरो तँ पहिने बहुत पसिन छलै माछ... मुदा आब तँ स्वादे बदलि गेलैए।' काकी अपना मन केँ परतारथि, 'हँ, बाल-बच्चेदार भेला पर बहुत किछु अहिना बदलि जाइत छैक।' ओ किछु बाजि नहि सकथि।

धीया-पुता सेहो बेरा-बेरी माछक चर्चा घृणित भावें करय। बड़की पोती कटाक्ष करय, 'राम-राम! मच्छी आयल अछि...।'

'छी...छी! हम तँ नहि खायब!' बड़का पोता नाक दाबैत निकलि जाय।

छोटका पोता आबि क' दादी सँ लिपटि जाय, 'दादी, ? चिकेन मंगा न!.. मँगा ने दादी... हमहूँ माछ नहि खयबौ।'

कतेको बेर बेटी सबहक जुटान भेला पर काकी खास क'क' पुतहु केँ संबोधित करैत एके कथाक पुनरावृत्ति बड्ड सौजन्यक संगे करथि। एहि कथाक सूत्रपात कोन अंतरंग मनोवेग सँ होइत छल आ कतय विलीन भ' जाइत छल, ई आर कियो नहि बूझि सकैत छल। बेटी सभ चुपचाप सुनैत रहैत छलि। काकीक नैहरि मे छल एक टा बुढ़िया। माछक एतेक लौल छलै ओकरा कि कोनो ने कोनो विधियें जोगाड़ कइए लैत छलि। पोखरि-झाँखरि मे नहाए गेली कि गोंढ़ि सभ सँ माँगि लियए आ आँचरे मे समेटने चलि आबय। कतहु जँ रान्हबाक सुभीता नहि भेलै तँ चुल्हाक आगि मे पका नोन-मेरचाई ध'क' खा' लियए। अहिना खाइत-पिबैत ओकर उमेर कटि गेलै। भाग बाली छलि, तखन तँ खाइते-पिबिते स्वर्ग चलि गेलि।

ई खिस्सा कहैत-कहैत काकी विह्वल भ' उठथि, हुनका पूरा विश्वास छलनि

कि जे स्त्री माछ-मासुक सौखीन होइत अछि, ओ सधवा मरैत अछि। काकीयोक एहि सौखक पाछाँ कतहु ने कतहु अदृश्य रूपें ई कामना पनपि गेल छलनि। मुदा ई तँ हुनक व्यक्तिगत कामना छलनि। एहि भावक कदर कयनिहारक हाथ ततेक संकुचित छलै कि ओ सभ समेटिये नहि सकैत छल।

कखनो काल काका कहैत छलखिन, 'बुढ़िया केँ ठीक सँ खुआबै जा। माछ तँ जरूर खुआब'। के कहलकए कखन टें बाजि जाय।' काकी एतबा सुनिते जरि क' छाउर भ' जाथि। हुनका काकाक सभ बात मे व्यंग्येक पुट नजरि आबनि। ओ भन-भन शुरू क' दैत छलि।

काकीक खसैत स्वास्थ्य काका केँ चिंतित करैत छलनि मुदा देखार मे ई बात नहि बुझा पड़ैत छल। बेसी काल नोक झोंक चलिते रहय। बुढ़ापाक ई मौसम पतझर मे जंगल जकाँ कखनो काल सुखायल आ सुन्न लागय। दू टा ठूठ छला, जकर पात तँ हरियर छलै मुदा टूटि क' दोसर डारि सँ सटि गेल छलै। सबहक अपन-अपन व्यस्तता छल। अपन-अपन परिवार छल। एक दिन अहिना काका कहने छलखिन, 'तों सभ भाय बहिन अपन-अपन बाल-बच्चा संगे एक-एक टा फोटो खिंचा क' हमरा कोठरी मे टाँगि दे।' बड्ड सहज ढंगे कहने रहथि। हुनकर एहि तात्कालिक आदेशक पालन करब ककरो जरूरी नहि बुझा पड़लै। हुनकर बहुत रास बात एहिना क' पथिया मे खसि पड़ैत छल।

साओनक मास शुरू भ' गेल छलै। आडम्बर आ पाखण्ड सँ कोसो दूर हुनका परिवार मे धर्मक देखाबटी कैलेंडर टंगा गेल छल। पहिने सामिष भोजनक मादे मासक कोनो शर्त नहि होइत छल। साओन होइ कि भादव, खयबा-पीबा मे कोनो परहेज नहि कयल जाइत छल। मुदा आब खुआबय-पियाबय बला हाथ बदलि चुकल रहय। नव-नव रीति-रेवाजक चलन भ' गेल रहय।

पुतहु जतेक धर्मपरायण नैहरि मे नहि छलीह, ततेक सासुर मे बनि बैसल छलीह। एहि बरख ओ साओन मे माछ-मासु वर्जित क' देने रहथि।

ई अद्भुत संयोग छल कि एहि बरख साओन चढ़िते काका-काकी दुनू गोटेक स्वाद माछ पर आबि बैसल छलनि।

भोर सँ काकी बेर-बेर बड़का पोता केँ कहि रहल छलि, 'बाउ, दादा लेल माछ आनि दही। हुनका खयबाक मन होइत छनि तों सभ नहि खाइहें, मायो नहि खयतौ। हम सब खयबै।'

काकी सहमिते कहने छलि। अपन बात केँ ओ तेहन हल्लुक करैत कहने छलि जेना कहनहि नहि होथि। मने-मन ओ भेटय बला जवाबक तीक्ष्ण धारक बाट सेहो ताकि रहल छलि मुदा मनक कोनो कोन मे एक टा आशा सेहो टांगल छलनि जे

भ' सकैए, हुनक प्रस्ताव पारितो भ' जाइ। भनसाघर सँ बड़की कनियाँ भौंहु चढ़ौने बहरेली, काकीक सीध मे ठाढ़ भ' क' अपना केँ विजयी घोषित करैत बाजि उठली, 'केहन गप करैत छथिन माय। बाबूजी कहने छथिन साओन मे ई सभ किछु नहि बनतै।'

अपन बात ऊपर राखबाक, कला मे माहिर कनियाँ एक टा आरो तीर फेकलनि 'इहो तँ मना कयने छथिन।'

माय चुप भ' गेलि। सांइये-बेटा केँ माध्यम बना क' ओ जेना हुनक इच्छाक दमन कयने छलि, से हुनका भीतर धरि आहत क' देलकनि। ओ चुपचाप चद्दरि ओढ़ि क' सूति रहलि।

भोर मे काका उठला। ओ जलखै केलनि आ अखबार पढ़ि क' बाहर मे आबि क' बैसि गेलाह। पूरा दिन आने दिन जकाँ कने सुखद, कने नीरस बीति गेलनि।

साँझ मे हुनका छाती मे बड़ी जोरक दर्द उठलनि। अस्पताल जेबा सँ पहिने कनियाँ सँ कहलखिन, 'कनियाँ... अहाँ केँ सासु केँ माछ खुआ देबाक चाही... की साओन... की भादव...। आब तँ बेचारी खाइयो नहि सकतीह भरिसक...।'

पार्टी

भनसाघर मे काज करैत सीमा फोनक रिंग सुनिते अकच्छ भ' उठलि अछि। एहि बीच निरन्तर बजैत ई घंटी ओकर जीयब मोस्किल क' देने अछि। रिंग कयनिहारो केँ ई बुझबाक चाही जे क्यो सदिखन चोंगा कान लग धयने नहि बैसल रहैत अछि।

ओ धमकैत टेबुल लग अयली। मोबाइल उठाक' देखलनि। गामक नंबर छलै। हुनका बूझल छलनि, सासुक फोन हेतनि। जखन-तखन वैह बटन टिपैत रहैत छथि। गाम मे कोनो काज-धंधा तँ होइत नहि अछि, किछु नहि फुरायल तँ मोबाइलक बटन दबा दियौ।

एहि तरहें जखन-तखन सासुक फोन करब सीमा केँ नहि सोहाइत छनि। कतेक बेर तँ ओ फोन उठबिते नहि छथि। कखनो उठबैतो छथि तँ कोनो बहन्ने जल्दीए राखि दैत छथि।

बूढ़ा-बूढ़ी केँ सदिखन पोते-पोतीक आवाज सुनबाक मोन होइत रहैत छनि। आब हुनका सभक सौख-मनोरथ के सदिखन पुरबैत रहौक।

सीमाक जीवन शैली आ हुनकर सासुक जीवन शैली मे धरती-आकासक फरक रहै। ई बात हुनकर सासु बुझिते नहि छलि। सीमा अपन मंद बुद्धि सासु केँ कोना बुझौथिन जे हुनकर समय कतेक मूल्यवान होइत छनि। भोरे-भोर बच्चा सभक टिफिन तैयार करब, दिन मे शॉपिंग लेल जायब, जॉगिंग, वाक, पार्टी... कनियों पलखति अछि कहाँ जीवन मे।

गामक मनहूस आ एकरस परिवेश केँ मोन पाड़िते ओ काँपि जाइत अछि। भरि दिन गामक बेकार बुढ़िया सभक संग ओकर सासु बिना मतलबक दुखरा कनैत रहैत छथि।

—'हूंह! दुखरा गढ़बा मे तँ हुनकर कोनो जोर नहि छनि।'

ओकर मोन तिताह भ' उठलनि—जेहने सासु, तेहने ससुर! बिना नागा फोन करताह। लगैत अछि जेना कोनो ड्यूटी बजबैत होथि। जेना फोन नहि करताह तँ केओ नालिस क' देतनि। फोन रिचार्ज करब' पड़नि तखन ने बुझितथि! बैसल-

बैसल दस हजार टाका हाथ मे पहुँचि जाइत छनि तँ खरचा करबाक बहन्ना तकैत छथि।

पछिला फगुआ मे गाम गेल रहथि तँ ओहिठामक ताम-झाम देखि हुनका चकबिदोर लागि गेल छलनि। दू-दू टा काजवाली राखल गेल छलै। सासु तँ खढ़ो केँ दुख नहि दैत छथि। कहैत छलीह, आब तँ हमरा सँ चललो नहि होइत अछि। आँखियो सँ नहि सुझाइत अछि। लोहियाक तीमन जरि जाइत अछि।

—'आरामक आदति भ' गेला पर एहिना होइत अछि।' ओ मनहि मन बजली। गाम सँ घुरिते सीमा अपन घरबला केँ चेतौनी देने रहथि। बड्ड प्रेम सँ बुझौने रहथि—'पाइ लुटयबाक लेल नहि कमाओल जाइत अछि मानिक। एंड़ी-चोटी एक करय पड़ैत छैक। अहाँ केँ की बैसले ठाम भेटि जाइत अछि?'

बुद्धिमती आ संचयी पत्नीक हल्लुक सन संकेत हुनक आँखि खोलि देलकनि। अगिला मास सँ तीन हजार टाका गाम पठयबा लेल कम क' देल गेलै।

माय-बाप बुझलनि जे बेटाक खरचा बढ़ि गेल हेतै, तें कमे पठौलक। भानस करय वाली हँटि गेल। दबाइक पाइ मे जोड़-तोड़ होब' लगलै। अवस्थाक संगे देह कमजोर पड़य लगलनि। रूग्ण तन-मन केँ अपन धीयापूताक दूर रहब अखरय लगलै। एहना मे फोने टा एक टा माध्यम बनि गेल रहै।

फोनक घंटी निरन्तर बाजि रहल छलै। कने काल बजैत-बजैत उपेक्षा पाबि स्वत: बन्न भ' गेलै। सीमा तँ जेना कान मे तूर ठूसि लेने छलि। ओ अपना केँ कने बेसीये व्यस्त क' लेने छलि। बच्चा सभक आ घरबलाक अयबाक समय भ' गेल रहै।

थोड़ेक कालक बाद फेर घंटी बजलै। एहि बेर सीमाक मोन भेलै जे एकर स्वीचे ऑफ क' दियै! ओ घूमि गेलि दोसर दिस।

गाम सँ पड़ोसिया ककाक फोन रहनि। एक टा वैह सभ रहथिन जे सीमाक सासु-ससुरक खोज-पुछारि करैत रहथिन। ओना तँ बेटाक गाम छोड़लाक बाद हुनका सभक सभ चीज भगवानेक भरोस पर रहनि।

सीमाक ससुर संसार सँ विदा भ' गेल छलखिन—यैह समाद छलै गाम सँ।

मानिक फोन राखि देलनि आ माथ पकड़ि बैसि रहला। सीमाक भौंहु तनि गेलनि। रूच्छ होइत बाजलि, 'की भेल, फेर पाइ मँगैत छथि की?'

—'नहि, गाम जयबाक अछि। बाबूजी नहि रहलाह...।'

मानिकक मोन पघिलि रहल छलनि। बारह बजे राति सँ एखनधरि कतेक समय बीति गेलै आ ओकरा एखन पता चललै...। आँखि नोरा गेल रहनि।

मृत्युक भयावहता सँ सीमा कने काल लेल सहमि उठलीह। मुदा फेर अपना

केँ थोड़ेक हल्लुक अनुभव कयलनि। तनाओ जेना चुप्पेचाप बहरा गेलै। ई हल्लुकपन कतहु ने कतहु मोन मे उपजल निश्चिन्तता सँ जनमल छलनि। एक टा फाजुल खर्च घटबाक निश्चिन्तता...।

ओहि दिन आनन-फानन मे सामानक पैकिंग भ' गेलनि। बच्चा सभ कने अप्रतिभ छल। पूछि बैसल—'एतेक जल्दी कत' आ कियैक जा रहल छी मम्मी?'

सीमा बेटी केँ कोरा मे उठबैत पुचकारैत बाजलि, 'दद्दाक पार्टी मे जायब बाबू।'

कुकुर

'ई कुकुर बताह भ' गेलैए भरिसक।' बारह-तेरह बरखक छौंड़ा कनखी सँ कुकुर केँ तकलक आ फेर अपन बंसी पानि मे डुबाब' लागल।

भोरे सँ ओ एहि पोखरिक महार पर बैसल अछि। जखन घर सँ चलल छल, तखने सँ ई कुकुर ओकर पछोर ध' लेने छल। जखन ओ दुपहरिया मे घर मे एकसर रहैत छल तँ बेसी काल सोझाँ बला सपाट मैदान मे बेमतलब दौड़ैत समय काटैत छल। आ ई कुकुर ओकरा पाछाँ-पाछाँ भागल घुरै। अपन हिस्साक सोहारी मायक लाख फटकारक बादो ओ ओहि कुकुर केँ तोड़ि क' द' दैत छलै। ओ पालतू नहि छल मुदा अन्नक छोट-छोट टुकड़ा दुनूक मध्य मित्रताक एक टा मोहक संरचना तैयार क' देने रहै। भोर सँ एखनधरि ओ कतहु नहि गेल छल।

छौंड़ा बंसी सँ नजरि हटा क' ओकरा दिस तकलक, अजगुत अछि। एकरा भुखो-पिआस नहि लगैत छै। ओ सोचलक। ओकरा पेट मे तँ भूख सँ मूस दौड़ि रहल छलै। अपना भूख लगलै तँ कुकुरोक चिंता भेलै। मुदा ओ तँ अपन जीह लपलपबैत पोखरिक चारू भर चक्कर लगबैत मजा मे बेर-बेर ओकरे लग चलि अबैत छल।

ई पोखरि गामक सिमान पर छल। तकरा बाद पक्की सड़क शुरू भ' जाइत छलै जे शहर दिस जाइत छलै। पोखरिक महार पर लगभग सय बरख पुरान गहींर जटा-जड़ि बला बूढ़ बड़क गाछ छल। एहि गाछक नीचाँ राही-बटोही आराम करैत छल। बेसीकाल गामक लफुआ छौंड़ा सभ जे नुका-चोरा क' स्कूल सँ भागि जाय, एहिठाम जमा भ' क' माय-बाप सँ चोराओल पाइ सँ बीड़ी-सिकरेट धूकैत रहैत छल। कखनो काल सिपाही एकरा सभक पछोर धेने अबै तँ ई सभ भागि क' दूर सघन झाड़-झाँखरि मे नुका जाय।

पोखरिक महार सँ हँटि क' उत्तर भर बेस घनगर गाछ-वृक्ष रहय। सरकारी भवन निर्माणक काज चलि रहल छलै। गाछ-वृक्ष काटि-काटि क' ट्रैक्टर पर लदाक'

लकड़ी सभ एहि सड़क सँ भ' क' शहर जाइत छल। एही सड़क सँ होइत ओकर माइयो नित्तह खूब भोरे काज पर जाइत छल।

छौंड़ाक नजरि बंसी सँ हटि क' बेर-बेर सड़क दिस उठि जाइ। ओ उठल आ ठेहुन धरि पानि मे उतरि आयल। पोखरिक महार थाल आ माटिक ढेर सँ पटल छल। आइकाल्हि पोखरिक सफाइक काज चलि रहल छलै। लोक सभक फेकल कूड़ा-कचरा आ घास-फूस साफ करबाक लेल भोरे-भोर सफाइकर्मी जुटि जाइत छलै।

नित दिन गामक स्त्रीगण, पुरुष, बच्चा जिनका सभ केँ पानिक सुविधा नहि छल, दूर-दराज सँ नहयबा आ कपड़ा पखारबाक लेल आबि जाथि। चरबाहा सभ गाय-महींसक झुंड नहयबा लेल पानि मे उतारि दैत छल। एकरा सभक सम्मिलित प्रयास सँ पोखरि मे सुविधापूर्वक गंदगी पसरि जाइत छलै। पोखरिक पानि विषाक्त भ' गेल छलै।

एक दिस लोकक पैघ समूह पोखरि केँ गंदा कर' मे लागल छलै तँ दोसर दिस किछु एहनो लोक सभ छलै जे एकरा बचेबाक आ स्वच्छ रखबाक प्रयास क' रहल छलै।

लोकक पसारल गंदगी केँ साफ करबाक लेल दुपहरियाक तिक्ख रौद मे जखन सुरूजक किरिन आगि उगिलैत परोपट्टा केँ झरकाबैत रहैत छल, किछु मजूर पोखरि मे उतरल रहैत छल। कारी खटखट, बलिष्ट आ स्फूर्त्तिवान। पैघ-पैघ जाल पोखरि मे जुमा केँ फेकय आ टीन, कचड़ा, पन्नी, अकटा-मिसिया, खपटा-खुपटी बझा क' बहार क' लेअय। गंदगीक मध्य स्वच्छताक ई देवदूत सभ थाल-कादो आ सड़ल-गलल वस्तु सभ केँ हाथ सँ एना बीछय जेना अकस्मात बत्ती मिझा गेला पर चिक्कन जमीन पर खसल सिक्का टोहैत होअय।

अपन बंसी मे बोर फँसबैत ओ छौंड़ा ठेहुन भरि पानि मे ठाढ़ ओकरा सभ केँ देखने जा रहल छल। ओ देखि रहल छल आ ग्रहण क' रहल छल वैह कौशल। कचरा मे लिथड़ल रहबाक, रौद मे चमड़ी झुलसेबाक...।

ओकरा सबहक काज आब समाप्ति पर छलै। छौंड़ाक पूरा ध्यान ओम्हरे अटकल छलै। पाछाँ मे ठाढ़ कुकुर चारि बेर भूकल, तखन जा क' छौंड़ाक तंद्रा भंग भेलै। ओ जल्दी-जल्दी बंसी एम्हर-ओम्हर नचौलक। बड्ड प्रयासक बाद छोट-पैघ किछु माछ पकड़ि पओलक।

दुपहरिया समाप्ति पर छलै आ नहुँए-नहुँए पोखरिक महारक हलचल खतम होम' लगलै। धोबिन सभ खीचल कपड़ाक मोटा माथ पर उठा थाकल डेगें घुरय लागलि। चारि डेग चलि क' कियो-कियो रुकि जाय। पाछाँ उनटि केँ तामसें भेर

भेल चिचिअबैत, अपन नान्हि टा ननकिरबी कें फटकारैत ओकरा जल्दी-जल्दी चलबाक लेल दबारि रहल छलि। ओहि बेदरा कें धीपल बाट पर खालिये पयर आ फूलल पेटक संग चलनाइ दूभर भ' रहल छल। खसैत-पड़ैत ओ कोहुना क' माय लग पहुँचल। फेर नहुँए-नहुँए ओ सभ कोनो गली मे हेरा गेल।

छौंड़ा टकटकी लगौने ओकरा सभ कें गली मे हेरायब देखैत रहल। ओकरा अपन माय मोन पड़ि गेलै। ओ नीक जकाँ अपन माय सँ बतिआइयो नहि सकैत अछि। माय बड्ड भोरे चलि जाइ छै आ जखन घुरै छै तँ ओ अपने सूति रहैत अछि। आइ जे होइ, ओ नहि सूतत जाधरि माय आबि नहि जयतै। छौंड़ा निर्णय क' लेलक।

ओ छोट-पैघ दस टा माछ पकड़ने छल। बंसी पाथय मे ओ ओना माहिर छल मुदा आइ ओकर ध्याने भटकि गेल रहै। दसो टा माछ कें ओ एक टा पन्नी मे जमा क'लेलक। चमकैत, छलछलाइत माछक स्वाद एखने सँ ओकरा जीह मे उतरि आयल छलै। माय कें अबिते चट् द' पकयबा लेल कहतै जँ माय आबि गेल होइ। एक टा कल्पना मन मे अभरलै।

भात संग एहि माछक झोर कतेक स्वादिष्ट लगतै...। भूख सँ ओकर देह बेजान भ' रहल छलै मुदा स्वादिष्ट भोजनक कल्पना ओकरा भीतर स्फूर्त्ति जगा देलकै।

ओ माछक पन्नी उठौने तीन सीड़ही टपैत महार पर चढ़ल। छौंड़ा एकबेर आँखि उठा क' पोखरिक चारू भर तकलक। कियो कत्तहु नहि छलै। साँझ भ' गेल छलै। कने काल लेल पोखरिक सुनहट्ट ओकरा सकपंज क' देलकै। ओकर आँखि बड़क गाछ तर ठहरि गेलै। दू टा लफुआ बड़क गाछ तर ठाढ़ सिकरेट धूकि रहल छलै। ओकरा देखि क' नहि जानि किए छौंड़ाक पूरा देह मे ठंढीक एक टा तीक्ष्ण लहरि पैसि गेलै। ओ तँ बेसी काल पोखरिक महार पर खेलाय लेल अबैत छल। मुदा आइ धरि एहि दुनू छौंड़ा कें नहि देखने छल। ओ मोसकिल सँ अपन गरदनि घुमबैत कुकुर दिस तकलक जे एखनधरि ओकरे चौबगली चक्कर काटि रहल छलै। ओ डरक दुइ तार सँ घेरायल छल। भरि दिनुका भूखल ई कुकुर ओकर माछे पर घात लगौने बैसल अछि आ दोसर दिस ई दुनू लफुआ...।

छौंड़ाक अविकसित बालमन ओकरा सभक मादे किछु सोचि नहि पाबि रहल छल। खाली ओकरा सभक आँखि सँ डेराओन भाषा कने-मने बूझि रहल छल।

कुकुर ललचायल आँखि सँ माछ दिस तकने जाँ रहल छल आ संगे-संगे जोर सँ भुकियो उठैत छल। रुकि-रुकि कें भुकैत ओ छौंड़ाक चारू भर चक्करो लगा लैत छल। ओकरा आवाज मे एक तरहक बेचैनी छलै जे ओ छौंड़ा आ गाछक नीचाँ गिद्ध दृष्टि सँ छौंड़ा दिस तकैत ओ लफुआ सभ नहि बूझि पाबि रहल छल।

छौंड़ा माछ बला पन्नी कसि क' पकड़ि लेलक। ओ सहमैत दू डेग बढ़ल।

जहिना ओ बढ़ल, दुनू लफुआ झपटि क' दौगल आ ओकरा हाथ सँ माछक पन्नी छीनि लेलक। छौंड़ा हतबुद्ध भ' उठलै। कुकुर भूकि-भूकि क' बताह भेल जाइत छलै।

जहिना दुनू लफुआ आगाँ बढ़ल कि कुकुर ओकरा सभ दिस झपटि पड़लै। ओ दुनू टा कें विकट ढंगे घेरि लेलक। एक टा कें तँ ओ भम्होरिये लेलकै। कुकुरक एहि आकस्मिक घात लेल ओ सभ किन्हुँ तैयार नहि छल। माछ फेकि कें माथ पर पयर धयने भागल।

कुकुर भूकब बन्न क' देलक। पन्नी सँ बहरा क' दू-चारि टा माछ एम्हर-ओम्हर भागि रहल छल। छौंड़ा ओकरा समेटलक आ अपन तरल आँखिये कँपैत आँगुर सँ कुकुरक आगाँ राखि देलक। कुकुर एखनो अपन नमहर जीह निकालि क' हाँफि रहल छलै। ओ एकबेर सोझाँ राखल माछ कें सूँघलक आ कृतार्थ भावें दुनू टाँग पर छौंड़ाक सोझाँ ठाढ़ भ' गेल।

सपनाक संसार

छत पर सुखाइत गहुमक दाना मे लागल छल पाँच टा लुक्खी। एके संगे पाँचो गोलाइ मे तेनाक' जुमल छल कि बुझा पड़ैत छलै, कोनो धारीदार चक्र हुअए। नान्हि-नान्हि टा मुँह मे छोट-छोट आँगुर सँ दाना खाइत लगैत छल जेना दुनू हाथ जोड़ि क' ईश्वर केँ कोनो बातक धन्यवाद ज्ञापित क' रहल होअए। ओ सभ बड्ड सावधान छल। एतेक चौचंक कि कतहु हल्लुको सन आहट भेल नहि कि मैदान साफ। छतक रेलिंग पर बैसल छल एक जोड़ी मैना। गहींर आँखि सँ एम्हर-ओम्हर देखैत। ओ मौका हेरि रहल छल कि कोना गहूमक दाना चोंच मे भरि क' अपन खोंता मे भूख सँ बिल-बिलाइत चुजा सब लग पहुँचि जाय। कत' कहाँ सँ पैरबो सबहक जोड़ा पाँखि फड़फड़बैत पहुँचि गेल। जेना लागलै ओकरे सब लेल गहूम पसारल गेल होअय। बिना कोनो अथ-उत के, बिना किछु परवाहि कयने सब टा पैरबा चुग' मे लागि गेल।

रहरहाँ एना होइत छलै, जखन पिंटूक माय छत पर कोनो अनाज सुखबै लेल दैत छलि। चिड़ै-चुनमुनी केँ तँ जेना भोजे भ' जाइत छलै। दस किलो मे सँ दू किलो तँ ओकरे सबहक हिस्सा मे खपत भ' जाय। एकर सबहक पहरा करब बड्ड कठिन छल। मौगी-मेहरि मानस-भात करत आ कि छत पर बैसि क' पहरा करत। मुदा आइ माय पिंटू केँ खास आदेश देने छथि। ओकरा छत पर किछु काल बैस' पड़तै। पाबनिक गहूम छियै। धो-धा क' माय पसारि देलकै आ पिंटू केँ बेर-बेर कहलक, 'बाउ! देखिहें, एकोटा चिड़ै लोल नहि दौ। ऐंठ अन्न भोग नहि लगै छै।'

पिंटू सहचेत भ' क' देबाल सँ पीठ टिका क' बैसि गेल। एक टा पातर सनहक करची हाथ मे ध' लेलक, जे माय थम्हा क' गेल छलै। कनिके काल मे लुक्खी सभ दोग-सान्हि सँ बहरा आयल। पिंटू केँ छगुन्ता होइ। कत' नुकायल रहैत अछि ई सभ? ओ टकटकी लगा क' छत पर पसरल गहूम दिस ताकि रहल छल। ओकर आँखि लुक्खी सबहक धारीदार देह केँ देखने जा रहल छल। सम्मोहनक तेहन बन्हन मे ओ कसा गेल छल कि ओहि जीव-जन्तु केँ भगेबाक ओकर सामर्थ्य लुप्त भ'

गेल छलै। ओ बिसरि गेल छल कि ओकर माय ओकरा ओतय किएक बैसा गेल छलै। लुक्खी सबहक कोमल देह पर दुलार सँ हाथ फिरेबाक लेल ओकर आँगुर सब-सब करैत छलै।

माइए एक दिन कहने छलै, 'रामभगवान जखन लंका जेबाक लेल समुद्र पर पुल बना रहल छलखिन तखन एक टा नान्हि टा लुक्खियो मुँह मे कनी टा पाथर दबौने पहुँचि गेल छल। बानर सेनाक संगे-संग इहो अपन नान्हि-नान्हि चाँगुर सँ कतेको पाथर पुल पर देने छल। राम भगवान देखलखिन तँ भाव विह्वल भ' क' ओकरा उठा लेलखिन। अति प्रेम सँ जे ओकर पीठ पर हाथ फेरलखिन तँ हुनकर आँगुरक चेन्ह ओकरा पीठ पर पड़ि गेलै। ओकरा बाद तँ लुक्खी जीवे धारीदार होमय लगलै।'

राम भगवान सँ तँ एकरा डर नहि लगलै, ओहो तँ मनुक्खे छलखिन... फेर ओकरा सँ ई सभ एतेक किएक डेराइत अछि। पिंटु केँ ई बात बुझबा मे नहि अबैत छैक। ओ उदास भ' उठल। अयना मे ओ अपन चेहरा कखनो-काल बड्ड गौर सँ देखैत अछि। कतहु ओकर मुँह-कान डेरौन तँ नहि अछि जे ई सभ देखिते भागि जाइत अछि। जखन ओ कोनो लुक्खी या मैना केँ छुबाक प्रयास करैत अछि कि ओ सर्र सँ भागि जाइत अछि। एकरा सभ केँ फुसलेबाक लेल पिंटु कतेको यत्न कयलक। प्रतिदिन अपन थारी सँ रोटीक टुकड़ा बहार क' क' खिड़कीक बहार छज्जा पर राखैत छल। कटोरियो मे पानि भरि क' छत पर रखनाइ ओकर नित्तह काज छलै। मुदा तखन ओकरा बड्ड क्षोभ होइत छलै जखन लुक्खी सब पानि मे मुँहों नहि दैत छल आ कखनो काल करिया कौवा सब दू-चारि घोंट पीबि क' बाटी उनटा दैत छलै। हँ, छज्जी पर धेलहा रोटी क्षणे मे लुक्खी आ पैरबा चट क' जाय। ओकरा सबहक रुचि-अरुचिक ज्ञान पिंटू केँ नीक जकाँ भ' गेल छलै। रान्हल भोजन केँ ओ सभ उपेक्षित छोड़ि दियए आ बिस्कुट, मिठाइक टुकड़ी सभ त' सपासप खा लियए। पिंटू ओकरा सब केँ खाइत देखै तँ प्रसन्न भ' उठय, मुदा जहिना ओकरा सबहक नजरि पिंटू पर पड़य कि उड़नछू भ' जाय। पिंटूक मन मिझा जाइत छल। ओकरा मोन होइत छलै कि ई छोट-छोट पशु-पक्षी ओकरहि घर मे रहितै... ओकरा संग खेलबितै... गप-शप करितै... डरिते नहि...। मुदा आइ धरि ओकर इच्छा पूरा नहि भेलै।

पिंटू माय सँ बेर-बेर पूछय, 'गै माय! हमरा देखिते लुक्खी किए पड़ा जाइत अछि। पैरबो भागि जाइत अछि।' माय लग एहि निरर्थक प्रश्नक कोनो उत्तर नहि होइत छलै। ओ अपना काज मे लागल पिंटूक बात सुनबो नहि करय। ओ तँ एहि फालतू जीव-जन्तु केँ भगेबाक डरेबाक रंग-विधिक जुगुत लगबैत रहैत छली। आइ

तँ ओकरा सभ केँ भगेबाक लेल पिंटूए केँ पहरा पर बैसेबाक जुगुत निकालि लेलक।

पिंटू अपना माय पर मनहि-मन बड्ड तमसा रहल छल।

ओ सोचैत रहल आ लुक्खी गहूम खाइत रहल। मैना, पैरबा आ कौवा सेहो सभ छत पर जमा भ' गेल छल। पहिने एक टा कौवा छतक रेलिंग पर बैसल। बहुत सहचेत भ' क' एम्हर-ओम्हर तकलक। देबालक कोन मे बैसल पिंटू पर सेहो ओकर नजरि ठहरलै। ओकरा अनठबैत ओ नजरि घुमा लेलक भला एहि बच्चा सँ की डरेनाइ! एहि भावक संगे ओ अपन गरदनि बामा-दहिना घुमौलक आ काँव-काँव करैत अनघोल मचब' लागल। लग-दूर बैसल काग सभ केँ ओ अपन कर्कश स्वर-लहरी सँ निमंत्रण पठौलक। कनिए काल मे चारि-पाँच टा कौवा जमा भ' गेलै।

पिंटू कौवाक प्रेम आ साझीदारी पर मुग्ध भ' उठल। ई सभ एसगर भोजन नहि करैत अछि। जा धरि सर-संबंधीक जुटान नहि होइत अछि ता धरि काँव-काँव करैत रहत।

ओह! दुष्ट नहितन! ओकरा मुँह सँ औचके बहरा गेलै। ई सब बाटे तकैत छल! स्वार्थी नहितन...। पिंटू नमहर साँस घिचलक। कौवा जाहिना जमा भेलै कि लुक्खी आ पैरबा एम्हर-ओम्हर भ' गेल रहै।

कौवा सँ ओकरा चिढ़ छलै। रोज भोरे-भोर छत पर टाँय-टाँय कर' चलि आबय। ओकरा अबिते छोट-छोट खूब सुंदर जीव-जन्तुक संसार छिड़िया जाय। ओकर कारी खटखट भोंदू सनहक मुँह कान पिंटू केँ कनियो नहि सोहाबय।

छत सँ एकदम सटल पड़ोसीक बाड़ी मे सघन गाछ वृक्षक झुरमुट छल। मोट-पातर ठारि पर जखन रंग-विधिक चिड़ै-चुनमुनी बैसैत छल तँ पातक सरसराहटि आ चिड़ै चुनमुनक चहचहाहटि ओकरा बड्ड सोहाओन लागै। ओ भोरुका पहर आ साँझुक बेर एक बेर ऊपर एबे टा करैत छल। ओकर सबहक गप-शप सुनय। भरि दिनक अपन परिश्रमक चर्च करैत सभ चिड़ै आपस मे तर्क-वितर्क करैत छल कि चारा पानिक वास्ते कत' जाना चाही, कत' नहि। ओकर सभक रंग-बिरंगक स्वर ओ बड़ी कालधरि सुनिते रहि जाय।

बड़ी काल धरि पिंटू बैसल सोचैत रहल। लुक्खी आ कौवा गहूम खाइत रहल। ओ पीठ टिका क' देबाल पर औंगठि गेल। जाड़क नरम रौद ओकरा अलसा देलकै। लुक्खीक नेना अपन माय सँ किछु कहलक तँ ओ गौर सँ पिंटू दिस तकलक। सहमल गोल-गोल आँखि किछु पल ओकरा निहारैत रहलै, आस्ते सँ ओ ओकरा लग आयल आ फेर सर्र सँ भागि पड़ायल। पिंटूक आँखि मे ओ अपना आ अपना बच्चाक वास्ते बहुत रास सिनेहक चेन्ह देखि लैत छल। ओ एक बेर लयात्मक ढंगे शोर मचौलक तँ कतेको लुक्खी जमा भ' गेलै। पैरबा, जे कौवा सँ डेरा क' रेलिंग पर बैसि गेल

छल, उतरि आयल। ओहो सभ मटकि-मटकि क' एक दोसरा संग गुटर-गूँ करैत पिंटू लग सरकि आयल।

पिंटूक कलेजा धड़कि उठलै। एना तँ आइ धरि नहि भेल छलै। ओ अपन दुनू हाथ ओकरा दिस बढ़ौलक। छोटकी लुक्खी उछलि क' ओकर तरहत्थी पर चढ़ि गेलै। ओकर पेट भरि गेल छलै। मुश्किल सँ गहूमक दस टा दाना ओ खयने हैत। एतबे ओकरा लेखे बहुत छलै। पेट भरलाक बाद अनाजक ढेरी सँ ओकरा कोनो मतलब नहि रहय।

पिंटूक बालमन कतेको गंभीर विषय मे कनेकाल लेल ओझरा गेल।

'... बस, एतबहि ढेरी छै एकरा सबहक वास्ते... !' ओ अपन छोट-छोट हाथ सँ पैरबा केँ पकड़य चाहलक। पैरबा बिना कोनो डर केँ फुदकि क' ओकर हाथ मे चलि आयल।

पैरबा अपन गरदनि आगाँ-पाछाँ करैत गुटर-गूँ शुरू क' देलक। खुशी सँ ओकर देह फूलि उठल छलै। ओकर निर्दोष आँखि मे भय-विस्मय आ संतोषक मिलल-जुलल भाव हेलि रहल छलै। कृतज्ञता सँ भरल अपन नील आँखि ओ पिंटू पर टिका देने छलि। पिंटू ओहि पैरबा केँ अपना कनहा पर बैसा लेलक। फेर ओहि प्रौढ़ाक पीठ पर हाथ फेरैत पूछि बैसल, 'एतेक दिन सँ जे हम अहाँ सभ केँ बजबैत छलहुँ त' किएक नहि अबैत छलहुँ अहाँ सभ हमरा लग? की हम बहुत खराप छी?'

पैरबा अपन दुनू पाँखि फड़फड़ौलक। किछु कहबाक लेल नान्हि-नान्हि लोल खोल' चाहलक, आकि ततबहि मे लगहि मे फुदकैत पीयर लोल बाली मैना बाजि उठल—'तू तँ सभकिछु जनैत छह, फेर कियए पुछैत छह हौ!' पिंटू किछु कहितय आ कि ओ उड़ि क' गाछ पर बैसि गेल।

पीयर लोल बाली मैना ओकरा घरक खिड़कीक ऊपर पैघ सनहक छेद मे पन्नीक खोंता बना क' रहैत छली। बड़ सुंदर छलै ओकर संसार। ओ भोरे-भोर ततेक हल्ला करय कि पिंटूक निन्न खुलि जाय, लगैत छलै जेना ओकरे उठाब' लेल ओ शोर मचबैत छल। ओ अण्डा देने छल। माता-पिता मिलि क' अण्डा सेबैत छल कि एक दिन अचानके पिंटूक छोटका भाइ गुलैंती मारि क' ओकर सभ टा अण्डा फोड़ि देलकै। खोंता केँ गुलैंती मारि-मारि नीचा खसा देलकै।

पिंटू केँ मोन पड़ि गेलै। ओकरा बड्ड कष्ट भेल छलै। ओ चुपचाप कानल छल। दुखी मोन केँ सम्हारैत ओ अपन भाइ केँ कतेको चाट मारि बैसल छल आ बदला मे मायक अंगार बनल आँखिक ताव सेहो झेल' पड़ल छलै, 'तोहर आदम जाति एतेक निर्मम किएक छौ पिंटू!' नेना लुक्खी ट्विट-ट्विट करैत बाजि उठल। पिंटूक बिसरल पीड़ा उभरि आयल छलै।

...ठीके तँ! कतेक निर्मल छैक... कतेक निर्विकार आ पवित्र!...

पिंटू कैँ पड़ोसनी काकी मोन पड़ि गेलै। ओकर ओसरा पर एक टा पिंजड़ा टाँगल रहैत छलै। ओ सदति ओहि मे एक टा चिड़ै कैँ बंद देखैत छल। गरदनि पर लाल धारी, चमकैत हरियर पाँखि बाला सुग्गा। मुदा ओकर पाँखिक चमक मलिन भ' गेल छलै। ओ बेसीकाल फड़फड़बैत रहैत छलै। पिंजड़ा तोड़ि क' निकलि जयबाक ई फड़फड़ाहटि पिंटू कैँ बेचैन क' दैत छलै। ओ जखन ओम्हर सँ बहराबय कि सुग्गा टें...टें करब शुरू क' दै। लागैत छलै जेना कहि रहल हो, 'पिंटू... पिंजड़ा खोलू... हमरा बाहर निकालू...।'

पिंटू दू-चारि बेर पिंजड़ा खोलबाक प्रयासो कयलक मुदा कतौ सँ पड़ोसनी काकी पहुँचिये जाय। ओकर गुड़ारल डराओन आँखि सँ सहमि क' पिंटू भागि जाय।

एक टा दोसर लुक्खी अपन झबरल पुछरी उठौने सर्र सँ ओकर पीठ पर दौड़ैत माथ पर चढ़ि आयल। ओकर पूरा देह सिहरि उठल। खुशी सँ ओकर धड़कन बढ़ि गेलै। डेरौनी काकीक आकृति आँखि सँ पिछड़ि क' कतहु दूर जा खसलै। ओकर निर्दोष आँखि मे ई सभ छोट-छोट पशु-पक्षी अपन घर-अपन खोंता बना लेने छलै। ओ बस सब कैँ देखि रहल छलै, दुलारि रहल छलै।

मोटका लोल बला करिया कौवा अपन पाँखि फटकारैत एम्हर-ओम्हर डोलैत ओकरा लग आबि गेलै। पिंटूक कोरा मे पड़ल पैरबा फड़फड़ायल। पिंटू कैँ ओकर एनाय नीक नहि लगलै। ओ मैना, लुक्खी आ पैरबाक संगे खेलाबय चाहैत छल। एक टा बड्ड छोट चिड़ै उड़ैत-उड़ैत आबि क' ओकरा कनहा पर बसि गेलै। ओकर मधुर स्वर ओकरा कान मे पड़लै तँ ओ भाव-विभोर भ' उठल। यैह गौरैया छलै। जकर घरौआ नाम फुद्दी छल। गौरैयाक ओ नामे सुनने छल। देखबो नहि कयने छल। ओ सब घर-अंगना त्यागि चुकल छल।

बहुत पहिनहि ओकरा कोठरी मे छत सँ सटल रोशनदान मे ओकर खोंता रहै। सुखायल घासफूस आ सिक्की सब सँ बनल। अँगना मे भोर-साँझ हल्ला मचबैत। चीं...चीं... करैत... फुदकैत। ओकर आवाज घूंघरूक रूनझुन सनहक होइत छलै। टुप-टुप दाना चुगै... पहिने मुँह खोलने अपन चूजा कैँ दियए, फेर अपना खाय। अपन दस वर्षक उमेर मे ओ तँ कहियो ई रूनझुन नहि सुनलक मुदा मायक मुँहें सुनैत-सुनैत गौरैयाक सुंदर छवि ओकरा आँखि मे बसि गेल छलै। आ आइ तँ सहजहि ओकरा कन्हे पर बैसल छै...। पिंटू जेना देवलोक पहुँचि गेल छल...।

माय कहियो काल बाजै, 'पहिने अँगना माटि-बालु सँ थापल रहै। फुद्दी-बगरा ओहि मे लोट-पोट करय, फेर बालु मे लोटाबय आ जखन माटि-बालु स्नान भ' जाय तखन कलक कातक नाली लग चल जाय अथवा कोनो जमकल पानि मे नहा

आबय। घरक भीतरे रहैत छै, ताहि सँ मनुक्खक संस्कार आबि गेल छलै। नहेबा-सोनेबाक।' माय परिहास करय।

पिंटूक बाल मन कल्पना लोक मे विचर' लागै। ओकर अपन अंगना मे तँ आब माटिक दरसो नहि अछि, सौंसे खरंजा ओछाओल छै। कतहु घासो-फूसि नहि। ओ अनेरे उदास भ' उठैत अछि। ओकरा लगैत छै जेना सब आदमी अपने मे मस्त होइ। ओकरा लेल कतहु खेलय-कूदय के जगह नहि होइ। बाबूजी कहैत छथि जखन ओ नेना रहथि तँ दूर-दूर धरि सपाट मैदान होइत छल, जतय साँझ मे ओ अपन मित्र-मण्डली संगे कबड्डी खेलाइत छलाह। मारते दोस-महीम छलनि हुनका। सुख-दुख मे संग देनिहार। ओकरा तँ एकसर माय घर सँ बहराइयो नहि दैत अछि।

पिंटू कैँ कियो दोसो नहि अछि। ओकरा दोस सभ सँ डर लगैत छै। ओकरा स्कूल मे एक बेर नवमी के एक टा विद्यार्थी कैँ ओकरे वर्गक एक टा छौंड़ा जे अपना कैँ ओकर 'बेस्टी' कहैत छल, चेन सँ पीटि-पीटि क', छौड़ा सभ संग मिलि क' मारि देलकै। ...ओहि दिन सँ ओकरा दोस्ती सँ घृणा भ' गेलै। वर्गक सभ बच्चा ओकरा हत्यारा बुझा पड़ैत छलै। कतेको मास ओ स्कूले नहि गेल। ओकर सुन्न आँखि निष्ठा लेल औनाइत रहय। मुदा महल दुमहला आ भीड़ भरल चौराहा सभ ओकर मित्रता केर सत्य छीनि नेने छल। ओही बगरा-फुद्दी जकाँ, जे हर मोहल्ला बीच बनल टाबरक डर सँ लापता भ' गेल छल। छिना गेल छल।

ओकरा सभ कैँ तँ जीबाक छलै। चल गेल... दूर बहुत दूर...। पिंटूक सपना केर बगरे-फुद्दी जकाँ छिना गेलै प्रकृतिक कोरा सँ अनिगिनत पशु-पक्षी, ओकर ममतामयी आँचरक छाँह धीरे-धीरे सुन्न पड़ैत गेलै।

'प्रकृति केर कोरा कैँ सुन्न करबाक दण्ड मनुष्य कैँ भोगहि पड़तै पिंटू!' करिया कौवाक कर्कश आवाज पिंटूक सोच कैँ झटकि देलक। ओ कत'-कत' बौआबय लागल छल। उछलैत-कूदैत छोट-पैघ चिड़ै सभ रुकि-रुकि क' ओकरा निहारि रहल छलै। ओकरा सभ सँ गप करैत-करैत पिंटू नहि जानि किए मौन भ' गेल छल।

करिया कौवा फेर बाजल, 'हम सभ जीव-जन्तु प्रकृतिक संरक्षक थिकहुँ पिंटू... मुदा कियो नहि बूझैत अछि! हम तँ अहाँ सबहक गंदगी साफ करैत छी। कीड़ा-मकोड़ा खाइत छी। हमरा सँ एहि फायदाक गुमान मनुक्ख कैँ आइ धरि नहि भेलै।' अगल-बगल बैसल चिड़ै-चुनमुन सभ कननमुँह भ' गेल। कौवा अपन चाँगुर कैँ एम्हर-ओम्हर करैत, लोल सँ गरदनि कुरियबैत अपन दर्द बाँटि रहल छल।

छोटकी लुक्खी आ पैरबा पिंटूक पवित्र शरीरक स्पर्श पाबि पुलकित छल। पिंटू ओकरा सँ पुछलकै, 'छोटकी लुक्खी! की कौवा सत्य बजैए। तोरो तँ ई तंग करैत छौ!'

छोटकी लुक्खी-उदास भ' उठल—'काश! एहि धरती पर सब जीव तोरे जकाँ होइतय।'

लुक्खी ट्विट-ट्विट करैत अपन समर्थन द' रहल छल आकि पिंटूक माथ पर बैसल फुद्दी कोमल लोल सँ ओकरा माथ पर लगातार प्रहार करैत चीं...चीं क' उठल। कि कौआ कसिक' लोल मारलक।

पिंटूक आँखि भक द' खुलि गेलै। कौआक लोलक तीव्र चुभन सँ ओ जागि गेल छल। आँखि तकिते ओ देखलक ...कतहु किछु नहि अछि। माय सोझाँ मे अगिया बेताल भेल ठाढ़ छथि। सोझाँ मे रखलाहा करची सँ माय ओकरा छटपटा देने छलि!...

भ्रम

समय अनचोक्के बदलि गेल छलै। मात्र दस दिनक भीतर लागलै जेना कोनो अदृश्य काल अपन कारी-कारी पाँखि पसारि क' सौंसे देश-विदेश केँ झाँपि लेबाक लेल उताहुल भ' उठल होअए। अपन खूनी पंजा मे मृत्यु केँ बकोटने कत' कहाँदन सँ आबि क' जनसमूह केँ ग्रस' लागल।

गाम-गाम शहर-शहर मे हहारो मचि गेलै। कानो-कान खबरि पसरि गेलै कि एक टा विदेशी बीमारी अपनहुँ देश मे आबि गेल अछि, जे लैये क' जाइत अछि। बचबाक कोनो उमेदे नहि छोड़ैत अछि। हजारो क' संख्या मे लोक मरि रहल अछि। कखनो सुनलहुँ एत', कखनो सुनलहुँ ओतय...। कोन देश... कोन विदेश... कियो नहि बाँचत। भय सँ छातीक सभ टा खून जेना निचुड़ि क' मुँह बाटे बहरा ने जाय! चिन्ता-दुश्चिन्ता मे एक-एक पल लोकक कोना कटैत छल, लोके जनैत छल।

भरिसक एहने अनुभूति भेल हेतै, जखन हिरोशिमा आ नागाशाकी पर एटमबम खसयबाक समाचार पसरल हेतै! ई खिस्साक गप भ' गेल मुदा एखन साक्षाते लगैत रहय जेना भगवान ओ एटमबम एहि संसारे पर खसयबाक लेल तैयार होथि।

कते बहादुर भ' सकैत अछि मनुक्ख...! कते लोहा ल' सकैत अछि प्रकृति सँ! अन्ततः तँ हारहि पड़ैत छै। अपनहि संरक्षक, अपनहि पालनहार धरती आ प्रकृति सँ खेलबाड़ करबाक परिणाम भुगत'-सह'! मरह...।

जे ई सोचैत छल, ओहो तरे-तर कँपैत छल। ताहि पर घरक टेलीविजन तँ आरो ठहरल पानि मे बड़ी-बड़ी टा ढेपा ढपाढप खसौने चल जाइत छल। मृत्युक तेहन-तेहन खबरि अहर्निश दैत रहैत छल कि सूतब-जागब मोसकिल भ' गेल छल। जखन टी.वी. खुलैत छल सावधानीक संदेश सँ कोठरी गूँजि उठय। आ घरक एक-एक प्राणीक कलेजा जोर-जोर सँ धड़कय लगैत छल। एकहि निर्देश बेर-बेर, ...घर सँ बाहर नहि निकलू। ई बीमारी साँस सँ पसरैत छै। एक-दोसर सँ अलग रहू। हजारो उपाय बता क' प्रशासन अपन कर्त्तव्यक पालन क' लैत छल।

मुदा कोना नहि निकलू घर सँ। जे निठल्ला अछि, ओकर तँ कोनो बात नहि।

जे दू टा पाइ कमा क' घर-परिवार चलबैत अछि ओ की करय, कोना धीया-पुता केँ भुखले मरबाक लेल छोड़ि दिअए!

भुखले मरू आकि बीमारी सँ मरू... जखन मरबेक अछि त' भुखले किएक मरब?

रूपालीक साइत इएह सोच छलै। ओकरो तीन टा बाल बच्चा रहै। घरबला कोनो होटल मे नौकर रहै। होटल सभ बन्द भ' गेल रहै आ ओ बेकार बैसल रहै। घरखर्चीक भार एकसरे ओकरे पर पड़ि गेल रहै। ओ दू-चारि घर मे बासन-बर्त्तन धोबाक काज करैत छल। ओकरा चेहरा पर कोनो तरहक भयक चेन्ह कहियो नहि रहल, जखन कि पूरा शहर डरक पाँज मे कसमसा रहल छल। अपन-अपनहि सँ कन्नी काटि रहल छल। बाहर घुमनाय-फिरनाय त' बन्ने भ' गेलै। बड़का-बड़का मॉल बन्न भ' गेल। ताला लागि गेल। कतेको ट्रेन रद्द भ' गेल। हवाइयो जहाजक उड़ान बन्द भ' गेल। हजारो लोक अपन टिकट कैंसिल करौलक।

मनुक्ख केँ अपन अपराधक दण्ड स्वरूप एकाकीपन भोगेबाक विधाताक ई एक टा गंभीर षड्यंत्र बुझा पड़ैत छल। मनुक्ख मनुक्ख सँ डरय लागल। एक दोसर केँ शंका आ भय सँ देखैत दूरहि सँ राम-सलाम कहि संबंधक निपटारा क' लैत छल। सभ केँ एक-दोसरक देह मे मात्र संक्रमणक विष देखार पड़ै। एहने बुझाय जेना कोरोनाक ई मारक विष उछलि क' अगिलो क' अपना चपेट मे ने ल' लियए।

बाद मे सरकार कर्फ्यू लगा देने छलै...। लोक बात नहि मानय तँ ई सरकारो की करय...। मुदा घर सँ निकलू नहि तँ काज कोना चलत। कनिये दिनक बात छै...टी.बी, मोबाइल पर संदेश आबै। कनिये दिन धैर्य, संयम आ साफ सफाइ सँ रहै जाउ तँ ई भयंकर रोग अपनहि पतनुकान ध' लेत।

'धोंछा चीन पर बज्जर खसौ...!' निरक्षर बूढ़-पुरान सबहक आहत उपराग छलकि पड़य।

'कहै छै बूढ़ आ बच्चा दुइए टा पर गरह छैक।'

'कत' सँ ई खराप रोग पसारि देलक' जे अशिक्षित महिला-पुरुष चीन-चीनी मे भेद नहि बूझैत छल सेहो आब चीन केँ नीक जकाँ चीन्हि लेने छल। गारि सराप सँ बीछि लैत छल।

छोट-पैघ, बूढ़-जुआन सबहक मुँह पर चीनक भर्त्सना! सभ केँ पता चलि गेल छलै जे ई बीमारी एहि देशक कोनो गुप्त योजना थिक। एहि ज्ञानवर्धन लेल दूरदर्शन, नेट, इंस्टाग्रामक बड्ड पैघ उदारता छल। जे बच्चा ककहरा नहि सिखने अछि सेहो फेसबुक सँ पिक्चर निकालि लैत अछि। तें आब ककरो पढ़ेबाक आ बुझेबाक कोनो जरूरति रहिये नहि गेल।

देश दुनियाक सभ मनुक्ख खाहे झोपड़ी मे रहथु आ कि महल मे, देबाल पर एक टा भ्रष्ट गुरु केँ सम्मानक संगे स्थापित कयने छथि आ हाथ मे सदति मोबाइल सनहक पथभ्रष्ट मार्गदर्शक केँ इशारा पर घुमैत रहैत अछि। ककरो आब गप-शप करबाक लेल संगियो साथीक बेसी आवश्यकता नहि अछि। सभ तरहक इच्छा एही यंत्र सँ पूरा भ' जाइत अछि। भने नव-नव समाचार आ ज्ञानक बात नहि स्वीकारथु, व्हाट्सएप धरि नीक जकाँ भजबैत रहैत छथि।

रूपालियोक हाथ मे सदति ई मोबाइल चमकैत रहैत अछि। झाड़ू-पोंछा दैत-दैत ओ बीच-बीच मे ओकर बटन टिपटिपाबैत रहैत अछि। मुदा ओ कोनो समाचार नहि देखैत अछि, ताहि कारणें ओकर मुँह पर कोनो तरहक प्रतिक्रिया हम नहि देखैत छी।

रूपाली एक हाथें बाढ़नि दैत, दोसर हाथें लगातार फोन पर बतिआइतो रहैत अछि। काल्हि अचानके फोन केँ आँचर सँ पोछैत बाजल, 'भौजी, हमर बच्चा सबहक स्कूल बन्द भ' गेलै।'

'तँ नीके ने! आराम करिहें घर मे बच्चा सब संग' हम ओकरा सावधान करैत कहलियै, 'घर सँ कमे निकल। नहि कोनो काज होअए तँ अनेरे नै घूम-फिर। समय-साल बड्ड खराब छै...।' ओ कने स्थिर दृष्टि हमरा पर टाँगलक। हम अपन बात जारी रखलहुँ 'टी.भी. त' हेबै करतौ घर मे, देखैत नहि छिही की हाल छै चौबगली, तेहन बीमारी पसरल छै कि लगैत छै दुनियाक संहारे भ' जयतै।'

'ओ, हँ-हँ सुनैत छियै, वएह बीमारी ने हँ, हमरो टोला दिस आबि गेलैए' बहुत आराम सँ बाजल।

ओकर ई सहज उत्तर हमरा सौंसे देह मे झुरझुरी पैसा देलक। गरदनि मे किछु फसल जकाँ बुझायल, आ हम अनचोक्के सरकि गेलहुँ। हमरा लगातारे उकासी हुअ' लागल। गटागट गिलास भरि पानि पीबि क' रूपाली सँ झटकि क' अलग होइत बाहर बैसि गेलहुँ। हम ओकरा पूछ' चाहैत छलहुँ कि ककरा भेलै ई बीमारी मुदा कण्ठ बाझि गेल आ लागल जेना खूब जर-बुखार दाबि देने हुए। छाती मे दर्द शुरू भ' गेल आ हमहूँ मरीज भ' गेलहुँ। हमरा दिमाग मे कतेको अनर्गल आ अशुभ सोचक बिर्रो उठय लागल।

हमरा किछु भेल नहि छल। रूपालीक सौंसे देह मे हमरा कोरोनाक लक्षण देखा पड़ि रहल छल। एहि बीच ओकरा सर्दी तोपने रहय, तैयो ओ काज पर अबिते छल। आब तँ ठीक भ' गेल छलै मुदा ओकरा टोला मे कोरोना पसरल छैक तँ ओ कोना बाँचल अछि? केहन अछि ई छौंड़ी बतेबो नहि कयलक जे ओकरा कोनो मरीजक पतो छैक! हम मनहिमन ओकरा धिक्कार' लगलहुँ।

रूपालीक ई तटस्थता हमरा सभ पर बड्ड भारी पड़ल। डरल तँ हमसब पहिनहुँ सँ रही मुदा आब एखन त' सीधे फाँसीक फंदे गरदनि मे पड़ि गेल छल, कखनो कियो खैंचि देत। बच्चा सबहक चेहरा आँखिक आगाँ घूम' लागल। विविध भावक दारुण दृश्य दिमागक सतह पर एक टा करुण छाँह जेकाँ नाच' लागल।

हमर हालत देखि बेटी सेहो चिन्तित भ' गेल छल। गुम्हड़ैत बाजल, 'हम त' कहिते रही एहि समय मे कोनो बाहरी लोकक अबरजात बन्द क' देबाक चाही।'

हमरे लोभ ध' लेने छल! घर मे ततेक काज भ' जाइत छल कि थाकि जाइत छलहुँ। ओकरा अयने बड्ड आराम भेटैत छल। मुदा एहि विषम परिस्थिति मे ओहि आरामक कोन काज, आरामे करैत-करैत जँ जय सियाराम भ' जाय तखन... ! अपना गेलौं तँ गेलौं, संग-संग आनो केँ ने लेने जायब... ! नहि-नहि! हे भगवान गलती-सलती माफ करू.. ।

हम डरिते-डरिते भनसाघर गेलहुँ। पियास सँ फेर कण्ठ सुख' लागल। एक टा गिलास उठेलहुँ तँ भक सँ मन पड़ल, हे भगवान! ई तँ रूपालिये माँजि क' गेल अछि। कतहु अहू पर जर्म तँ नहि बैसि गेल! भक द' छोड़लहुँ। फेर हाथ केँ साबुन ल' क' बीस सेकेण्ड धरि धोलहुँ।

आन खन रहितय तँ घरक सभ लोक एहि साफ-सफौअल पर नीक सँ चुटकी लितै मुदा एखन सभ तरे-तर साकांक्ष भेल अछि। सब शंकाक घेरा मे आबि गेल छल कि जरूर रूपाली कोरोना पाजिटिव अछि। अपन आस-पड़ोस मे ओकर एनाइ-गेनाइ तँ हेबै करतै तँ ओ कोना बाँचल हैत। सबहक चेहरा पर हवा उड़िया रहल छलै।

'केहन अछि मतिसुन्न ई छौंड़ी! भनको नहि लाग' देलक।' हम सब ओकरा दुर-छी, दुर-छी कहैत एक टा ठोस निर्णय पर पहुँचि गेलहुँ जे काल्हि जँ ओ छौंड़ी काज पर आयत तँ चोट्टहि ओकरा घुमा देबै, बरू पैसो पहिनै द' देबै। पाइक मोह कते करब। जान बचय त' लाख उपाय!

हमरा सबहक चेतना मे रूपाली एक टा साक्षात कोरोना वायरसक डमी बनि क' ठाढ़ भ' गेल छल। सहजे विश्वास नहि होइत छल जे ई की उनट-बनट अचानके शुरू भ' गेलै। मुदा कखनो काल तँ निर्मम सत्य अपन बात स्वीकार करवाइये लैत छैक।

सत्य ई छलै कि हजारो लोक विदेश मे मरि रहल छल। अपनो देश मे अज्ञानताक कारणें लहास उठेनहार नहि भेटि रहल छल। सुनैत छियै आब सरकारो हाथ उठा लेलक। कोनो उपाय नहि अछि... कोनो इलाज नहि... ।

मुदा हम सब अज्ञानी नहि छी। कोनो बहरिया केँ घर मे प्रवेश किन्नहुँ नहि होब' देबै।

रातिक दस बाजि गेल। चौबगली हम सब रूपालियेक आगाँ-पाछाँ घुमैत छलहुँ। खेनाइयो-पिनाय पर ककरो ध्यान नहि छलै।

'ओकरा कोना क' मना करबै, कोन बहन्ना बनेबै; गरीब स्त्री छै।' हमर बड़की बेटी मानवताक आधार पर एहि निर्णय केँ अनुचित बूझि रहल छल। ओ डरल जरूर छल मुदा ओकरा लागि रहल छलै जेना कोनो बोझ सँ दबा गेल होइ।

सहजे जेना ओकरा किछु फुरयलै, ओ रूपाली केँ रिंग कयलक।

'आब तँ सूति रहल हेतै।' हम कहलहुँ।

'नहि, तीन-तीन टा बेदरा छै ने! भोरे कहैत छलै, बड्ड तंग करैत अछि धीया-पुता। जल्दी सुतबो नहि करैए। भोर मे ओकर माथो दुखाइत छलै।'

'अँय! माथो दुखाइत छलै? जर-तर तँ नहि छलै गै!' हम भयाक्रांत भ' उठलहुँ।

'...नहि-नहि। सएह हाल-चालक बहन्ना करैत काल्हि सँ अयबा सँ मना क' देबै।'

'अच्छा!' हम अपन बेटीक सूझि-बूझि पर गौरव सँ भरि उठलहुँ।

दू-चारि रिंगक बाद रूपाली फोन उठेलक।

बेटीक हेलो कहिते ओमहर सँ रूपाली बाजल, 'हँ भौजी? की कहैत छी, काल्हि सँ हम काज पर नहि आयब। एकांउट नम्बर मैसेज क' दैत छी। पाइ पठा देब।'

'... अँय!' बेटी चौंकलि। ओ स्पीकर ऑन क' देने छल। ओ जाहि संवादक ताना-बाना बूनि रहल छल, से रूपाली एकहि झटक मे सीबि-साबि क' पसारि देलक।

'किए, मन बेसी खराप छौ?' बगल सँ हम पुछलिऐ।

'नहि-नहि, मन कियै खराप रहत हम्मर... । अहाँ सभ पढ़ल लिखल छियै, एतनो नहि बुझैत छियै? मास्क लगबै जाउ आ ककरो मुँह पर उकासी नहि करियौ। हमरो सबहक त' जाने छियै कि नइँ... जँ पटिये जाइ... ।'

पुरुखाह

धड़धड़ाइत चलैत रेलगाड़ी केँ प्लेटफार्मक रिक्तता आ उदासी सँ की लेब-देब ! एखन धरि घंटो ठाढ़ भीड़क गहमागहमीक मजा लैत औचके चलि पड़ल। फेर पाछाँ के छूटल, के चढ़ल, के उतरल, ओकरा की पता।

सब डिब्बा मे तरह-तरह लोक चढ़ल। कोनो मे दीन-दुखिया, सतायल-अभागल तँ कोनो मे हँसैत-मुसकबैत। एहने एक टा डिब्बा मे सवार भेल एक टा दम्पत्ति। भीड़ केँ ठेलि-ठालि पुरुष ऊपर चढ़ल आ अपन अधेड़ पत्नी केँ हाथक जोर सँ ऊपर खिचि लेलक। ओ ठेहुन दाबैत झुकैत-पड़ैत कहुना ऊपर चढ़ि गेलि।

पुरुष उमेरगर होइतो सक्कत छल। रूपगर्वित आ धनीक। ओ अपन व्यक्तित्वक प्रभाव सँ ठसाठस भरल डिब्बा मे अपना लेल जगह बना लेलक। खिड़की लग बैसल एक टा किशोर दिस तेना केँ तकलक जे ओ स्वत: कतिया गेल। फेर ओ दुनू परानी तृप्त भावें एम्हर-ओम्हर तकैत खिड़की सँ सटि क' बैसि गेल।

खिड़की सँ बाहर गाछ, वृक्ष, नदी, पहाड़, बिजलीक पैघ-पैघ खाम्ह विपरीत दिशा मे गाड़ीक संगे-संग भागल चल जा रहल छल आ अपन स्वप्निल आँखि सँ एहि दुर्लभ दृश्य सब केँ निहारैत डिब्बाक असहनीय स्थिति सँ अपना केँ बचा लेबाक भ्रम पोसने ई दम्पत्ति एक बेर घूमि केँ अगल-बगल ताकबोक समय नहि जुटा पाबि रहल छल।

ओ स्त्री अन्तत: यात्री सबहक उपरौंझ आ तामस सँ उपजल नोक-झोंक दिस अपन नजरि घुमौलक। एक टा युवक अचक्के ओकरा सबहक बीच टपकि पड़ल छल। अपन एहि सफलताक वास्ते ओकरा बड़ी काल युद्ध लड़' पड़ल छलै। चलैत गाड़ी मे ओ दौगि क' चढ़ल छल। फेर गेट सँ भीतर अंयबाक यात्रा मे ओ बहुत दुर्गंजन सहने छल। तैयो ओ अपन दुनू टाँग केँ कहुना क' कनी टा जगह दैये देने छल।

ओ ठीक ओहि दम्पत्तिक सोझाँ ठाढ़ भ' गेल। गाड़ी कनिक्को रुकै वा झटका खाय तँ ओकर ठेहुन ओहि स्त्रीक साड़ी सँ छुआ जाइ। आब पुरुषक दृष्टि प्रकृतिक

सौंदर्य सँ नजरि हटौलक। ओकर आँखि ओहि युवकक ठेहुन आ पत्नीक साड़ी पर ठहरि गेल। ओ मोनहि मोन खिसिया गेल। मुदा ओहि भीड़ मे युवक केँ किछु कहबाक सकरता ओ नहि ओरिया सकल।

ओ कारी खटखट, लंबा आ कृशकाय युवक छल। मोचरल बुशर्ट आ पैजामा पहिरने। ओझरायल केश। पयर मे हवाइ चप्पल, सेहो घिसल-पीटल। चेहरा-मोहरा सँ कोनो कबाड़िये बुझाइत छल। दाँत निकालने, सहमैत आँखियें सब दिस टुकुर-टुकुर तकैत।

जगह-जगह ठिठकैत, चलैत रेल नहुँए-नहुँए अपन बोझ कम क' लेलक। ओहि डिब्बा सँ बहुत यात्री बहरा गेल। सोझाँ बला बर्थ खाली भेलै आ ओ युवक बेचैनी सँ ओहि पर बैसि गेल। ओकर दुर्बल पयर दुखाब' लागल छलै। आराम सँ ओ अपन पीठ सीधा कयलक तँ सोझाँ बैसल स्त्री सँ ओकर दृष्टि मिलि गेलै। ओ स्त्रीयो ओकरे देखने जा रहल छलै। घंटो ठाढ़ ओहि निरीह आ दुर्बल युवक केँ कतहु बैसबाक जगह भेटि जाय, ई कामना ओकरा आँखि मे स्पष्ट देखार पड़ैत छलै।

ओना तँ ओकर बगय-बानि एकदम्मे नकारल सन रहै, तैयो ओकर सियाह मुँह पर जे दू टा चमकदार पाथर सन आँखि धयल छलै, ओकर पारेख कोनो जौहरीये क' सकैत छल। ठोर पर बेमतलब मुस्की आ आँखि मे अजस्र तरलता...।

सोझाँ बैसल स्त्री वात्सल्य भरल दृष्टियें ओकरा देखने जा रहल छलि। कतेको भाव-भंगिमाक सम्मिलित तरंग उठैत-खसैत ओहि आँखि केँ रहस्यमयी बना रहल छल। पुरुषोक दृष्टि ओकरा पर पड़ै मुदा उचटैत आपस भ' जाइ। स्त्री ओकरा दयार्द भावें देखि रहल छलि। ओकर एहने आदति छलैक। कोनो दीन-दुखी केँ देखै तँ संवेदना सँ भीजि जाइ। एखनो ओहि युवक के चप्पल सँ शुरू भेल ओकर दृष्टि ओहि युवकक दहकैत आँखि पर ठहरि गेल। युग-युग के संचित संताप आ दुख जेना ओकरा आँखि मे आकार पाबि लेने छल। क्यो पुछनिहार रहितै तँ साइत अपन बितलाहा सुनबैत ओ बरखो बिता दितै।

नमहर यात्रा मे संग चलनिहार यात्री अनायासे घुलि-मिलि जाइत अछि। ओहो डिब्बाक लोक सब आपस मे बाज' बतिआब' लागल। ओ युवक बेर-बेर पुरुष दिस ताकय। ओकरा किछु पुछबाक मन होइत छलै मुदा साहस नहि भ' पबैत छलै। स्त्री अपन पतिक सोखपनी सँ नीक जकाँ परिचित छलि। ओ कोनो गरीब-गुरबा आ फटेहाल सँ हेम-छेम बढ़ेबा मे अपन हीनस्ताय बुझैत छल।

तखन आगाँ बढ़ि क' ओहि युवक सँ वैह किछु पुछय चाहलक मुदा सहमि गेलि। कोन ठेकान ओकर पति अपन आदति सँ नचार ओकरा फटकारिये बैसय। एना ओ बेसी काल करैए। पत्नीक जे बात ओकरा नापसिन्न होइत अछि,

ओहि पर ओ अपन रोआब झाड़बा मे कनिको देरी नहि करैत अछि। एहि स्थिति मे ओकरा स्थान, काल, पात्रक होश नहि रहैत छै। एहि विचारक संगे ओ अपना मनक इच्छा मनहि मे दाबि लेलक।

ओ युवक भरि दिन चुप्पे छल जेना ओकर ठोर सिया गेल होइ। मुदा आँखिक चमक आ मुँहक फैलाव खतमे नहि होइ। कने कालक बाद ओ अपन कन्हा पर लटकल मैल चिक्कट सन झोरी बहार कयलक।

आब ई किछु खयबा लेल निकालत, स्त्री मनहि मन सोचलक। ओकरो अपन बटखरचा मोन पड़ि गेलै। मुदा ओकर पति किछु आरो लोकक उतरि जयबाक बाट देखि रहल छल। भीड़-भाड़ मे ओकरा भोजन नहि अरघै छलै।

एहि भीड़-भाड़ मे ओहिनो ओकर मोन अँाट भेल छलै। ओ तँ किन्नहु एहि जेनरल बॉगी मे नहि बैसितियै, मुदा रिजर्वेशन नहि भेलै। मजबूरी मे एहन-एहन कुकुर-बानर संगे ओकरा बैस' पड़लै। एक टा भरोस रहै जे धनबाद जाइत-जाइत गाड़ी लगधग खाली भ' जाइत छैक। ओ बेर-बेर अपन चेहरा खिड़कीक बाहरक दृश्य मे टिका देअय। मुदा एखन ओकरा कथू मे चैन नहि पड़ि रहल छलै। ओ अपन पत्नीक उकस-पाकस सँ मने-मन आजिज छल। ई कखन ककरा सँ गप करय लागत आ कखन ककरा टोकि देत, प्रतिष्ठा पर तँ ओकरे पड़ैत छैक ने। पुरुष एहि विषय मे अदौ सँ साकांक्ष रहैत छल।

मुदा वैह भेलै। ओ दीन-हीन युवक अपन झोरी मे किछु टोब' लागल तँ कोना ने कोना एक टा छोट सन रबड़क गुड़िया नीचाँ खसि पड़लैक। ओ तेना खसलै जे सोझाँ बैसल स्त्रीक औंठा धरि पहुँचि गेलै।

स्त्री निहुरि केँ ओकरा उठा लेलकै। पुरुष ओकरा तरका आँखियें सहचेत केलकै। मुदा ओ ओहि पर कोनो ध्यान एखन नहि देलक। ओ गुड़िया सुन्दर छलै। युवक सकुचाइत स्त्री दिस तकलक आ बिनु किछु प्रश्नहिक उत्तर देब' लागल—'ई अपना कनकिरबी लेल किनने रहियै...। आरो चीज-वस्तु लेने रहियै, मुदा...।' एतबा कहिक' ओ चुप भ' गेल। ओकर आँखिक चमक मंद पड़ि गेलै आ अकारण प्रसन्न चेहरा जेना मुरझा गेलै।

आब स्त्री चुप नहि रहि सकलि। भरि दिन मे ओ युवक पहिल बेर बाजल छल। ताहि सँ ओकर ई चारि टा शब्द लगलै जेना कोनो आह बनि क' बहरायल छलै।

गुड़िया युवक केँ थम्हबैत स्त्री पुछलक—'कते टा बचिया अछि? कतय सँ आबि रहल छी?'

युवक हाथक इशारा सँ तरहथ ऊपर करैत कहलक—'एतबर छै।'

एहि संकेतक संगे ओकरा मुँह पर तेहन मधुर वात्सल्य पसरि गेलै जे लगलै जेना बचिया ओकरा सोझहि मे ठाढ़ छै।

स्त्री अपन स्वभावगत उत्सुकता केँ सहन नहि क' सकलि। फेर पुछलक—'कत' सँ अबैत छी?'

पुरुष ओम्हर चून-चौर होइत छल। ओकर देहक सभ टा रक्त जेना दौड़ि-दौड़ि क' करेज पर सवार भ' गेल छलै। ओ अपना पत्नी केँ केहुनी मारलक—'की मजाक क' रहल छी। चुपचाप बैसू ने।'

पतिक धमकी भरल आदेश सँ ओ कने संकुचित भेलि मुदा ओकरा मोन मे ओहि गुड़िया आ बच्चा सँ संबंधित हजार टा कल्पना अनेरे टकराब' लागलै।

युवक सेहो कने गतिशील भेल। एतेक नमहर यात्रा मे ओकर खोज केनिहार क्यो भेटलै, एहि बात सँ ओकर मोन जेना जुड़ा गेलै। ओ बात आगाँ बढ़यबाक साहस कने बढ़ौलक। किछु काल पूछल प्रश्नक उत्तर जारी रखलक—'सुन्दरपुर सँ अबैत छी। ओतय हमर बेटी आ पत्नी अछि। ई गुड़िया ओकरे लेल ल' गेल छलियै, मुदा ओकर माय बदमास छैक। ने किछु लेब' देलकै आ ने बच्चा केँ आब' देलकै...।'

स्त्री किछु बूझि नहि सकलि। ई गप ओकरा आधारहीन लगलै। आब तँ खोंइचा छोड़ा क' सब बात जानि लेबाक ओकर उत्कंठा तीव्र भ' गेलै। ओ एकबेर अपन पति दिस तकलक। सद्भावनाक संगे नहुँए बाजल—'देखियौ ने। एकरा संगे जरूर किछु असंगत भेल छैक। बेचाराक कनियाँ केहन छैक...।'

एतबा सुनिते पहिनहि सँ आजिज पुरुष तुक्का मारलक—'तँ की चाहैत छियै? जाउ, जा क' ओकर घर बसा दिऔक।'

स्त्री खूनक घोंट पीबि क' रहि गेलि। सुकुर छलै जे ओ फुसफुसबैत बाजल छल। एकर बाद किछु पुछबाक ओकर जिज्ञासा जेना स्वतः समाप्त भ' गेलै।

अचक्के गाड़ी झटकाक संग रुकलै। डिब्बा मे कने कोलाहल बढ़ि गेलै। लागलै जेना कियो चेन खींचि देने होइ। यात्री सबहक बीच चेन खिंचबाक संभावना ल'क' गपशपक बिरड़ो उठि गेल। मुदा कोनो हलचल नहि छल। सब गोटे निचैन भ'क' अगिला गतिविधिक बाट जोहय लागल।

बगल बला बौगी सँ हो-हल्ला शुरू भ' गेल छलै। ई हो-हल्ला बुझा पड़ैत छल जे पहिने सँ भ' रहल छलै। चलैत गाड़ीक स्वर मे दबल छलै। बीच-बीच मे कोनो स्त्रीक कानब आ कलपबाक ध्वनि सुना रहल छल। कोनो बच्चा सेहो जोर-जोर सँ कानि रहल छल। स्वर कोनो अबोध शिशुक रहै।

गाड़ी जहिना रुकलै, एक टा बुढ़िया पछिला डिब्बा सँ अपन मोटरी लेने एहि डिब्बा मे आबि गेल छलि। वैह खेरहा सुना रहल छलि।

ओहि बौगी मे एक टा पूरा परिवार यात्रा पर छल। तीर्थ-बेरागन केनिहारक रेल मे कमी नहि छलै। भरिसक इहो सभ गंगा-स्नान क' घुरि रहल छल। ओहि परिवारक एक टा स्त्री जे मोट-सोंट आ दबंग छलि, ओहि बच्चा केँ काँख तर दबौने दोसर स्त्री केँ रेल सँ उतरबा लेल बाध्य क' रहल छलि। बच्चा फकसियारी काटि रहल छलै। दोसर स्त्री सेहो हकन्न कानि रहल छलि। ओ आर्त्त स्वरें बेर-बेर बच्चा केँ छीनय चाहैत छलि। दबंग महिला ओकरा फटकारलक—'तों उतरैत छें की नहि? आ कि धकेलि दियौ। अवढंगी नहितन...। अपन देह तँ सम्हरै नै छहु, चलल छें बच्चा केँ पोसय...।'

पुरुषोक स्वर ओकर संग देब' लागल—'उतर-उतर, गाड़ी खुजि जेतै।'

मामिला की छलै, क्यो बुझि नहि रहल छल। बुझबाक क्यो प्रयासो नहि क' रहल छल। मूक दर्शक जकाँ सब टुकुर-टुकुर ताकि रहल छल। सबहक चेहरा पर एके टा उत्सुकताक लहरि हिलकोरि रहल छलै जे आब की हेतै? बच्चा ओकरा माय केँ भेटतै कि नहि! ई प्रश्न सबहक आँखि सँ सटि क' रहि गेल छलै। बीच-बीच मे कोनो-कोनो ठोर सँ अस्फुट स्वर एम्हर-ओम्हर छिड़िया जाइ—'ई सब कहियो सुधर' बला नहि अछि...।'

—'हँ भाइ, जाति-गुण संस्कार कहियो बदललैए...।'

—'मुदा बेचारीक बच्चा ओकर देआदनी कियैक नहि द' रहलैए?'

—'पता नहि, की मामिला थिकै?'

—'किछु करबाक चाही।' एक टा संवेदनशील व्यक्ति मे कने गति अयलै। दोसर ओहि गति केँ मंद करैत बाजल—'बैसू चुपचाप। ई पुलिसक काज थिकै। हमर अहाँक नहि। एकरा सबहक घरेलू मामिला हेतै। कियै हस्तक्षेप करबै?'

भुस्साक ढेरी लग पागुर करैत माल-जाल जकाँ सब सुस्त पड़ि गेलै।

ओ स्थूलकाय स्त्री अपन देआदिनी केँ धकियबैत बौगी सँ उतारि देलकै। सब पुरुष मुँह चोरा लेलक। ओहि स्त्रीक आर्त्तनाद कात बला डिब्बा मे बैसल ओहि कृशकाय कबाड़ीनुमा युवक केँ आंदोलित क' देलकै। एखनधरि ओ सब बात केँ अकानैत मामिलाक तह मे पैसि गेल छल। ओ फुरती सँ दोसर डिब्बा मे आबि गेल। ओकर दुब्बर-पातर देह मे जेना चीताक चपलता अनायासे पैसि गेलै। ओ एक्के झटका मे ओहि स्थूलकाय स्त्रीक हाथ सँ बच्चा केँ झपटि बाहर कूदि गेल।

जा-जा लोक किछु बुझै, गाड़ी नहुँए-नहुँए ससरय लागल।

प्लेटफार्म पर बच्चाक माय निहुरल बैसल छलि। ओकरा बड़ी जोर सँ चोटो लागि गेल छलै। ओ युवक बच्चा केँ माय केँ थम्हेलक आ लपकि क' चलैत गाड़ी मे फेर सँ चढ़ि गेल।

ओकरा बर्थक सोझाँ बैसल दम्पत्ति हतप्रभ छल। स्त्री भाव-विह्वल भ'क' युवक केँ देखने जा रहल छलि। साधुवादक कतेको शब्द ओकरा ठोर पर फड़फड़ा रहल छलै मुदा झिझक आ भय सँ ओ चुप छलि।

चुप्पे-चुप एकबेर ओ विजयी भाव सँ पति दिस तकलक।

ओकर पति अपन आँखि स्थिर करबाक जगह ताकि रहल छलै। ओकर आँखि सीधा धरती मे गड़ल जा रहल छलै।

चक्कर

आइ एक सप्ताह भ' गेल छल। ब्लॉकक चक्कर लगबैत-लगबैत थाकि गेल छलहुँ। एम्हर आबि जाइ तँ घरक बहुत रास काज से बरदा जाइत छल। आमदनी अठन्नी आ खरचा रुपैया बला बात। एकसर कमौनिहार, जेना-तेना गुजर करैत छी आ ताहि पर सँ ई ऑफिस आ कचहरी तँ दौड़ा-दौड़ा क' प्राण आफत मे द' दैत अछि। सहूलियत सँ आइ धरि कोनो काज नहि भेल अछि।

काज बहुत छोट अछि मुदा विस्तार तेहन बतबैत अछि जेना हाउसिंग लोन लेबाक चक्कर होइ। पक्का साढ़े दस बजे सँ पहुँचल छी। चाहे टा पीबि क' निकलल छलहुँ। पत्नी जलखै लेल कहिते रहली मुदा कहलियनि—'पहिले खेप मे भीड़ नहि रहैत छैक, जल्दिये अबैत छी।' मुदा एतय उनटे बसात बहैत छै। भोरुके पहर सँ लोकक रेलमपेल मचैत रहैत छै। दिसंबर-जनवरीक दिन ओहिना लजायत रहैत अछि कि जल्दीये रातिक आँचर त'र नुकब' चल जाइत अछि। कनी-मनी रौदक बादो देह अकड़ल बुझाइत अछि।

ब्लॉकक चौबगली गाछक सघन झुरमुट अछि। नमगर-चौड़गर मैदान मुदा रौदक घुसपैठ कम्मे। अशोकक नमछुरूक गाछ कने रौद छोड़ि देने छैक। हम ओत्तहि चलि गेलहुँ। देह मे थोड़ेक गरमीक अनुभव भेल आ हम ओत्तहि टहल' लगलहुँ। काज केँ भगवानक भरोसे छोड़ि देह टनकाबैक प्रयास कर' लगलहुँ।

टहलैत-टहलैत मनोहर मोन पड़ि गेल। एहिठाम चपरासी अछि। पुरान जान-पहिचान छल। जँ भेटि जाइत तँ भ' सकैत अछि जे किछु मदति करैत। हमहूँ ओकरा लेल समय पर कतेको बेर ठाढ़ भेल रही।

आशा आ संभावनाक लहरि हताश मोन मे हिलकोर मारलक आ हमर नजरि बेचैनी सँ ओकरा ताक' लागल। लोकक एहि भीड़ मे ओ अबस्से कतहु हैत। दूर ठाढ़ हम सबहक भाव-भंगिमाक पारेख क' रहल छलहुँ। सब चलैत-फिरैत मूक चित्र जकाँ लागि रहल छल। ध्वनिविहीन।

नमगर-चौड़गर मैदान मे वृद्धक संख्या आइ कने बेसीये छल। भ' सकैए वृद्धा

पेंशन वा लालकार्डक मामिला हो। मैल-कुचैल कपड़ा मे लेपटायल, हाथ मे लाठी थम्हने वयोवृद्ध स्त्री-पुरुष हिलि-डोलि रहल छल। ओहि मे सँ एक टा वृद्ध ओहि लोक सब केँ गौर सँ देखि रहल छल जे पैंट-शर्ट पहिरने जाइत-अबैत छल। ओकर खधारि मे धँसल आँखि बहुत बेसी पसरि जाइत छल। दृष्टि निस्संदेह कमजोर छलै। ओकरा भ्रम होइत छलै जे आँखि पसारि देला सँ ओकरा साफ-साफ देखार पड़तै। कतेको बेर ओ ऑफिसक मुँहथरि लग गेल आ धकिया क' निकालि देल गेल। कतेक बेर तँ खसैत-खसैत बचल।

हमर नजरि ओहि वृद्ध पर छल आ माथ अपनहि चिंता मे ओझरायल पड़ल छल। आँखि आ दिमाग दू अलग-अलग स्थितिक भार उठौने हमरा असंतुलित क' रहल छल।

दिनक बारह बाजि गेल छल। पेट मे मुसरी से अलग कूदि रहल छल। हम देखलहुँ, वृद्ध निराश भ'क' अशोकक गाछ दिस बढ़ल चल आबि रहल अछि। तावत चपरासी सेहो प्रकट भ' गेल छल। हम गौर सँ ओकरा देखलहुँ। आ संकेत सँ बजौलहुँ। हमर चमकैत जूता आ क्रीजदार शर्ट भरिसक चपरासीक तरहथक नोचनी बढ़ा देने रहै। ओ मनोहर नहि छल। ओ दौड़ल आयल। ओकरा दौड़ैत देखि बूढ़ो हमरा दिस बढ़ल। अपन चालि बलजोरी तेज करैत ओ चपरासीक पाछाँ ठाढ़ भ' गेल। झुर्री सँ भरल चेहरा पर लटकल निस्तेज आँखि केँ हमर चेहरा पर लटका देलक ओ। ओकरा आँखि मे संभावनाक कोनो क्षीण प्रकाश अभरि अयलै। हम ओकरा कोनो बाबू बुझा पड़ैत रहियै। हमर एकदम लग आबिक' रुकि गेल। एकटक हमर मुँह ताक' लागल। भरिसक गपशप करबाक कोनो बहन्ना ताकि रहल छल।

हमर गरदनि सुखा रहल छल। जेब सँ दस टाकाक नोट निकालि केँ चपरासी केँ देलियै आ दू कप चाह लेल कहि कात मे पड़ल पाथरक गोल सन चबूतरा पर बैसि गेलहुँ। चपरासी झटकले चलि गेल आ बूढ़ा सेहो असोथकित भ'क' ठामहि बैसि गेल। ओ बेर-बेर जीह सँ ठोर भिजा रहल छल आ मुँह उठा क' हमरा दिस ताकि रहल छल। किछु कहबाक लेल ओकर कंठ जेना ओकिया रहल छलै मुदा साहस नहि भ' रहल छलै। हमर साफ कपड़ा आ हाथक बैग ओकर आँखि केँ अपना दिस खैंचि जरूर रहल छल मुदा शब्द चोरा लैत छल।

हम अपन महत्त्व बूझि रहल छलहुँ, ताहि सँ किछु बेसीये गंभीर देखेबाक कोशिश क' रहल छलहुँ। मोनक कोनो कोन मे, ठंढा मे तेज चलबाक कारणें हाँफैत आ सबकिछु हारि बैसल वृद्ध लेल, हमरा भीतर किछु पघिलैत बुझा रहल छल।

अपन फटलाहा गमछी सँ कान झँपैत बूढ़ा बिनु कोनो भूमिकाक बाजि उठल—'कान मे मफलर बाँध लो बाबू...!' गपक क्रम ओ एही वाक्यक बहन्ने आरंभ

कयलक। ओकरा मुँह सँ हफ-हफ केर आवाज निकलि रहल छल—'बड्डु सिहकी है, माघक जाड़ है न...हाड़ मे लगता है, भने रौद मे बैठे हैं...।'

बूढ़ा एक्के पल मे हमरा सँ मित्रता क' लेलक। हमरा चेहराक आर्द्रता केँ भरिसक ओ भाँपि लेने छल। अपना भाषा केँ यथासंभव हमरा योग्य बनबैत ओ संवाद शुरू कयने छल। मुदा हम ओकर स्थिति केँ सहज बनबैत पुछलियै—'अहूँ केँ तँ जाड़ होइत हैत बाबा, चद्दरि कियैक नहि ओढ़ि लेलहुँ।' एतबा सुनैत ओ हमर संवेदनाक थारी पर भुक्खड़ जकाँ टूटि पड़ल। नोरायल आँखियें सब किछु कहि देबाक लेल उताहुल भ' उठल। बैसले-बैसल कने लग घुसकि आयल आ दहिना हाथ केँ माथ पर रखैत विकल स्वर मे बाजल—'बड्डु दुख छै बाबू। एहि सँ तँ भगवान एक बीत जग्गह द' दितै...।'

—'की भेल?' हम ओकर प्रलाप केँ नकारबाक ढोंग करैत पूछि बैसलहुँ।

बूढ़ा अपनत्वक सत्य अथवा झूठ, कोनो शब्दक टोह मे व्याकुल छल। उत्साहित भ' उठल। हमर एक टा सवाल ओकरा अनेक जवाब देबाक प्रेरणा द' देलक।

—'माइ-बाप! अहीं केँ भोरे सँ ताकि रहल छी। एतय तँ कोठरी-कोठरी बाबू-साहेब सब सँ भरल छैक मुदा क्यो-क्यो किछु बाजबोक मौका नहि दैत अछि। बेटा, घर मे पाँच जन छियै। बेटा-पुतोहु भिन्न क' देने अछि। हमरा सँ कोनो काज नहि होइत अछि। बुढ़िया जन-मजूरी क' क' जे अनैत अछि, ताहू पर सबहक हीक लागल रहैत छै। हाथ उठा क' नहि देलकै तँ भिन्न क' देलक।'

हमर सर्वांग सिहरि उठल—'भिन्न क' देलक...।' हम सहमैत आश्चर्य सँ पुछलहुँ।

—'हँ बाबू, ई दू-दू टा बोझा के उघतै?'

माय-बाप कतहु बोझ भेलैए...। जे ई मानैत अछि ओकरा तँ समाज सँ बहिष्कृत क' देबाक चाही। हम मोने मोन सोचलहुँ।

बूढ़ा फेर बात केँ घिचलक—'बाबू, गाम मे सुनलियै लाल कार्ड बला सब केँ राशन मँगनी मे भेटै छै। हमरा आइधरि नहि भेटल। बूढ़ सब केँ पेंशन भेटै छै, सेहो नहि भेटल। एगो की होइ छै बी.पी.एल., तहू मे नाम नहि चढ़लै।'

हम किछु कहिते रहियै कि फेर ओ अपन शब्द मे ताकत भरैत बाजल—'आब तँ अहाँ भेटि गेल छी। आब हमरा कोन फिकिर...।'

हम सकपका गेलहुँ। बूढ़ा हमरा ब्लॉकक स्टाफ बूझि लेने छल। चपरासी केँ मामूली सन आदेश दैत देखि केँ ओकरा भारी भरम भ' गेल छलै। हम तत्काल ओकरा बेभरम नहि क' सकलहुँ। चपरासी चाह ल'क' आबि गेल छल। हम ओ

दोसर चाहक गिलास जे ओकर बख्शीशक तौर पर मँगौने छलहुँ, ओकरा नहि द' बूढ़ा केँ द' देलहुँ। चाहक अंतिम घोंट धरि बूढ़ा आ चपरासी दुनू हमरा दिस तकैत रहल।

जहिना हम चाहक ओ कागत बला कप फेकलहुँ कि चपरासी लप द' हमर बैग उठौलक आ हुलसैत कहलक—'चलू साहेब, अहाँक कोन काज अछि, हम चट द' करबा दैत छी। खाली हमरा पर नजरि रखबै।' कहि क' ओ हें-हें क' हँसि पड़ल।

बूढ़ाक विश्वास आरो दृढ़ भ' गेलै। हम उठि क' ठाढ़ भ' गेलहुँ। बूढ़ा हमर मनोदशा केँ व्यग्र क' देने रहय। ओकरा की कही, की नै कही, हमरा फुराबिते नहि छल। भारी पेशोपेश मे पड़ल हम ओतय सँ उठि चलय लगलहुँ। हमरा संगहि ओहो उठि क' चलि देलक। चपरासी आगाँ बढ़ि गेल छल।

बूढ़ा चलिते-चलिते धोतीक खूँट सँ किछु निकाललक। हम घुरि क' ओम्हर तकलहुँ तँ ओ पचास टाकाक मोड़ल-तोड़ल नोट निकालि हमरा हाथ मे पकड़ेबाक प्रयत्न करैत निरीहताक संग बाजल—'बाबू, ई राखि लिअ...। हम गरीब आदमी छी। एहि सँ बेसी नहि द' सकब।'

हम एहि अकल्पनीय व्यवहार लेल तैयार नहि छलहुँ। मोन धक्-धक् करय लागल। एहि निर्दोष-असहाय व्यक्ति केँ खुलि क' अपन परिचय द' देबाक चाही छल। मुदा से आवश्यक बुझबाक तेहन प्रसंग एखन धरि नहि आयल छल। हम अपन हाथ झटकबाक प्रयास कयलहुँ तँ ओ आर्द्र भ' उठल—'बाबू, एकरा राखि लियौ। हमर नाम बीपीएल मे लिखबा दिऔ। वृद्धो पेंशन दिआ देब तँ बड़ गुण मानब। बहुत असिरबाद देब बेटा...।'

हम एम्हर-ओम्हर ताक' लगलहुँ। मोन डेरा गेल छल। क्यो देखत तँ की कहत। ई बेचारा किछु बुझिते नहि अछि, की होइत छैक कागतक फेरी। एक टा बीपीएल मे नाम धरायब सहज नहि अछि। एहि लेल बहुत रास प्रमाण चाही, जे एकरा लग अछिये नहि।

सोझाँ मे आफिसक नमहर सन बरंडा छल। ओतय पाया सँ पीठ टिकौने एक टा व्यक्ति चभर-चभर पान चिबा रहल छल। ओकर छिच्छा नीक नहि बुझा रहल छल। अपन पितरिया आँखि सँ ओ चारूभर घूरि रहल छल जेना कोनो हिंसक पशु शिकारक टोह मे चौचंक रहैत अछि। साक्षात ओकर ओहने गतिविधि छल। ओ बड़ीकाल सँ हमरा सबहक गोष्ठी आ हावभावक पारेख क' रहल छल। ठोरक कोन सँ बहैत पानक पीक केँ हाथ सँ पोछैत ओ सीधा ठाढ़ भेल आ एम्हर-ओम्हर चकभाउर देब' लागल।

हम कोहुना बूढ़ा सँ हाथ छोड़ौलहुँ आ पस्त होइत बजलहुँ—'बाबा, हम ओ नहि छी, जे अहाँ बूझि रहल छी। हम ई सब काज नहि करैत छी। हम तँ अपने काज नहि भेला सँ परेशान भेल छी।'

आब कोनो उपाय नहि छल। बूढ़ाक भ्रम भंग करब आवश्यक छल। अपराध बोध सँ फँसल स्वर मे हम ओकरा सही बात बता देलियै। हमरा अनुभव भ' गेल जे बूढ़ाक हृदय टूटि गेल छलै। ओकर दुनू हाथ निरताकति भ' लटकि गेल रहै। आ ओ ओतय ठाढ़े रहि गेल। समस्याक गहीँर खधारि सँ उबरबाक जे डोरि ओकरा हाथ लागल छलै, ओ क्षणहि मे टूटि गेल रहै।

पचास टाकाक नोटक बदला सब काज भ' जेबाक जे भ्रमजाल ओ अपने पसारि लेने छल, ओ सहजहि समटा गेलै। हम निर्मम जकाँ सधल डेग सँ आगाँ बढ़बाक प्रयास कर' लगलहुँ। बूढ़ा धीरे-धीरे बरंडा धरि आयल आ ओही देबालक भरें टिकि क' बैसि गेल, जतय किछु काल पहिने ओ अपरिचित पितरिया आँखि बला ठाढ़ छल। ओ धूर्त्तता भरल भाव-भंगिमाक संग ओकरा लग आयल। ओ एकदम सटि क' ठाढ़ छल। बूढ़ा मुँह उठा क' ओकरा ताक' लागल। ओ जावत किछु बुझैत तावत ओ व्यक्ति बाजि उहल—'बाबा, ककरा-ककरा पकड़ि लैत छियै अहूँ सब, कब्बर मे पैर लटकल अछि आ लोक केँ नहि चिन्हलहुँ एखनधरि।' अपनत्व सँ भरल मुस्की ओढ़ने ओ बूढ़ा केँ सहचेत कयलक। बूढ़ा भावहीन जकाँ ओकरा दिस ताकि रहल छलै।

—'लाउ टाका।' मोड़ल-मोचरल ओहि टाका केँ बूढ़ाक मुट्ठी सँ लगधग ओ छीनि लेलक—'उठू, आउ हमरा संग। कहै छै किने! हमरा रहैत एहन कोन काज अछि, जे संभव नहि होइ।'

बूढ़ा यंत्रवत उठल। भीड़ बढ़ि गेल छलै। बरंडा पर लोक सब केँ ठेलैत ओ तेजी सँ कतहु गुम भ' गेल।

साँझ पड़ि गेल रहै। आब भीड़ सेहो पतरा गेल रहै। तखन धरि बूढ़ा आँखि मे विरक्तिक विराट भाव लेने स्थिर ठाढ़े रहल। दूर सँ लगैत छलै जे बूढ़ा अखनो ओहि दिस ताकि रहल छलै, जेम्हर ओ पितरिया आँखि बला तेजी सँ जाइत कतहु गुम भ' गेल छलै।

आलोड़न

भोरुका पहर कौआक डाक क्यो सुनलक नहि सुनलक, काकीक बाढ़निक सरसराहटि सँ आँगनक लोकक निन्न टुटिये जाइत छनि। बाढ़नि ससारैत काकी ड्योढ़ी दिस बढ़लीह। सड़क सोझे देखाइत छल। एक टा टैम्पू सड़क सँ भोंपू बजबैत निकलि गेल। ओ बाढ़नि देब छोड़ि क' ड्योढ़ीक अधखुलल फटक केँ पूरा खोलि देलनि। आ गरदनि उठा क' दूर-दूर धरि सड़क केँ निहारय लगली। माथ पर पड़ल दबावक कारणें दुनू भौंहु घोकचि क' एक दसेरा सँ सटि गेलनि।

सड़कक ई निरीक्षण हुनक दिनचर्याक अभिन्न अंग थिकनि। आनो दिन जखन कखनो पलखति होइत छनि, अभ्यस्त बड़द जकाँ हुनक डेग ड्योढ़ी दिस बढ़ि जाइत छनि आ ओ एकसरे चुपचाप अबैत लोक-वेद आ कि रिक्सा-साइकिल केँ निहारैत रहैत छथि। एहने मे कखनो कोनो ने कोनो टटका समाचारक सूत्रो पकड़ा जाइत छनि जे आँगनक अन्य स्त्रीगण सभक चाहक स्वाद केँ दुगुना क' दैत अछि आ चर्चाक एक टा गंभीर मुद्दा बनि ओ समाचार कतेको दिन धरि अँगना आ ओसार मे घमासान मचौने रहैत अछि।

एखन ई टैम्पू हुनकर दिमागक कोनो नस केँ खैंचि देलक। ओ अपन स्मृति केँ टोहलनि तँ भक् द' मोन पड़लनि जे एहि बीच दू-तीन मासक अन्तराल मे कतेको बेर ई टैम्पू एम्हर सँ बहरायल अछि। रंगो भरिसक ओहने अछि, हँ-हँ, लाले छलै। टैम्पूक ललका छत्ती मोन पड़लनि तँ मने मन आश्वस्त भेली।

ड्योढ़ीक बाहर दूर धरि सड़क जाइत छल। दुनू कात घर-आँगन जग-जग करैत छल। हुनकर पड़ोसियाक पड़ोसियाक पड़ोसिया छलखिन हीरा दाय। मास्टरनी छलीह। टोलाक धीयापूता आ कि बूढ़-जुआन सब हुनका दीदीये जी कहनि, कियैक तँ ओहि टोलक धीयापूता केँ पढ़ाबथि। ठामहि स्कूलो छलनि। पड़ पैघ घर-आँगन। बड़ सुभितगर छली। जमीन-जालक कमी नहि। मुदा सभ किछु अछैतहु भगवान...काकी आँखि गड़ा क' ओम्हर तकैत रहली। टैम्पू तँ कखन कहाँ ने भागि गेलै मुदा हुनक दृष्टि सड़क पर एना ने गड़ल छलनि जेना कोनो खसलाहा सिक्का तकैत होइ।

हो ने हो ई टैम्पू निश्चिते हीरा दायक घर सँ बहरायल अछि। ई गप हुनका मानस मे दूधक माखन जकाँ मथ' लगलनि जे आखिर कतय जा सकैत अछि ई ललका टैम्पू...सेहो एतेक भिनसरे...के सब सवार छल ओहि मे...बेर-बेर कतय जाइत छथि ई सब...पहिने तँ बुझियैक जे डाक्टर-वैद्यक चक्कर थिकै मुदा आब... ?

अपन अथाह जिज्ञासाक पोखरि मे ओ उभ-चुभ करिते छली कि ओहि टोलक अवैतनिक समाचार वाचिका लाठी टेकैत, कुहरैत हुनक ड्योढ़ी मे पैसलीह। अन्हरोखे उठि क' टहलय जाइत छथि। मुदा एक बेर तेहन खसलीह कि दहिना हाथे टूटि गेलनि। कहुना क' ओहि दुख सँ उबरलीह कि नहाइत काल कले पर फेर खसि पड़लीह। डाँड़े टूटि गेलनि, तहिया सँ लाठीए एक टा सहारा छनि। ओकरे धयने-धयने भोरे-भोर टहलय जाइत छथि। कहियो काल काकियो संग ध' लैत छथि। नीक बहिनपा छनि।

सखीक जीवटपना पर काकी केँ कखनो काल क्षोभो होइत छनि। एहन टांग-हाथ लेने ई सौंसे टोल घूमि अबैत छथि। ओ तँ घरेक काज-धंधा मे अपस्याँत भ' जाइत छथि। डाहक कोनो अप्रत्यक्ष परत हुनकर मोन केँ छापने रहैत छनि। मुदा दुनू सखीक जिजीविषा जिज्ञासा दोसराक फाटल मे टांग अड़यबाक लिलसा विलक्षण छनि। घर-आँगन आ कि टोल-पड़ोस, ककरो की मजाल जे हुनका सभ सँ कोनो बात नुका लेथि। सात तह मे दाबल-सैंतल घटनाक पन्ना हुनका दुनूक आहटिये सँ फड़फड़ा उठैत अछि। काकी केँ बड़ सुविधा छनि, ड्योढ़ी-ए पर ठाढ़े-ठाढ़ सभ रस आ समाचार सँ ओ अवगत भ' जाइत छथि।

बामा हाथेँ ठेहुन धयने काकीक सखी जहिना चबुतरा पर पयर देलनि कि काकी हुनका सहारा दैत भीतर क' लेलनि। चबुतरा कने ऊँच छलै। डेग बढ़बैत-बढ़बैत ओ काकीक मुँह दिस अर्थपूर्ण दृष्टियेँ तकलनि।

जाड़ एहन छलै जे दुनू वृद्धाक हाड़ काँपि रहल छलनि। भोरका पहरक ठंढ़ा बिसबिस्सी भरल होइते छैक जाड़क मास मे। काकी आ हुनक सखी दुनू वात रोग आ भाँति-भाँतिक रोगक मारल मुदा हिनका सभक भाग्य मे चैन नहि लिखल छनि। काकीक बहिनपा जाधरि चारि घरक गप-शप सुनि नहि लैत छलि ताधरि हुनका राति मे निन्न नहि होइत छलनि। एखनो जाड़ सँ सर्द भेल आँखि मे जेना कतेको रास रहस्य भरल छलनि, जकरा काकी केँ सौंपबा लेल ओ उताहुल छलीह।

डेग बढ़बैत पुछलनि—'कोना छी बहिन ?'

काकीक उत्तरक प्रतीक्षा कयने बिनु ओ पुनः प्रश्न दोहरौलनि—'एक टा बात बुझलियै की ?' कने काल पहिलुक अपन जिज्ञासा हुनक मंद पड़ि गेल छलनि मुदा अपन सखीक माध्यमे कोनो नव समाचारक पसरल थारी देखि क' हुनकर जीह

चटपट करय लगलनि। कने उत्साहित होइत ओ हुनक हाथ पकड़ि क' आँगन ल' अयलीह।

आँगन मे धुआँ पसरि गेल छलै। पुतोहु उठि गेल छली। छांछी मे गोइठा सुनगा क' घूड़ क' देने छली। एतबा दरेग सासु पर छनि हुनका।

पीढ़ी आगाँ घुसकबैत बजली—'पहिने हाथ तापि लिय', तखन किछु सुनब। बड़ जाड़ छै।' ओ अपनो सहटि क' बैसि गेली।

सखीक चेहरा पर कुटिल मुस्कान खेलय लगलनि। ओ देह भरिक दबाव एक बेर दुनू ठोर पर देलनि आ बाजलि—'हीरा दाय फेर गेली जमीन कीनबा लेल, बेटी-जमाय सेहो संगे छनि।'

—'अँय, सत्ते ?' काकी जेना आकास सँ खसली। ई समाचार हुनका लेल तेहन अकल्पनीय रहनि जे ओ असहज भ' उठली—'मासो दिन तँ नहि भेल अछि दू बीघा जमीन किननाइ गै बहिन...।' काकी दहिना हाथक चारि टा आँगुर सँ दुनू ठोर दाबैत बजली।

—'हँ तँ, भेबे केलैए।'

—'सुआइत की ! तखने तँ कही जे हुनके दिस सँ ललका टैम्पू बहराइत अछि। जाइत हेती रजिस्ट्री करबय।'

—'हँ यै...।' सखी काकीक पीठ मे आँगुर सँ स्पर्श करैत अपन संक्षिप्त सहमति खोंसलनि।

—'गै दाय, एकरा एकोरत्ती शोक-सोगारथ छै...' काकी अपन हाथक गति बदलैत माथ पर बजारैत बजली—'एत्ते बड़का डांग पड़लै आ कोनो सोग-व्यथा नहि। गै बहिन, हमरा तँ किछु दोसरे अंदेशा लगैत छौ...।' काकीक स्वर अनचोक्के शोकाकुल सँ रहस्यमयी भ' उठलनि।

सखी कोनो विकट रहस्योद्घाटनक प्रतीक्षा मे आँखि पसारि क' काकी दिस तकलनि। चेहराक कुटिलता तत्काल कतहु पड़ा गेल छलनि।

काकी हुनक कान लग मुँह ल' जा क' पुसफुसयलीह, 'हमरा तँ होइत अछि जे छौंड़ा केँ अभेला क' क' मारि देलकै...।'

—'अँय, ई की कहैत छियै ?' सखी किछु सहमत, किछु असहमत भावेँ विरोध दर्ज कयलनि, 'भ' सकैए। साल भरि सँ तँ बीमारे रहै ने, ओछाइने धयने रहै।'

—'हँ, गूंह-मूत, कपड़ा-लत्ता करैत-करैत अकच्छ भ' गेल हेतै...।'

—'हँ गै दाय ! यैह समांग दालि-भात। समांग नहि तँ के माय आ के बाप ?'

दुनू प्रौढ़ाक चेहरा पर कने कालक लेल एक टा दार्शनिक भाव प्रकट भ' उठलनि। पड़ोसिया परिवारक ई मुद्दा एतेक गंभीर छलै जे जाधरि एकर तह-दर-

तह उघाड़ि क' ई सभ ओहि मे पैसि नहि जेतीह, ताधरि हिनका सभ केँ अन्न ग्रहण नहि हेतनि।

आब काकी केँ कोनो संदेह नहि रहनि जे ओ ललका टैम्पू हीरे दायक रहनि।

हीरा दाय ओहि मोहल्लाक प्रतिष्ठित महिला छली। अपन स्वभाव आ व्यवहार सँ सभ केँ मोहने छली। मुदा एहि सब मे किछु तत्व एहनो पैसल छल जे अछाहे हुनक सम्पन्नता आ मान सँ जरि-जरि छाउर होइत छल। एहि सभ मे बेसी स्त्रीए छलि। हुनक अविचल, धैर्यवान आ स्वाभिमानी व्यक्तित्व किछु लोक केँ आलोड़ित करैत रहैत छलनि। ई सभ सदति अपन कुंठा पर परदा देबाक प्रयास मे हुनका नीचा देखयबा सँ कहियो नहि चुकैत छलि। आ एखन तँ सहजे जरनिहारे सबहक गोटी लाल छलै।

घरे-आँगन टा नहि, लगपासक सभ स्त्रीगणक दृष्टि, हुनक चालि-ढालि आ खास क' चेहरा पर गिद्ध जकाँ गड़ल रहै। जँ कहियो काल हुनक मुँह म्लान देखाइ पड़नि तँ ओ सभ एक टा करुणा भरल आनंद मे सराबोर भ' जाथि। हिनका सभ केँ खास क' आँगनक देयाद-वाद केँ एक टा क्रूर प्रत्याशा सदति गछारने रहैत छलनि जे कखनो तँ ओ अपन दुख-संताप हुनका संग सझिया करती, कखनो तँ हुनक पयर डगमगयतनि आ ओ अपन आँखि सँ झहरैत नोरक कोनो अवलम्ब हेरतीह।

युवा पुत्रक एहि तरहें देह त्यागि देनाइ दैवक दंड नहि तँ आर की भ' सकैत अछि? आ से दंड हीरा दाय सहजे भोगि लेलनि... भोगिये रहल छथि। मुदा एखनधरि हुनक आँखिक नोर क्यो आन नहि देखने हैत।

सात तालाक कुंजी अंगेजने हीरा दाय नहि जानि कोन तहखाना मे मोनक संताप दाबि क' रखने छली। समय-कुसमय जखन अवसर भेटय, हित-अपेक्षित कोनो ने कोनो तरहें हुनक दुखाइत रग पर हाथ देबे टा करथि आ ओ बात केँ बदलि सभक इच्छा-आकांक्षा पर पानि फेरैत हुनका सभक मुँह अपने सन बना दैत छली। यैह छलनि हुनक वैशिष्ट्य।

अतीत दिस करौट फेरिते देखाइ पड़ैत छनि। सभ तरहें सुख-संपन्नता सँ पूरित रहलाक बादो एक टा कमी हुनका बहुत दिन धरि अखरैत रहलनि। एक टा पुत्रक अभाव मे महल-अटारी सभ सुन्न छलनि। अपना तँ हुनका कोनो तेहन फिकिर नहि होइत छलनि मुदा सर-संबंधी आ सासु-ससुर केँ जेना उरकुस्सी लागि गेलनि। बेटी दस बरखक भ' गेल छलनि। मुदा ओहि बेटीक कोनो मोजरे नहि छल। जाधरि एक टा संतान पुत्रक रूप मे नहि भेल, ताधरि कोखि अशुद्धे रहल। बेटी संतानक श्रेणी मे नहि छलि। गाम-घरक ओहि पिछड़ल-पाखंडी व्यवस्था मे हीरा दायक दम जेना फड़फड़ा रहल छलनि।

बेटी सँ नहि तँ वंश बढ़य वला छलनि आ ने ओ आगि द' सकैत छल माता-पिता केँ। फेर तँ आत्मा तँ भटकिते ने रहि जायत हीरा दाय आ हुनक पति केर।

ई समस्या गाम-घरक प्रबुद्ध लोक सभक चिन्ताक प्रमुख कारण छल। हीरा दायक पतिक कान मे जखन-तखन पघिलल शीशा जकाँ टघार पड़ैत रहैत छल। ओहो निराश भ' गेल छलाह जे आब बेटा नहिए भ' सकत। तँ एक्के टा उपाय छल, दोसर विवाह। अरिजन-परिजन सभक सहयोग रहबे करनि।

हीरा दायक सासु तँ घोषणो क' देलनि, 'आब अहाँ बेटाक आस जुनि करू। बौआक विवाह हम करयबै...सौतिनक बेटा केँ अपन बेटा बुझ' पड़त अहाँ केँ।'

सासुक एहि कठोर निर्णय सँ हीरा दाय सन्न भ' गेली। एक टा अनाम, अपरिचित सौतिनक छवि अवचेतन मे आकार लेब' लगलनि। हुनक माथ चिन्ता सँ फाट' लागनि आ सौंसे देह मे झुरझुरी पैसि जानि।

ओ समय विकराल रहै। कोर्ट-कचहरी आ सरकारी कानून स्त्री सभक लेल एतेक उदार नहि रहै। पुरुषक प्रभुत्व तेहन जोरगर छल जे ओ जखन चाहैत तखन बेटाक पुनर्विवाह क' सकैत छल।

एहि विकट परिस्थितिक सामना करबाक कल्पना मात्र सँ हीरा दाय सिहरि उठैत छलि। आर तँ किछु नहि, समाजक आँखि मे जरैत प्रश्नक दाह सँ लोहछ' जरूर पड़तनि। कतेको ओझा-गुणी, डाक्टर-वैद-हकीमक ओ चक्कर लगौलनि, मुदा सब बेकार। आब भगवाने पर आसरा टिकल रहनि। ओ तँ सबहक छथिन। सौंसेक हारल-मारल अंत मे हुनके शरण जाइत अछि।

अनगिनती व्रत-उपास, पूजा-पाठक प्रसादें भगवती हुनको गोहार सुनलनि आ हीरा दाय केँ पुत्ररत्नक प्राप्ति भेलनि। नेनाक जन्म की भेल, सभतरि इजोत पसरि गेल।

बड़ जतन सँ पोसायल ओ नेना। ओसरा-आँगन रुनझुन डोलैत जेना अनचोक्के जुआन भ' गेल। हीरा दायक जीवन मे तँ जेना इन्द्रधनुषक सातो रंग मिज्झर भ' गेल छलनि। आब हुनका कोनो चिन्ता नहि छलनि। संसारक सभ टा सुख हुनका सहजे प्राप्त भ' गेल छलनि।

हीरा दाय दुनू परानी जान अरोपने छल ओहि बेटा पर। समयक पाँखि पर सवार जीवन हरिआइत रहल आ ओहि यात्रा मे ओकर सभ टा क्रियाकलाप यंत्रवत् चलैत रहल। हीरा दायक बेटा पढ़ि-लिखि क' नोकरी करय लागल। फूल सन कोमल बहुरियो घर आयल। लगले-लगले दू टा राजकुमारे सन पोता सेहो भ' गेलनि। सुखक तँ जेना बरखा होमय लगलै ओहि घर मे।

ऊपर-ऊपर तँ लोक-वेद हुनक भाग्यक सराहना करय मुदा तरे-तर सभ केँ

जरनी लागय। माछी-मच्छड़ घन-घन करय तँ सुनबा मे आबय, 'आब एकरा कोन दुख छै, काल्हि धरि तँ कनैत छल। आब निताइत अछि। भगवान देबौ केलकै तँ एक्के बेर सभ किछु उझीलि देलकै। केहन हरखित रहैत अछि हरदम...।'

ओ एक काने सुनथि आ दोसर काने निकालि देथि। दुख कने अवश्य होनि जे एहि तरहक भाव लोक मे किएक होइ छैक। अनकर सुख सँ सुखी आ अनकर दुख सँ दुखी किएक नहि होइत अछि लोक।

हीरा दाय स्वयं परोपकारी छलि। सभ धीयापुता केँ नीक शिक्षा, नीक संस्कार दैत छलि। ककरो दुखी आ उदास मुँह हुनका नीक नहि लगनि। जतबे जरनिहार रहनि, ततबे मान-दानो करय बला रहनि हुनका। मुदा एक दिन कालक निष्ठुर चक्र तेहन निर्ममताक संग घुमल जे ओ ओहि मे फँसि क' रक्तश्लथ भ' गेली। हुनक आत्मा हाहाकार क' उठलनि। विश्वासक एक टा मजगूत बन्हन बीचे मे टूटि गेलनि। एना कोना भ' सकैत अछि... जकरा भगवान सँ लड़िक' ओ अनने छलि, ओ अनचोक्के हुनका धारक माँझ मे डूबैत छोड़िक' कतहु कोना पड़ा सकैत अछि...।

कतेको बेर सोचथि ओ। बेर-बेर भगवानक फोटो लग घंटो बैसल। भगवानो अपना ऊपर दोष कहाँ लैत छथिन। बहुत दिन धरि हँसा-खेला क' रखलनि धरती पर। जीवनक माध्यमे, जखन सहाराक जरूरति होइत छैक, ओहि वरदान केँ घुरा लेलनि।

दू टा छोट-छोट नेना केँ हुनक वृद्ध कान्ह पर ओंगठा क' हुनक एकमात्र पुत्र विदा भ' गेल। वज्रपात भेल छलै। सभकिछु जेना ओहि मे स्वाहा भ' गेलै। जवान विधवाक जिम्मेवारी, अबोध नेनाक लालन-पालन। घरबला तँ कोनो जोगरेक नहि रहि गेलनि।

मुदा ई की...। शुभचिन्तक आ सहानुभूति देखौनिहारक उदारताक खजाना पसरले रहि गेलनि। हीरा दाय ओम्हर तकबो नहि कयलनि। पसरल चादरि धीरे-धीरे समटा गेल। हुनक कोनो भाव-भंगिमा असहज नहि रहनि। सभकिछु अपना धुरी पर निर्लिप्त घुमैत। सभ काज ओहिना सम्हारल-ठेकनायल। भरि आँगनक लोक केँ ठकमूड़ी लागय। बाहरो टीका-टिप्पणी होइ।

बरख धरि बीमार पड़ल रहै बेटा। कतय-कतय नहि इलाज करौलनि। सभ टा गहना-गुड़िया बिका गेलै। कर्जक भार हाड़ तोड़ि देलकनि मुदा कहियो मुँह मलिन नहि भेलनि। ओहि परोपट्टा मे ई आम चरचाक विषय भ' गेल रहै। जनी-जाति तँ जे-से, पुरुष वर्ग सेहो बजबा सँ नहि धखाइ।

माझिल देओर अपना कनियाँ लग कनफुसकी करथि, 'हद भ' गेल आँगनक हाल। भौजी केँ तँ कनियों टा विषाद नहि होइत छनि...।'

—'हँ, मौगीक करेजा कतहु एतेक निस्सन होअय! जुलूम बात अछि...। देखैत छियैक बेसी काल घर सँ बाहरे रहैत छथिन। दबाइ-दारू, हटिया-बजार अपने करैत छथिन।'

—'हूँ, भैया केँ तँ कौड़ीक मोल नहि बुझैत छथिन।' देओरक मुँह विकृत भ' जानि।

जतेक मुँह ततेक गप। एक टा भयानक अन्हार कतहु पसरल छलैक आ ओहि अन्हार मे कोनो जगमग करैत अमूल्य वस्तु मिझा क' हेरा गेल छलै। तकबाक तँ बाते नहि, क्यो जानबाक लेल तैयारे नहि जे ओ वस्तु की छल।

बेटी आबि गेल छलनि। अंतिम सम्बल। ओकरे कान्ह पर माथ रखलनि। आ चुपचाप बेटाक क्रिया-कर्म क' क' हीरा दाय उत्रृण भ' गेली। जाहि बेटा सँ एक टा काठी लेबाक लेल कठिन सँ कठिन व्रत कयलनि, ओहि बेटा केँ अपनहि हाथें मुक्तिधाम विदा क' देलनि।

थोड़बे दिन मे लगलै जेना एक टा भयानक बिड़रो उठलै आ फेर सभ किछु शांत...। लाखक लाख टाका हुनकर बेटी भाइक बीमारी मे खर्च कयने रहै। हीरा दाय पुत्र शोकक भार सँ जतेक दबल रहथि, ताहि सँ बेसी जमायक एहि कर्जा सँ। जतेक जल्दी भ' सकै, ओ एहि कर्जा केँ उतारय चाहैत छथि। तखनहि टा हुनक पुत्रक आत्मा केँ शांति भेटतनि।

कतेक बियावान जंगल सँ ओ अहर्निश गुजरैत रहैत छलि, केहन सुन्न आकास हुनका भीतर सांय-सांय करैत रहैत छलनि...कतेक अन्हड़ केँ धकियबैत ओ चलल जा रहल छलि, के बूझय! जमायक पैंच सदति दिमाग मे गजबा करैत रहैत छलनि।

पाइक व्यवस्था करैत छओ मास सँ बेसी भ' गेलै। कतेक दौड़-बरहा कर' पड़लनि। पतिक संग-संग अपनहुँ दौग' पड़लनि।

बेटीक पाइ घुरब' लगली तँ ओ साफे मना क' देलक। मुदा घुरयबाक तँ रहबे करय। हुनक स्वाभिमान ई किन्नहुँ सहन नहि क' रहल छलनि जे बेटी वा जमायक पाइ राखि ली। ओहि पाइ सँ नहि हेतैक तँ किछु जमीने कीनिक' ओ द' देती बेटीक नामे। एहि प्रयास मे लागल छलि। जतय-ततय जमीन देख' सुन' जाइ पड़ैत रहनि। कोनो नीक ठाम भेटैत तँ कीनल जायत।

मुदा एहिठाम तँ निठल्ला, अकाजक आ निष्ठुर कथित हित-अपेक्षित हुनक सभ गतिविधि पर हिंसक नजरि गड़ौने छनि। विस्मय सँ हुनका सभक आँखि टंगले रहि जानि। लोकक सोचक दायरा मे हुनक किछु दोसरे प्रतिबिम्ब बन्द रहनि। ओ सभ सोचथि जे हीरा दाय केँ घर बन्न क' कनैत रहबाक चाही। सुखा क' कांट भ' जयबाक चाही। क्यो-क्यो तँ एहनो आस राखथि जे मास दू मासक भीतर पुत्रशोक

मे हुनका मरि जयबाक चाही। मुदा चाहियो क' ओ कोना मरितथि। दू टा बालबोध कैँ के सम्हारतै। ठाम-ठाम गाछक डारि पर बैसल गिद्ध-दृष्टि सँ अपन पुतोहु कैँ के बचौतैक। मोन तँ ठीके भेल रहनि जे संगे जरिक' स्वाहा भ' जाथि, मुदा...।

साँझक छिटपुट अन्हार भ' गेलै। हुनका भगवान लग दीपो लेसबाक मोन नहि करैत छनि। आब पूजो पाठ छोड़ि देलनि। पूजा घर दिस तकबो नहि करैत छथि।

बेटी भाउज कैँ ल' क' डाक्टर लग गेल छलि। देरी बड़ भ' गेलनि। ओ बैसले रहलि। किछु मोन पड़लनि तँ उठलीह। आँखि ऊपर उठौलनि तँ काकी कैँ अपन सखी संग ठाढ़ देखलनि। कने चौंकि गेली—एहि मुनहारि साँझ मे साँझ-बाती बेर ई सभ कियैक आयल छथि ? ओ ई सोचैत हलसि कैँ हुनका सभक स्वागत कयलनि।

भोरहि सँ एहि दुनू प्राणी कैँ ललका टैम्पू फिरीशान कयने रहनि। जाधरि अपन जिज्ञासा कैँ ओ सभ शांत नहि क' लितथि, ताधरि हुनका सभ कैँ चैन नहि पड़तनि।

दुनू गोटे अपन चेहरा कैँ मनहूस बनयबाक अभिनय करैत, अपन अयबाक उद्देश्य कैँ नुकयबाक प्रयास करैत कटाक्ष कयलनि—'की यै दाय, आर सभ नीके ने ?'

—'हँ काकी, सभ नीके अछि।'

—'सुनबा मे आयल अछि, जमीन लेलहुँ फेर ?' ई कहैत काकी अपन सखी कैँ आँखि मारलनि। सखी मारल आँखि झलफल अन्हार मे देखलनि वा नहि, से काकी नहि बूझि सकलीह, मुदा आँखि मारि क' हुनका अपन कटाक्ष सफल बुझा पड़लनि।

काकी फेर टिपलनि—'की भाव पड़ल ?'

हीरा दायक कोनो उत्तरक प्रतीक्षा कयने बिना ओ अपन सखी सँ गप करय लगली। सभ गप्पक सारतत्व हीरा दायक दुर्भाग्य सँ पूरित छल।

सखी अपन सुखायल आँखि कैँ आँगुर सँ रगड़ैत संवेदनाजनित उसांस छोड़ैत टूटैत शब्द मे बजबाक चेष्टा कयलनि—'भगवानो बड़ अन्याय क' दैत छथिन कखनो कैँ...कहू, हीरा दाय संग कतहु एहन होइ... ?'

हीरा दाय कैँ बूझल छलनि जे हिनका सभक संवेदना, संवेदना नहि, वेदना कैँ पोषित करबाक एक टा कुंठित प्रयत्न थिक। हुनका आँखिक सोझाँ कने काल लेल निराशा आ अपमानक घनगर अन्हार पसरि गेलनि।

अपन पड़ोसियाक प्रायोजित व्यवहार सँ हुनक सर्वांग धधकि उठलनि। ओ किछु सोचय नहि लगलीह। संबंध आ अपनैतीक स्वांग भंग करैत दुनू स्त्री कैँ दरबज्जा दिस ठेलैत चिकरि क' बाजलि—'सुनि लिय' अहाँ सभ, हमर नोर, नोरक

प्रतीक्षा करय बला लग नहि खसतै, कहियो कानबाक लेल एकसर अन्हारे पर्याप्त छैक आ नोर पोछबाक लेल अपन गेरुए बहुत छैक। हमरा लेल अहाँ सभ जाउ आ भरि-भरि नोर कानू...।'

ओ दुनू स्त्री खसैत-खसैत बचलीह। ड्योढ़ी सँ बाहर कोहुना अयलीह आ कनैलक गाछ तर अकबका क' ठाढ़ भ' गेली। हीरा दाय सँ एहि प्रकरणक कनियों टा आशा हुनका सभ कैँ नहि रहनि। दू-चारि डेग आगाँ बढ़ैत एक गोटे बजली, 'हे दैब! ई मौगी थिक कि देबांल ?'

—'एक टा बात कही बहिन...।' दोसर स्त्री फुसफुसयली।

—'की ?' पहिल कने सहटि अयलीह। एक बेर उनटि क' पाछाँ तकलीह। कतहु पाछाँ मे ठाढ़ भ' क' सुनैत तँ नहि छथि हीरा दाय...। मुदा आश्वस्त होइत सखी सँ प्रश्न कयलनि, 'हमरा तँ लगैए, कतहु बताहि तँ नहि भ' गेलै ई ?'

—'हँ, बताहि कैँ तँ नोर नहि बहराइत छैक।'

—'तखन ? आ ताकति देखलियैक की ? कोना कैँ ठेललकै ? बताह कैँ हाथिये जकाँ ताकति भ' जाइ छै कि ने ?'

दुनू एक-दोसरा कैँ एहि संभावित यथार्थ सँ अवगत करबैत आगाँ बढ़ैत गेलीह। सड़क पर डेग बढ़बैत काकी खिन्न स्वरें बजलीह, 'मार मुइइ कैँ, कोन फेर मे पड़लहुँ...। जल्दी चलू, साँझक बेर भेलै...।'

खाता नंबर

हमरा सभ सड़क सँ नहि, जेना हवाक बस्ती सँ गुजरि रहल छलहुँ। जनवरीक अहल भोर मे आतिथ्य सँ ओत-प्रोत हुनक गंभीर स्वागत-राग सुनैत हम सभ बढ़ल जा रहल छलहुँ। ने तँ उधिआइत केश सम्हरि रहल छल, ने देह पर राखल ओढ़ना। ई बताहि हवा जेना जिद पर उतरि आयल हो। हवा भरिसक अपन बस्ती मे रोकि लेब' चाहैत छल अथवा देह परक ओढ़ना केँ उड़िया देब' चाहैत छल। एक हाथें ओढ़ना सम्हारैत आ दोसर हाथें केश केँ सम्हारैत हम बाइक पर असहज बैसल रही। निर्जन सड़कक दुनू कात खेते-खेत। खेतक ओहि पार पैघ-पैघ शीशो आ आमक गाछ, जकर झुरमुट सँ कोयलीक कूक सुनाइत छल। कोबी, मटर, बदाम आ सरिसोक खेत मे इतराइत हवा कखनो अपन हल्लुक झोंक सँ फसिल केँ दहिना बामा झुकबैत तँ कखनो मुक्त क' दैत छल। सरिसोक खेत मे ओछाओल पीयर चादरि हिलि-हिलि केँ जेना बजबैत हो। कोनो-कोनो कोला मे झुंडक झुंड प्रवासी पक्षी निर्द्वंद्व निश्चित भाव मे बैसल छल। बाँसक सघन बीट सँ सांय-सांय करैत हवा ओकरा सभ केँ जेना तंग नहि करबाक चेतौनी दैत हो। अद्‌भुत सम्मोहन! हम ओतय रुकय चाहैत रही। फूलक संग, ओकर गाछ सँ सटि गप करय चाहैत रही। हवाक गीत सुनि ओकरा धन्यवाद देब' चाहैत रही। जँ क्यो हमर अंतिम इच्छा पूछय तँ हम अगिला जन्म बगरा बनबाक कामना करब। कोनो दीन-हीनक मड़ैया मे अपन खोंता बनायब। निर्द्वंद्व पाँखि फड़फड़बैत ओकरा सभ केँ शांति आ धैर्य देबाक प्रयास करब। ओहि मड़ैया मे मोट-मोट बंद दरबज्जा तँ नहि होयत, जे बंदे रहैत अछि। सदैव कंकरीटक, भोत्थर, डेराओन अनेक तल्ला मकान मे। जतय चारूकात हो-हल्ला मचल रहैत अछि, अनेक चीत्कारक ध्वनि आ तैयों कोठरीक भीतर वैह भुतहा एकाकीपन...।

भय, संशय आ चिंता। असुरक्षित वर्तमान, संदिग्ध भविष्य...यैह तँ थिक आडम्बर आ छल सँ भरल कंकरीटक जंगल मे। एही भय मे तड़पि रहल छी। एकरा मात्र मनुक्खेक भाग्य मे रखने अछि परमात्मा। पशु अपन जीवन मे मात्र

एक बेर डरैत अछि, जखन मृत्यु ओकर निकट होइत छै। मुदा मनुक्ख! प्रत्येक क्षण भय आ संशय मे डूबल...बेसीकाल जीवनक वास्तविक तथ्यक आनंद नहि उठा पबैत अछि। मनुक्खक एही भीड़क एक हिस्सा हमहूँ छी। अत्यंत सामान्य मनुक्ख। बीतल वर्तमान आ आब'बला घटनाक खिच्चड़ि पकबैत, खिझैत आ तमसाइत...।

अपन एकमात्र पुत्रक भविष्यक चिंता मे अवसन्न रहैत छी। एहि चिंता सँ मुक्ति पयबाक लेल पंडित-जोतखीक शरण तकैत रहैत छी। हमरे जकाँ अनेक लोक अछि जे आन्हर इनार मे भविष्य केँ टोबैत-टोबैत ओही मे खसि जाइत अछि। अपन त्रासद ग्रंथि सँ मुक्तिक कोनो ने कोनो उपाय तकैत सत्यक दर्शन सँ चूकि जाइत अछि।

ओह! ई कतय सँ अभरि आयल। ई दिमागक हजार गलीक लक्ष्य थिक। कतय सँ कतय भटकैत। मन केँ धिक्कारैत छी। विश्वासक एक अहम भाव थिक। हस्तरेखाक कोनो पोथी मे देल गेल चेतौनी बेर-बेर मोन पड़ैत अछि। टिप्पणी देखबैत काल अथवा हस्तरेखा परीक्षण करबैत काल आचार्यक प्रति आस्था आ विश्वास होयब अत्यंत अनिवार्य थिक। जँ से नहि हो तँ नहि देखयबाक चाही। सुनैत छी प्रभाव उनटा पड़ैत अछि।

अनेक बेर एहि मोहक बाट सँ गुजरि चुकल छी। जोतखीजी भाग्यवान छथि, जिनका एहेन दृश्य प्रतिदिन देखाइत हेतनि। एहि बाटें जयबाक अछि हमरा जोतखीजीक ओतय। बेटाक पच्चीस बर्ख पुरान टिप्पणी ओरियाक' कागत मे समेटि अनने छी। हुनक समय अमूल्य छनि। ओ पैघ-पैघ नेताक टिप्पणि देखैत छथि। कखनो कोनो गप गलत प्रमाणित नहि भेलनि अछि। मुँह सँ जे शब्द बहरायल, सैह ब्रह्मवाक्य। हुनक डंका बजैत अछि।

एक मास पहिने एतय आयल रही। एहि बाट सँ गुजरैत, प्रकृति सँ मौन वार्तालाप करैत। ओहि दिन जोतखीजी जल्दी मे रहथि। स्वागत बहुत आह्लाद सँ कयलनि मुदा टिप्पणि पर ओहिना दृष्टि फेरलनि, अन्यमनस्क जकाँ। हल्लुक जकाँ व्याख्या कयलनि, जाहि सँ हम संतुष्ट नहि भेलहुँ। मोन बेर-बेर किछु विशेष आ साफ-साफ बुझबाक लेल हुनके दुआरि पर अटकल रहल।

ओही समय प्रयाग सँ एक महान जोतखी हमरा परिसर मे आयल रहथि। स्वामी देवतीर्थ आचार्य परमपद हस्तरेखाविद सर्वशास्त्र व्याख्याता अक्षय महाराज। हम हुनक उपाधिक शौर्य सँ सम्मोहित हुनक महादरबार पहुँचि गेलहुँ। ओ बड्ड मनोयोग सँ टिप्पणि देखलनि आ एक नव बात बतौलनि जे पूर्व जोतखी जी नहि बतौने रहथि।

हमर सोच केँ बल भेटल। हम तँ पहिने बूझि गेल छलहुँ जे ओ शीघ्रता मे सत्य भविष्यवाणी नहि कयने रहथि। मुदा छथि तँ ओ निष्णात। हुनक कथन कहियो असत्य साबित नहि भेल। हम आब फिरीशान भ' गेल रही। ज्योतिष तँ शास्त्र थिक, फेर एकर अध्ययन आ ज्ञान मे अंतर कोना भ' सकैत अछि? अक्षय महाराज जे बात बतौलनि, ओहो कियैक नहि बतौलनि? हमर शांति गायब भ' गेल। कोनो फैसला हम नहि क' सकैत छलहुँ।

धिक्कार हमरा मोन केँ। आचार्य सभ पर आँखि मूनि विश्वास नहि करबाक ई दुर्गुण हमर व्यक्तित्व केँ परिवार मे हास्यास्पद बना देने छल। मुदा जे हो, एक विशिष्ट बात जे ओ नहि बतौलनि, नवका जोतखी जी से बता देलनि। भ' सकैत अछि, आँखि सँ कम देखाब पड़ल हो अथवा ओही दिन कतहु जयबाक शीघ्रता रहनि। मुदा छथि तँ वयसाहु, अनुभवी आ पारंगत। घूमि केँ मोन फेर ओत्तहि अटकि गेल। कियैक नहि एहि बातक पुष्टि फेर हुनके सँ करबाओल जाय।

पुत्रक विवाहक मामिला थिक। मुदा ओकर चेहरा पर नवजीवनक शुरुआतक प्रसन्नताक कोनो चेन्ह देखाब नहि दैत अछि। बहुत उदासीन आ तटस्थ भावें ओ विवाहक तिथिक प्रतीक्षा क' रहल अछि। हमरा लगैत अछि, हमसभ ओकरा संग कतहु अन्याय तँ नहि क' रहल छी। ओ ने तँ खुलि केँ हँ कहैत अछि आ ने नहि। ई अजीब सन अंतर्द्वंद्व अछि विशेष क' हमरा लेल। हमहूँ ओकरे जकाँ ने प्रसन्न भ' पबैत छी ने उदासीन। विवाहक सभ टा गप्प तय अछि। ई सभ टिप्पणिक दोष तँ ने थिक? अक्षय महाराज अपन टिप्पणी कयने छलाह जे दाम्पत्य सुखद नहि रहत कियैक तँ लड़का मांगलिक अछि। जँ कि लड़की सेहो मांगलिक अछि तँ दोष किछु सीमा धरि कटि जायत।

एहि दुर्लभ संयोगक सत्यापन लेल एक बेर पूर्व जोतखीजी लग हमरा जयबाक छल। अनेक मोड़ आ सड़क केँ टपैत बाइक हुनक दरबज्जा लग रुकल। दू टा स्त्रीगण दरबज्जा पर ठाढ़ि भेल गपिआइत छलि। हमरा सभ केँ देखि द्रुतगतियें परदाक भीतर चलि गेलि। कतहु कोनो हो-हल्ला नहि छल। जोतखीजीक खरिहान पैघ छलनि। गाय-बड़द दरबज्जा पर बान्हल छलनि आ दू-चारि टा कुरसी खाली पड़ल छल। चारू कात खेत आ तकरा मध्य मे पक्का आ खपड़ाक घर।

जोतखी जी पयर ऊपर क' कुर्सी पर जमि गेलाह। दुनू तरहथ रगड़ैत ओ हमरा सँ एम्हर-ओम्हरक गप शुरू कयलनि। बीच-बीच मे अनेक बेर ई अनुभव करौलनि जे ओ हमरा सभक खातिर अपन बहुमूल्य समय नष्ट क' रहल छला। मुदा हम ई जनैत जे हुनक समय बहुमूल्य छनि, एक हारल जुआरी जकाँ याचक बनल बैसल रही। हुनक बातक कोनो असरि हमरा पर नहि भ' रहल छल। हम मात्र एतबे कहि

सकलहुँ—'कोनो बेसी समय नहि लेब, मात्र एक टा जिज्ञासा अछि।'

आब ओ सहज भेला। गप्पक क्रम हमरा उद्देश्य दिस मोड़लक। हमर पति टिप्पणि बहार करबाक संकेत कयलनि। जोतखीजी टिप्पणि हाथ मे लेलनि आ अपन चेहरा दहिना-बामा कयलनि। टिप्पणि खोललनि आ अपन अगुताहटि केँ दबबैत बजला—'की कष्ट? हम तँ पहिनो देखने छी।'

हमर पति कने गतिशील भेला। एहेन-एहेन अवसरि पर ओ श्रद्धाक पुतरा बनि जाइत छथि। ओ किछु बेसी सावधान भ' जाइ छथि जे जोतखीजी लग फेर कोनो गलती ने भ' जाइ। जोतखीजी पर सतही दृष्टि देलनि। पछिला खेप ओ वृहत होम-जाप करयबाक लेल कहने रहथि, जाहि मे लगधग पचास हजार धरिक खर्च हेबाक छल। एतेक पैघ रकम खर्च करबाक हमर स्थिति नहि छल। जोतखीजी केँ भरिसक मोन रहनि तँ हुनक व्यवहार कने उखड़ल-उखड़ल लागि रहल छल। हुनक सलाह नहि मानब आ बेर-बेर हुनका लग आयब से हुनका कोनादन लागि रहल छलनि मुदा हमसभ ग्रह-दोष सँ मुक्तिक कोनो सस्त उपाय ताकि रहल छलहुँ।

जोतखीजीक दृष्टि टिप्पणिक एक बिन्दु पर अटकि गेलनि। ओ अपन दुनू भौंहु केँ जोड़लनि आ सायास बाजि उठला—'मांगलिक अछि।'

हम दुनू हुनक चेहराक उठैत-खसैत भाव केँ तौलि रहल छलहुँ। यैह तँ प्रमाणित करबाक छल।

जोतखीजी अपन चेहरा ऊपर उठौलनि। छोट-छोट आँखि केँ घुच्ची बनबैत गरदनि सोझ कयलनि आ दर्प सँ बजला, 'हम प्रतिवर्ष महामृत्युंजय जाप कराबैत छी। लगधग एक लाख लागि जाइत अछि। दस बर्ख सँ करबा रहल छी आ सत्य पूछी तँ तहिया सँ हमर सम्पूर्ण परिवार बहुत सुख-शांति सँ जीवन व्यतीत क' रहल अछि।'

जोतखीजीक ओ लक्षणा हमरा भेदि देलक। हमर पति हुनका साधुवाद देलनि। ओ हुनक दर्प केँ हवा देब' लगला। बजला, 'अहाँ तँ स्वयं साधक छी तखन ने अहाँक नाम कतय सँ कतय धरि प्रशस्त अछि।' हुनका करेज मे जेना प्रसन्नताक फुकना फुला गेलनि। अपन दुनू हाथ केँ खिंचैत ओ अपन छाती फुलौलनि। परम संतोष सँ हुनक चेहरा चमकि उठलनि।

हमरो हुनक प्रशंसा मे किछु कहबाक चाही छल मुदा हम अपन हीनता पर लज्जित रही। मात्र हुनका देखैत रहलहुँ। हम पछता नहि रहल छलहुँ मुदा हमरा लागि रहल छल जे एतेक दिन कोनो तरहक यज्ञ वा होम-जाप नहि करबा नीक नहि कयलहुँ।

हमर पति हुनका प्रसन्न करैत श्रद्धाविनत स्वर मे अनुरोध कयलनि, 'हम तँ

महामृत्युंजय जप नहि करबा सकलहुँ श्रीमान। कोनो एहेन उपाय बतयबाक कृपा करू जाहि मे कम खर्च हो...बहुत रास जिम्मेवारी अछि एखन...।'

जोतखीजी किछु काल मौन रहलाह। फेर बजला, 'तँ एना करू जे अपन बेटा केँ सात रत्तीक पन्ना धारण कराउ। बड्ड जरूरी अछि।'

पन्ना! हम क्षणांशे मे दिमाग नचौलहुँ। ई तँ बहुत कीमती रत्न थिक। हमर पतिक ध्यान तुरंत शहरक रत्न व्यवसायी पर गेलनि। ओ जोतखीजी केँ ओकर नाम कहलनि आ कहलनि जे ओकरे सँ कीनि लेब। ओकर नाम सुनिते जोतखीजी चौंकि उठला।

—'के? वैह अर्जुन मरवाड़ी। नहि-नहि ओ तँ एक नम्मर के ठक अछि। एक के दस बतबैत अछि। ओकरा लग तँ एकदम्मे नहि जायब।'

—'तँ फेर?' पति कोनो अन्य उपाय, हुनका आँखि मे तकैत प्रश्न कयलनि।

जोतखीजी मेघ दिस तकलनि। किछु क्षण सोचलनि आ बजला, 'एक टा काज करू। ओहि मरवाड़ी सँ पन्नाक दाम मोलाउ। ओ की दाम लगबैत अछि, से हमरा कहू आ तकर बाद हम व्यवस्था क' देब।'

—'तँ एहि मे पुछबाक की? अहीं व्यवस्था क' दियौ।' हमर सोझमतिया पति कहलनि।

जोतखीजी एक नेना केँ संकेत सँ बजौलनि आ कहलनि, 'जाउ, सोहन केँ बजा आनू।'

सोहन हुनक अनुज रहनि जे एखन गामे रहथि। ओ कतहु बाहर रहैत छथि। आ पहुँचल रत्नविद छथि। ओ चालीस-पैंतालीस बर्खक हृष्ट-पुष्ट युवक रहथि। घुच्ची आँखि आ चनैल। देखबा मे कोनो प्रभावी व्यक्तित्व नहि। जोतखी जी ओकर प्रशंसा मे जखन अनेक वाक्य कहलनि तँ अनायास हमर हाथ अभिवादनक मुद्रा मे जुड़ि गेल। संक्षेप मे हमरा सभ केँ ज्ञात भेल जे ओ पाथर आ रत्नक प्रसिद्ध पारखी छथि आ उचित दाम पर तकर व्यवसायो करैत छथि।

जोतखीजी अपन कुरसी घुसकौलनि आ ओकरा खाली कुरसी पर बैसबाक संकेत कयलनि। फेर हमरा सभ दिस तकैत कहलनि, 'यैह छथि सोहन। हिनक परिचय तँ हम पूर्वहि द' चुकल छी।'

—'हँ-हँ।' हमसभ मुसकयलहुँ।

फेर ओ सोहन सँ पुछलनि, 'अहाँ लग पन्ना तँ हैत। की भाव छैक ओकर?'

—'हँ, अछि तँ। उत्तम वस्तु लेताह तँ पन्द्रह सँ बीस हजारक भीतर लगतनि।' सोहन विनम्रता सँ कहलनि।

—'धुर्! ई तँ भेल बिजनेसिया गप। अपन लोक लेल दाम कहू।' जोतखीजी

आजिज होइत कहलनि। हम हुनक बनावटी आजिजपना केँ पकड़ि लेलहुँ।

—'पन्द्रह सँ कम मे नहि भ' सकैत अछि। चीजो देबनि कि ने?' सोहन अड़ल छला।

जोतखीजी ओकरा हताश होइत देखलनि आ हम हुनका दिस। ई हुनक हताशा छल वा यजमान केँ विगलित क' परास्त करबाक परोक्ष आक्रमण, ई हमहीं टा अनुभव कयलहुँ।

हम सभ ठाढ़ भेलहुँ। ओ कहलनि, 'कोनो बात नहि। अहाँ चिंता नहि करू। जे लागत, जतेक लागत, हम द' देबै।'

जोतखीजी हमरा सभ केँ उठय नहि देलनि। घरक भीतर चाह लेल समाद पठौलनि। हुनक व्यवहारक आपकता बढ़ि रहल छलनि। ओ आत्मीयताक संग बजला, 'देखू, अहाँ डॉक्टर लग चिकित्सा कराब' जाइत छी आ ओकर दवाइ नहि खायब तँ बेमारी कोना ठीक हैत? वैह बात ज्योतिषो मे छैक।'

हम प्रश्नसूचक दृष्टि हुनका पर टाँगि देल। आब अगिला वाक्यखंड हुनक की हेतनि, से हमरा मानस मे पहिनहि अंकित भ' गेल। हमर पति किछु बूझि नहि सकला। ओ मुस्की केँ ठोर पर जबरदस्ती अनैत पुछलनि, 'स्पष्ट करू श्रीमान।'

—'वैह। अहाँ विश्वास तँ करैत छी मुदा जे विधि-विधान कहैत छी से नहि करबैत छी। तखन फायदा कोना हैत? हमर मानू तँ कमे खर्च मे, राहूक जाप अवश्ये करबा लिय'।'

हम ई सोचबा लेल विवश छलहुँ जे राहुक जापक बिना पन्ना निष्प्रभावी अछि कियैक तँ जोतखीजी पन्ना केँ छोड़' नहि चाहैत रहथि।

हमर पति जोतखीजी सँ समझौता क' लेलनि। बेटाक मंगलकामनाक लेल टाका-पैसा की देखल जाय। ओ हठात उठला आ संतुष्ट होइत कहलनि—'अहाँ जतेक कहब, हम पठा देब। अपन बैंकक खाता नंबर द' दिअ'।'

जोतखीजी आश्वस्त भेला। विजयी भाव सँ उठलाह आ आशीर्वाद दैत हमरा सभ केँ विदा कयलनि।

घुरती मे हम एहि सृष्टिक विलक्षण उपहार सब दिस तकबो नहि कयलहुँ। सोझ बाटे मात्र शून्य केँ तकैत रहलहुँ। अपन चिंता आ परेशानी सभ पर मगजमारी करैत रहलहुँ। जोतखी-बंधुक चेहराक एक-एक भंगिमा मोन पाड़ैत घर अयलहुँ।

एक सज्जन पहिने सँ घर मे विराजमान रहथि। अपने निकटतम संबंधी। गप्पक क्रम मे पन्नाक मूल्य ओहो जनलनि। ओ चौंकि क' अपन दहिना पयर पटकलनि। गंभीर अफसोच सँ बजला—'कत' कत' फँसि जाइत छी अहूँ।' फेर कुरसी पर माथ टेकैत नमहर साँस लेलनि आ मंत्र जापक ध्वनि मे आवेश प्रकट कयलनि, 'गजब

जमाना छै। जकरा पर विश्वास करू, सैह पॉकेटमार। कहू, पाँच हजारक पन्नाक दाम पन्द्रह सँ बीस हजार कहलक अहाँ केँ। ई तँ हद भ' गेल।'

हम चुप रही। क्यो घाओ पर प्रेमपूर्वक मलहम लगा रहल छल। लागल जेना किछु आराम भेल हो। फेर ओ अपन हाथ हिनका दिस बढ़ौलनि। आँगुर सभ मे अनेक रत्न जगमग करैत रहनि। एक-एक के दाम बतबैत ओ अपन अकिल आ रत्नक गुणक बखान क' रहल छलाह। फेर शब्द केँ विराम दैत ओ अपन गरदनि हिनका दिस झुकौलक आ रहस्यमय ढंग सँ जोतखी-पंडितक पोल खोलय लगला—'भइया, पाथर हिनका सभ सँ एकदम्मे नहि कीनू। ई सभ अदहा कमीशन ल' क' सभ केँ धोखा दैत अछि।'

हम तँ जेना सहमतिक लेल तैयारे भेल बैसल रही।

'तँ फेर कतय सँ ली?' पति थाकल स्वर मे कहलनि।

'लिय' आब कथीक चिंता—अपन तरहथ धीरे सँ टेबुल पर पटकैत ओ मजाकक स्वर मे कहलनि—हमरा रहैत चिंता करबाक कोन प्रयोजन? काल्हि पाथर अहाँ लग आबि जायत। करीब एक सय आदमी केँ वाजिब दाम मे दिआ चुकल छी। जतेक नीक क' सकैत छी, करैत छी। आगाँ भगवानक मरजी...।'

हम दुनू हुनक गप्प सँ बेस संतुष्ट भेलहुँ। भगवान कोनो ने कोनो उपाय कइये दैत छथिन। हम सोचलहुँ।

—'काल्हि भोर पन्ना अहाँ केँ भेटि जायत। पाँच हजारक व्यवस्था क' क' राखब।' कहैत ओ सज्जन आत्मविश्वासक संग उठि विदा भेला।

दोसर दिन ठीके एक दुब्बर-पातर क्षीणकाय सरदारजी हुनका संगे पहुँचल। पैघ सन बैग मे भिन्न-भिन्न औंठीक नाप आ रंग-बिरंगक पाथर लेने ओ सीधा आबि सोफा पर बैसि गेला। ओहि सरदारक किछु कहबा सँ पहिने ओ सज्जन हमरा पति केँ ओकरा सँ हाथ देखयबाक लेल कहलनि। ओ सरदारजी हुनक हाथ देखलनि, तरहथक प्रत्येक रेखा केँ ओ अपन आँगुर सँ स्पर्श करैत गंभीर मुद्रा मे मूँगा पहिरबाक सुझाओ द' देलनि।

हमर माथ ठनकल। आब हिनको रेखा मे दोष बहरा गेल छल। मूँगा तँ कीमती रत्न थिक। एकठाम दाम अदाय नहि क' सकैत छी, ई दोसर कतय सँ आओत? सज्जन पर मोने मोन बड़ तामस उठल। हिनका एतबो ज्ञान नहि छनि जे ई व्यवसायी सरदारजी हाथक रेखा केँ की बूझत? मुदा हम चुप्पे रहलहुँ। सज्जन मूँगा लेबा पर किछु बेसीये जोर द' रहल छलाह। हमर पति दुनू व्यापारीक वार्तालाप मे सहमति सँ हाथ बन्हने ठाढ़ रहथि। मूँगाक सौदा सेहो तय भ' गेल छल। पाँच हजार मे पन्ना आ बहुत मोल-भाव करैत चारि हजार मे मूँगा देबाक लेल ओ सज्जन सरदारजी

केँ तैयार क' लेने रहथि। हम अवाक्। पति दिस तकलहुँ। पचास हजारक एक टा एफ. डी. बेटीक नामे करौने छथि। भरिसक महाशय ओहि पर आक्रमण करताह।

सज्जन केँ एतबो पर संतोष नहि भेलनि। आब ओ हमरा दिस तकलनि। हम चाहक कप लेने ठाढ़ रही। ओ हमरो हाथ देखयबाक लेल उकसौलनि। हम मने-मने भड़कि गेलहुँ। ई सभ हमर कमजोर नस केँ पकड़ि लेलक अछि। ज्योतिष पर विश्वास करबाक ई अर्थ तँ नहि जे जकरा-तकरा सँ हाथ देखौने चली। मुदा हुनक जिदक आगाँ हम मना नहि क' सकलहुँ आ अपन हाथ पसारि देल। वैह हेबाक छल। हमरो ओ मूँगा पहिरबाक सुझाओ देलक। राहू, केतु, शनि हमरा पर सवार छला। तकरा सभक शमन लेल रत्न पहिरब जरूरी छल।

सरदारजी गंभीर दृष्टिएँ हमरा ऊपर सँ नीचाँ धरि देखलक आ चेतौनी देलक जे मूँगा धारण नहि कयला सँ स्वास्थ्यक संग-संग तमाम अर्जित यश-प्रतिष्ठा खतम भ' जाएत। हम थोड़ेक सहज भेलहुँ। स्वास्थ्यक चिंता छलहे नहि। यश आ प्रतिष्ठाक कोनो नेत्ररंजक महल एखनधरि ठाढ़े नहि भेल तँ फेर ओकर खतम हेबाक बाते कोन। सरदारजीक झूठ आ सज्जनक दृढ़ता पर क्षोभ भेल। हम चुप्पे कोठली मे चलि अयलहुँ। ई तमाम घटना हमरा भीतरे-भीतर आंदोलित क' देने रहय। हम सोचि लेने रही जे अपना लेल हमरा किछु नहि लेबाक अछि। पहिनो फँसि चुकल छी एक टा बनियाँक जाल मे।

एहिना एक बेर हमर पति कोनो पाथरक खरीदारी मे एक टा व्यवसायीक दोकान पर गेल रहथि। हमहूँ संग रही। पाथरक मोल-भाव करैत ओ व्यवसायी बेर-बेर हमरा दिस ताकि रहल छल। अंत मे, हमरा पति केँ विश्वास मे लैत ओ चिंता प्रकट केलक, 'अहाँक पत्नी किछु असामान्य लगैत छथि। हम हुनक हाथ देखि सकैत छी?'

पति उत्सुक भेलाह। फेर ओ ततेक जिद कयलनि जे हमरा हाथ देखाबहि पड़ल। आ आनन-फानन मे लहसुनियाँ, जमुनियाँ आ नहि जानि कोन-कोन पाथर हमरा आँगुरक शोभा बढ़ब' लागल। सभ बेकार।

आइ ओ घटना मोन पड़ल। हम मूँगा लेबा सँ साफे मना क' देलहुँ। सज्जन केँ ई नीक नहि लगलनि।

किछु जीतल, किछु हारल दुनू उठि गेला। सज्जनक कृपा सँ बीस हजारक पन्ना पाँच हजार मे हाथ मे आबि गेल। एहि गप्प सँ पति प्रसन्न छलाह। ओ पाँच हजार टाका निकालि क' आनय कहलनि। हम यंत्रवत् ओ टाका हुनका थम्हा देल। फेर हम भनसाघर गेलहुँ। पति कोठलीक भीतर चलि गेलाह।

सीढ़ी सँ उतरैत ओहि दुनू व्यक्तिक गप हम सुनैत रहि गेलहुँ। सरदारजी ओहि

सज्जन सँ ओहि पाथरक पाइ माँगि रहल छल जे अनेक मास पूर्व हुनका उधार देने रहय। सज्जन कठोर शब्द मे ओकरा डाँटलक, 'की बात करै छी दोस। कोन पाइ माँगि रहल छी? दू हजारक नकली पाथर पाँच हजार मे बेचबा देलहुँ, ओहि मे हमर कमीशन कतय गेल?'

हम सन्न रहि गेलहुँ। हमरा अंदाज तँ पहिने सँ छल, मुदा जानि-बूझि क' खधारि मे खसैत अपन पति केँ हम बचा नहि सकलहुँ।

टेबुल पर राखल मोबाइल घनघना रहल छल, 'जोतखीक फोन हैत...।' ओ कहलनि आ फोन रिसीव कयलनि।

ओम्हर सँ स्वर आयल, 'हमर बैंकक खाता नंबर लिखू...।'

अंतिका, जनवरी-दिसंबर, 2017

•••

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
गाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ 275/-

ISBN 978-93-91925-06-2
9789391925062